

MAGAZINE COMMITTEE







ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।





SHIVAJI COLLEGE

Raja Garden, New Delhi-110027 shivajicollege.ac@gmail.com www.shivajicollege.ac.in

Magazine Committee

Dr. Neena Khanna (Convenor)
Ms. Siamlianvung Hangzo
Dr. Vikas Sharma
Ms. Ritu Madan
Dr. Sukhram Arya
Dr. Kanchan
Dr. Tarun
Dr. Pooja Saluja
Dr. Shilpa Jain
Dr. Ritu Mishra
Ms. Rekha
Dr. Sonal

Student Editorial Board

ENGLISH

Veer Vikram Singh Course- B.A. (Programme) 6th semester, 3rd year

Aniket Kumar Jha

Course- B.A. (Hon.) English, 2nd semester, 1st year.

Hindi

Prithvi Kumar

Course-B.A (Hons.) Hindi, 6th semester, 3rd year

Abhinav Kumar

Course-B.A (Hons.) Hindi, 6th semester, 3rd year

Sanskrit

Azad Singh

Course-B.A (Hons.) Sanskrit, 6th semester, 3rd year

Sanjana

Course-B.A (Hons.) Sanskrit, 4th semester, 2nd year

Cover Design by Neha Sengar, B.Sc. (H) Chemistry IV Semester, 2nd Year

🔌 प्राचार्या की कलम से...🤏



प्रिय पाठकों,

नवचेतना, उल्लास और उमंग से भरपूर पत्रिका 'शिवराज' कॉलेज की साहित्यिक—सांस्कृतिक गतिविधियों का जीवन दर्पण है। शिवाजी कॉलेज के प्रांगण को गतिशील और प्राणवान बनाने वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा का मापदंड है ''शिवराज''। पत्रिका में विद्यार्थियों के साथ—साथ प्राध्यापकों को भी आडम्बर शून्य अभिव्यक्ति का अवसर मिला है।

शिवाजी कॉलेज का आदर्श वाक्य है 'अमृतं तु विद्या' अर्थात् ज्ञान शाश्वत् है। ज्ञान और सात्त्विक मूल्यों को प्रदान करने की भावना को लिए शिवाजी कॉलेज निरंतर प्रगतिशील है। कॉलेज सुदृढ़ कदमों से विकास के एक—एक सोपान का स्पर्श करें, 'शिवराज' में विद्यार्थियों के स्वप्न यूं ही साकार होते रहे, विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और आत्म—विश्वास में निरन्तर वृद्धि होती रहे, यही मेरी शुभकामनाएँ हैं।

'शिवराज' से संबद्ध सभी विद्यार्थी एवं प्राध्यापक जिन्होंने इसका सिंचन और पल्लवन किया है, बधाई के पात्र है। हे ईश्वर (हमको) असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर, और मृत्यु से अमरता की ओर अग्रसर करें।

> असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय।।

> > **डॉ. शशि निझावन** प्राचार्या शिवाजी कॉलेज



कॉलेज की पत्रिका 'शिवराज' के इस अंक में काम करना मेरे लिए अविस्मरणीय अनुभव रहा। 'शिवराज' पत्रिका शिवाजी कॉलेज की जीवंतता और प्रतिभाओं की गौरवमय उदाहरण है। छात्र—छात्राओं की रचनात्मकता का प्रतिबिंब प्रस्तुत करती 'शिवराज' इस वर्ष भी ताज़गी, नवीनता ओर सार्थकता को लिए आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। शिवाजी कॉलेज के विविध रंगों, गतिविधियों, आयोजनों, चित्रों, बहुमुखी प्रतिभाओं और प्रासंगिक विषयों को समेटे 'शिवराज' की इस यात्रा के आप सब साक्षी हैं।

इस रचना के वास्तुकार सभी विद्यार्थी बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने इसके सृजन में अपना विशेष योगदान दिया। संपादक मंडल के सभी सदस्यों का धन्यवाद जिन्होंने अपने अथक परिश्रम से इस कार्य को सफल बनाया। कॉलेज प्राचार्या डॉ. शिश निझावन के प्रति हार्दिक आभार जिनके प्रेरणादायक शब्दों ने सदा हमारा मार्ग दर्शन एवं उत्साहवर्द्धन किया।

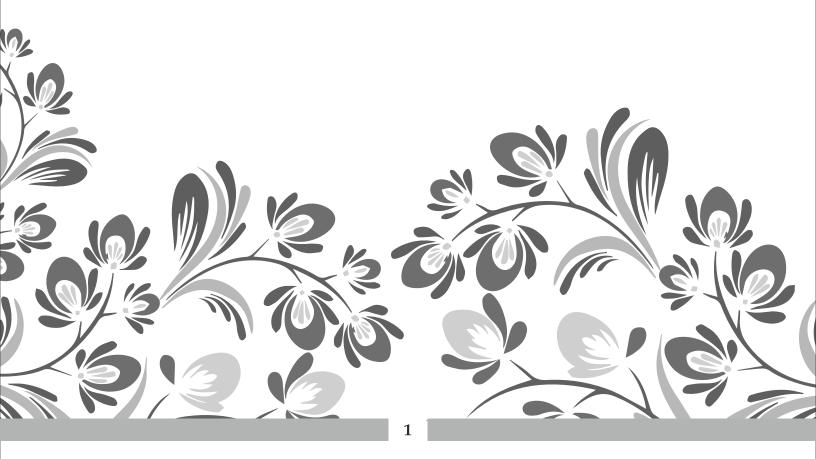
सभी विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ

हम सब एक साथ चले, एक साथ बोले, हमारे मन एक हो। संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

> **डॉ. नीना खन्ना** संयोजिका, पत्रिका समिति 'शिवराज'



संस्कृतिवभागः

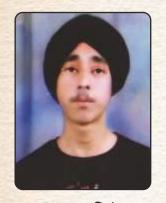






॰ अनुक्रमणिका ॰

क्र.सं.	विषय	लेखिका/लेखक	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीयम्	अजाद सिंह: / संजना	3
2.	प्रकृति शिक्षयति	संजना	4
3.	चाणक्यनीतिवचनानि चाणक्यनीतिवचनानि	रंजीत:	4
4.	नारीशिक्षाया: महत्त्वम्	दुर्गेश गौतमः	5
5.	परोपकार:	रंजीत:	5
6.	संस्कृतभाषाया: महत्त्वम्	अजाद सिंह:	6
7.	दानम्	पूजा राय:	6
8.	बकस्य प्रतीकारः	पूजा राय:	6
9.	देहि मेधा सरस्वती	प्रियंका	6
10.	गीताया: महत्त्वम्	कंवरजीत:	7
11.	कालिदासस्य जीवनदर्शनम्	सुषमा	8
12.	स्वच्छ भारत अभियानम्	राहुल मण्डल:	9
12.	विद्यार्थी लक्षणम्	राहुल मण्डल:	9
14.	जीवनस्य किम् ?	अजाद सिंह:	9
15.	संस्कृतं पठामः, संस्कृतेन आचरामः	आशीष भारद्वाज:	10
16.	को नाम धर्मः	धर्मवीर आर्य:	10
17.	अस्माकं देश:	राहुल:	11
18.	पुस्तकम्	अजाद सिंह:	11
19.	संस्कृतश्लोका:	राहुल:	11
20.	नैव क्लिष्टा न च कठिना	कमल शर्माः	12
21.	गुरू-मित्र-विद्यार्थीलक्षणानि	निखिल पाराशर:	12
22.	नीतिवचनानि	अजाद सिंह:	13
23.	सुभाषितम्	प्रियंका	13
24.	संस्कृतं पठनेन लाभः	प्रियंका	13
25.	महाकविकालिदास:	अजाद सिंह:	14
26.	संस्कृताध्ययनस्य उपयोगिता	जगमोहन कुमार:	14
27.	भाषाणां जननी संस्कृतभाषा	संजना	15
28.	अनुशासनम्	कंवरजीत:	15
29.	भारतीया संस्कृति:	प्रद्युम्न:	16
30.	मनोकामना	प्रियंका	16
31.	विद्याधनम् सर्वधनप्रधानम्	अंकित:	16
32.	सर्वेभ्यः शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम्	कमल शर्मा	17
33.	आमुखपटले सुविचार्य चित्राणि	कमल शर्मा	17
34.	अनुशासनस्य महत्त्वम्	दुर्गेश गौतमः	17
35.	गुरो: महत्त्वम्	ज. कवरजीत ः	18
36.	अस्माकं किम् कर्त्तव्यम्	अजाद सिंह:	19
37.	मानवधर्म:	राहुल:	19
38.	ध्येयवाक्यानि	राहुल मण्डल:	19
39.	वेदामृतम्	पूजा राय:	20
40.	वृक्षाः	राहल:	20



सम्पादकीयम्



संजना

अजाद सिंहः

भवत्पुरस्तात् महाविद्यालस्य वार्षिकी ''शिवराज'' नाम्नीं पत्रिकां स्थापयन्तः अपारानन्दम् अनुभवामः। आवर्षं महाविद्यालये सम्पादितानां कार्यक्रमाणाम् उल्लेखने सह विविधविषयस्थितरचनाभिः परिपूर्णेयं पत्रिका सर्वेभ्यः रोचते इति।

पत्रिकायाम् अस्मिन् विभागे संस्कृतस्य आधुनिकपारम्परिकविषयाणां विविधलेखाः विद्यार्थिभिः लिखिताः यदस्माभिः यथाशिक्ति छात्राभिरूच्यनुगुणं चेतुं प्रयासः कृतः, आशास्महेइदं भवत्सु ज्ञानमभिवर्धयिष्यति।

अन्तिमे सम्पादकैः सह प्राचार्या महोदयान् अस्माकं विभागस्य अध्यापकान् छात्रान् च धन्यवादं ज्ञापयित्वा पत्रिकायाः सफलतां कामयामहे।

अजाद सिंहः बी.ए. (विशेष) संस्कृतं तृतीय वर्षम्

संजना बी.ए. (विशेष) संस्कृतं द्वितीय वर्षम्

प्रकृति शिक्षयति

पिबन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः। नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः परोपकाराय सतां विभृतयः।।

नादियाँ अपना पानी खुद नही पीती, वृक्ष अपने फल खुद नही खाते, बादलों द्वारा कि गई वर्षा से पृथ्वी में उत्पन्न अनाज का भोग वह स्वयं नहीं करते। मानव जीवन परोपकार के लिए ही होता है। इसलिए हमे सदैव परोपकार करना चाहिए।



बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्





अर्थशास्त्रस्य प्रणेता कौटिल्यः अपरः नामः चाणक्यः, विष्णुगुप्तः, मल्लनागः, पाक्षिलः इत्यादयः अस्ति। अस्यः (चाणक्य) पितृ: नाम: चणक: अस्ति। चाणकस्य काल: चतुर्थ: ई.प्. शताब्दी प्राप्नोति। आचार्यकौटिल्यः चन्द्रगुप्तमौर्यस्य मंत्री: अस्ति। आचार्य कौटिल्यः अर्थशास्त्रस्य विश्वप्रख्यातः विद्वानः अस्ति।



कालः पचित भूतानि कालः संहरते प्रजाः। कालः सुप्तेषु जागर्ति काले हि दुरतिक्रमः।।

अर्थात् - काल सभी जीवो को निपुणता प्रदान करता है। वही सभी जीवों का संहार भी करता है। जब सब सो जाते है वह (काल) जागता रहता है। काल को कोई जीत नहीं सकता।

एकोऽपि गुणवान्पुत्रो निगुणैक्ष्व शतैर्वरः। एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारा सहस्त्रशः।।

अर्थात् - एक भी गुणी पुत्र सैकड़ो गुणरहित पुत्रों से श्रेष्ठ है जैसे एक ही चंद्र अंधकार को दूर कर देता है, परंतु सहस्त्र तारे नहीं।

कामधेनुगुणा विद्या व्यकाले फलदायिनी। प्रवासे मातृसदृशी विद्यागुप्तं धनं समृतम्।।

अर्थात् - विद्या में कामधेनु के समान गुण है जिस कारण विद्या अकाल में फल देती है। विद्या विदेश में माता के समान है विद्या को गुप्त धन कहते है।

सा भार्या या प्रियं ब्रूते स पुत्रो यत्र निर्वृत्ति:। स भृत्यो यस्तु चित्तज्ञस्तद् बीजं यत् प्ररोहति।।

अर्थात् - पत्नी वही कहलाने योग्य है जो प्रिय बात कहती है, पुत्र वही कहलाता है जो आनंद प्रदान करे। सेवक वही श्रेष्ठ है जो मन का भाव जानता है और बीज वही श्रेष्ठ है जो अंकुरित होता है।

रंजीत:

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्



नारीशिक्षायाः महत्त्वम्

अस्माकं समाजः न केवल पुरूषाणां, किन्तु नारीणामिप अस्ति। अतः सुसंस्कृते समाजे यथा पुरूषाणां शिक्षा आवश्यकी अस्ति तथा स्त्रीणामि। समाजे स्त्रीणाम् स्थानं समानरूपेणास्ति। तौ समाजरथस्य द्वे चक्रे स्तः। यथा एकेन चक्रेण रथस्य गितः असंभवाः तथा जीवनस्य गित नारिणां बिना असंभवा। अशिक्षिता नारी संसाररथं कथं चालयित। अतः स्त्रीशिक्षा अत्यावश्यं अस्ति। प्राचीनकालेऽिप स्त्रीशिक्षा अनिवार्या आसीत्। वैदिककाले नार्यः शिक्षिताः आसन्। गार्गी मैत्रेयी आद्याः विदुष्यः वेदशास्त्रार्थनिपुणाः आसन्। कालिदासस्यपत्नी विद्योत्तमा महती विदुषी आसीत्। आधुनिककाले स्त्रियः शिक्षणमिनर्वायम्। यदि माता सुशिक्षिता भवेत तिर्हं सा स्वबालकानां पालनं शिक्षणम च सुचारुरूपेण कर्तुं शक्नोति। यदि सा अशिक्षिता तिर्हं तस्याः सन्तानमिप विद्याहीना संस्कारहीना च भविष्यति। शिक्षिता नारी अधिकयोग्यतया गृहकार्यसंचालने समर्थाः भवित।

कुलस्य समाजस्य वा उन्नत्यर्थं स्त्रीशिक्षा अनिवार्याः खलु। यतः शिक्षिता नारी न केवलं स्वजीवनं सफलीकरोति, किन्तु सा परिवारस्य राष्ट्रस्यापि अभ्युदयं करोति। सुशिक्षिता नारी सर्वत्र पूज्यते। उचितामिदं कथितं–यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।

दुर्गेश गौतमः

बी.ए.(विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्



परोपकार:

नि:स्वार्थभावेन हित साधनमेव परोपकार: इत्युच्यते। सामान्यतया सांसारिका: जना: स्वार्थरता एव दृश्यन्ते। ते न दर्शयन्ति कामप्यभिरुचिं परेमाषं उपकरणे। परन्तु सतां स्वसम्पत्त्या: सदैव दीनानां पीडितानां च जनानां उपकारायैव कुर्वन्ति।

परोपकाररताः जनाः सदैव उदारहृदया भवन्ति अपि समाजस्य च सर्वदा हितं कुर्वन्तिवस्तुतः समस्तापि प्रकृतिः अपि परोपकार परायणा भवति। मेघाः प्राणिनां वनस्पतीनां च उपकारायैव सागरस्य क्षारं जलम् आदाय तच्च मधुरं कृत्वा वर्षन्ति। वृक्षाः परोपकारायैव फलन्ति। नद्यः स्वकीयं जलं स्वयं न पिबन्ति प्रत्युत परेषां हितायैव प्रवहन्ति। गावो महिष्यश्च स्वकीयेन दुग्धेन परानेव पोषयन्ति एवम् उपदिश्ति प्रकृतिः मानवान् यत् तैरिप परोपकाररतैः भवितव्यं। अतएव

नीतिनिपुणाः कथयन्ते-

'स्वयं न खादन्ति फलानि वृक्षाः पिबन्ति नाम्भः स्वयमेव नद्यः। विभाति काव्यः करुणापराणां परोपकारेण न तु चन्दनेन।।

रंजीतः

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्





संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

सम्यक् परिष्कृतं शुद्धमर्थाद् दोषरिहतं व्याकरणेन संस्कारितं वा यत्तदेव संस्कृतम्। एवञ्च सम्-उपसर्गपूर्वकात् कृधातोर्निष्पन्नोऽयं शब्द संस्कृतभाषेति नाम्ना सम्बोध्यते। सैव देवभाषा गीर्वागित्या–दिमिर्नामिभि: कथ्यते।

इयमेव भाषा सर्वासां भारतीयभाषाणां जननी, भारतीयसंस्कृतेः प्राणस्वरूपा भारतीयधर्मदर्शनादिकानां प्रसारिका, सर्वास्विप विश्वभाषासु प्राचीनतमा सर्वमान्या च मन्यते। अस्माकं समस्तमिप प्राचीनं साहित्यं संस्कृतभाषायामेव रचितमस्ति, समस्तमिप वैदिक साहित्यं रामायणं, महाभारतं पुराणानि दर्शनग्रन्थाः स्मृतिग्रन्थाः काव्यानि नाटकानि गद्य-नीति आख्यानग्रन्थाश्च अस्यामेव भाषायां लिखिताः प्राप्यन्ते।

गणितं, ज्योतिषं, काव्यशास्त्रमायुर्वेदः, अर्थशास्त्रं, राजनीतिशास्त्रं, छन्दशास्त्रं, ज्ञान विज्ञानं तत्वजातमस्यामेव संस्कृतभाषायां समुपलभ्यते। अनेन संस्कृतभाषायाः विपुलं गौरवं स्वयमेव सिध्यति।

आजाद सिंहः

बी.ए. (आनर्स) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



दानम्

सुभगङगरणं दानम्।

दान मनुष्य को सौभाग्यशाली बनाता है।

दानेन भोगानाप्नोति।

दान करने के फलस्वरूप मनुष्य भोग प्राप्त करता है।

यो भगतामोदनं ददाति स स्वर्गलोकं गच्छति। यो भवतामोदनं दास्यति स स्वर्गलोकं गमिष्यति।।

जो आप लोगों मे से ओदन (भात) का दान करेगा वह स्वर्गलोक जाएगा। भाव यह है कि भूखे को अन्न दान करने वाला स्वर्ग पाता है।

पूजा रायः

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्

बकस्य प्रतीकारः

एकस्मिन् वने शृगालः बकः च निवसतः स्म। तयोः मित्रता आसीत्। एकदा प्रातः शृगालः बकम् अवदत्-मित्र! श्वः त्वं मया सह भोजनं कुरू। शृगालस्य निमन्त्रणेन बक: प्रसन्न: अभवत्। अग्रिमे दिने सः भोजनाय शृगालस्य निवासं गच्छति। कुटिलस्वभावः शृगाल: स्थाल्यां बकाय क्षीरोदनं यच्छति बकं वदति च-मित्र! अस्मिन् पात्रे आवाम् अधुना सहैव खादाव:। भोजनकाले बकस्य चञ्चु: स्थालीत: भोजनग्रहणे समर्थ न भवति। अत: बक: केवल क्षीरोदनं पश्यित। शृगाल: तु सर्वं क्षीरोदनम् अभक्षयत्। शृगालेन वञ्चितः बकः अचिन्तयत्-यथा अनेन मया सह व्यवहारः कृतः तथा अहम् अपि तेन सह व्यवहरिष्यामि:। एवं चिन्तयित्वा स: शृगालम् अवदत्-मित्र! त्वम् अपि श्वः सायं मया सह भोजनं करिष्यसि। बकस्य प्रसन्नः अभवत्। यदा शृगालः सायं बकस्य निवासं भोजनाय गच्छति तदा बक: सुङ्कीर्णमुखे कलशे क्षीरोदनं यच्छति, शृगाल च वदति-मित्र। आवाम् अस्मिन् पात्रे सहैव भोजनं कुर्वः। बकः कलशात् चञ्चवा क्षीरोदनं खादति। परन्तु शृगालस्य मुख कलशे न प्रविशति। अतः बकः सर्वं क्षीरोदनं खादति। शुगालः च केवलम् ईर्ष्यया पश्यति। शृगालं बकं प्रति यादृशं व्यवहारम् अकरोत बक: अपि शृगालं प्रति तादृश व्यवहारम् कृत्वा प्रतीकारम् अकरोत्।

पूजा रायः

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



देहि मेधा सरस्वती

मेधां देहि सरस्वित मात: वन्दामहे चरणम् मुग्धां भावकन्दिलता बाला यामोज्ञनेश शरणत्। वेदशास्त्रं सकलागम-पूजिते। विमसं कुक नो हृदयम् काव्य-नृत्य सङ्गीत कलाविदे। तव पद निरता वयम् वीणा-पुस्तक-माला-धारिणी। रसनाया: वस सततम् भेदभाव-कल्मष-रहितं तनु।

प्रियंका

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्

शिवराज



गीतायाः महत्त्वम्

श्रीमद्भगवत्गीता महान् पिवत्रः ग्रन्थः अस्ति। अस्मिन् दिव्ये ग्रन्थे वेदानां सार लिखितः। द्वितीये अध्याये लिखितम् यत् आत्मा अजरः अमरः च अस्ति। आत्मानं शस्त्राणि न छिन्दन्ति आत्मानं पावकः दग्धुं न समर्थ आपः अपि आत्मानं न क्लेदयन्ति मारुतः अपि आत्मानं न शोषयितुं समर्थः।

श्री मद्भगवत्-गीतायाः विभिन्नेषु अध्यायेषु वर्णितम् यत् केनचित् अपि प्रकारेण कर्मणः त्यागः न कर्त्तव्यः। मानवैः सदा कर्म करणीयम्। अग्रे कथितम् यत् अस्माभि सर्वदा इन्द्रियाणि स्ववशे कर्तव्यानि।

गीतायां निष्कामकर्मयोगस्य महत्त्वम् दिव्यरूपेण वर्णितम्। वयम् कदापि फलस्य आशां न कुर्यामि कर्मकरणम् अस्माकम् परं कर्तव्यम् अस्ति।

गीतायां मनोहररूपेण भगवता श्रीकृष्णेन कथितम् यत् मानवैः जये पराजये लाभे-अलाभे च समानभावः धारणीयं अस्य पवित्रग्रन्थस्य दशमे अध्याये भगवान् श्रीकृष्णः अर्जुनम् उपदिशति यत् अहं सर्वेषां जनानां हृदये वसामि। भगवान् श्रीकृष्णः अर्जुनम् उपदिशति यत् दिव्यविभूतिनाम् अन्तः नास्ति।

अग्रे वासुदेव: गोविन्द: परमिपता परमात्मा भगवान् कृष्ण: दिव्यरूपेण कथयित यत् श्रद्धाया: भाव: सात्विक:, राजस: तामस: च त्रयाणाम् प्रकाराणाम् भवित । यज्ञ: अपि सात्विक: राजस: तामस: त्रयाणाम् प्रकाराणाम् भवित ।

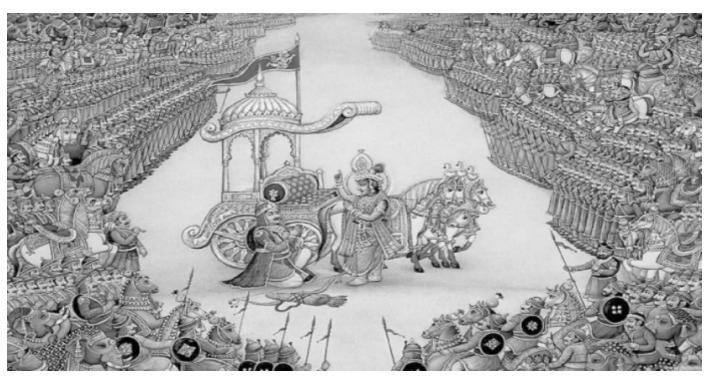
यदि वयम् सात्विकं भोजनं खादामः तर्हि अस्माकं विचाराः अपि सात्विका भविष्यन्ति। यदि वयम् तामसिकं भोजनम् खादिष्यामः तर्हि विचाराः अपि तामसी भविष्यन्ति।

गीतायाम् भगवान् श्रीकृष्णः उपदिशति यत् यद् दानं सात्विकभावेन दीयते तस्य फलम् अपि सात्विकः भवति। यत् दान फलस्य भावनया दीयते तस्य फलम् अपि निष्फलम् भवति।

यदि नरः स्वकल्याणम् इच्छिति तिर्हि तेन गीता अवश्यमेव पठनीया। गीतायाः पठनेन मानवस्य नैतिकं आध्यात्मिकं विकासं च भवति। गीतायाः पठनेन हृदये आनन्दस्य प्रकाशः भवति। अस्य ग्रन्थस्य पठनेन हृदये दिव्यभावानाम् विकासम् भवति।

गीताया पठनेन नरः सर्वाणि दुखानि सोढुं समर्थः अतः अस्माकम् परं कर्तव्यम् अस्ति यत् अस्माभिः गीतायाः उपदेशाः अनुसरणीया पालनीयाः च।

कंवरजीतः बी.ए. (आनर्स) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



शिवराज



कालिदासस्य जीवनदर्शनम्

कालिदासो हि परम्परामर्मज्ञो भारतीय आसीद्, यो हि सनातने धर्मे मनागपि परिवर्तनं वा पेक्षणं नैव सहते। तेनैव सोऽभिज्ञान– शाकुन्तलस्य मङ्गलाचरणपद्ये बौद्धसम्मतिनिरिश्वादिनरासाय प्रत्यक्षाभि: प्रपन्नस्तनुभि: इति कथयति। स हि त्रयीसम्मत चातुर्वण्यं चातुराश्रम्यञ्चेत्थं समर्थयति

> शैशवेऽश्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्। वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्।। मुनिवनतरुच्छायां देव्या तथा सह शिश्रिये। गलितवयसामिक्ष्वाकुणामिदं हि कुलव्रतम्।। नहि सति कुलधुर्ये सूर्यवंश्या गृहाय।

तदनुसारेण पुरुषार्थचतुष्टयसिद्धिरेव जीवनस्य लक्ष्यम्। तत्रापि अर्थकामाभ्यां धर्मपरकाभ्यां भाष्यं यतो मोक्षसिद्धिः सम्पद्यते। तेनैव तस्य दुष्यन्तः प्रथमं विप्रकन्या मत्वा शकुन्तलाया नैव बद्धस्पृहो भवति। प्रासादागताञ्च तां धर्मोल्लङघनभयेनैव निराप्रियते न तु कामचारेण। कुशस्तु स्पष्टमेव कथयति–

'आचक्ष्व मत्वा वशिनां रघूणां मनः परस्त्रीविमुखप्रवृति''

स हि कविरात्मवादी। तस्यात्मविश्वासो हि यत्र तत्र प्रस्फुटितो दृश्यते। तस्य दुष्यन्त उद्धोषयति–

> सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः।

तथैव शम्भुनोपेक्षिताऽपि पार्वती-

इयेष सा कर्तुमबन्ध्यरूपतां समाधिमास्थाय तयोभिरात्मनः। अवाप्यते वा कथमन्यथा द्वयं तथाविधं प्रेम पतिश्च तादृशः।।

उपायेनाशक्यं न किमपि सम्भवतीति तस्य प्रबलो सिद्धान्तः। तस्य हि सर्वाण्यपि पात्राणि तथैवाचरन्ति। स हि मर्यादाकविः। स्वसम्मतां मर्यादां स कदापि नैवोल्लङ्घयति। तस्य हि मर्यादोल्लङ्घनमपि मर्यादास्थापनायैव भवति। यथोक्तम्-

नृपते: प्रतिसिद्धमेव तत् कृतवान् पङ्क्तिरथो विलङघ्य यद्। उपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतवन्तोऽपि रजोनिमीलिता:।।

स हि परमार्थतो माहेश्वर: सम्मत:। स प्राय: सर्वास्वेव कृतिषु महेश्वरमीष्टदेवत्नेव स्तौति। किन्तु नैतावतेतिच्चन्तनीयं यत्सोऽन्यदेवेषु न तथा बद्धादर इति। स तु देव त्रयस्यैकान्तैक्यं समर्थयित, यथा मङ्गलपद्ये शिव: कुमारसम्भवे, रघुवंशे विष्णुश्च स्तुता: सन्ति। प्रत्यभिज्ञावादी स साङ्ख्ययोगाविप तथैवाद्रियते। वेदेषु परमश्रद्धा, पुनर्जन्मवाद:, ईश्वरस्य जगत्प्रणेतृत्वञ्च कालिदास्य जीवनदर्शनम् काचित्पक्षा: स हि सन्दिशति–

त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्। यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्।।

> सुषमा बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्





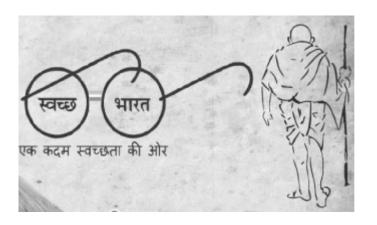
स्वच्छ भारत अभियानम्

स्वच्छभारताभियानम् इत्याख्यं महाभियानं भारतगणराज्यस्य प्रधानमन्त्रिणा नरेन्द्र मोदी महाभागेन उद्द्योषितम्। 2014 तमे वर्षे अप्रैल-मासस्य द्वितीय दिनाङ्के (2/10/2014) भारत-गणराज्यस्य पूर्वप्रधानमन्त्रिणाः लाल बहादुर शास्त्री-महोदयस्य, राष्ट्रपितुः महात्मनः च जन्मदिवसत्वेन आभारतम् उत्सवः आचर्यते। तयोः महापुरुषयोः संस्मरणार्थं दिने तस्य स्वच्छभारताभियानस्य आरम्भः अभवत्।

2014 इत्यस्य वर्षस्य अगस्त-मासस्य पञ्चदशे दिनाङके (15/8/2014) स्वतन्त्रतादिवसपर्वाणी भारतगणराज्यस्य प्रधानमन्त्रिण नरेन्द्र मोदी-महाभागेन उद्घोषणा यत् स्वच्छभारताभियानं (2/10) दिनाङ्कात् महात्मनः गान्धिनंः जन्मदिवसात् आरप्सते इति। (2014) तमस्य वर्षस्य अक्तूबर-मासस्य द्वितीये दिनाङके (2/10/2014) नवदेहली महानगरस्थे राजघाटे प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी भारतं न्यवेदयत्, ''सर्वे स्वच्छभारताभियाने योगदानं यच्छन्तु'' इति। तस्मिन् दिने स्वयं प्रधानमन्त्री स्वहस्ते मार्जनीं गृहीत्वा नवदेहली-महानगरस्थे मन्दिरमार्गे स्वच्छताकार्यस्य शुभारम्भः कृतवान्।

राहुल मण्डल:

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्



विद्यार्थी लक्षणम्

प्राचीन विद्यार्थी के लक्षण-

काकचेष्टाः बकोध्यानम् श्वाननिद्रा तथैव च। अल्पाहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पञ्चलक्षणम्।।

कौवे की चेष्टा, बगुले जैसा ध्यान, कृत्ते की नींद, अल्प आहार का सेवन तथा गृह की चिंताओं का त्याग करना ही विद्यार्थी के लक्षण है।

आधुनिक विद्यार्थी के लक्षण-

फेसबुकचेष्टा वहटस्सप ध्यानम् घोरनिद्रा तथैव च। मुर्गाहारी बोतलधारी विद्यार्थी पञ्चलक्षणम्।।

फेसबुक की चेष्टा, वहट्स्प पर ध्यान देना, अत्यधिक सोना, मुर्गे का आहार लेना तथा बोतल का धारण करना-ये आधुनिक विद्यार्थी के लक्षण है।

राहुल मण्डल:

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्

* of a % of a % of a

जीवनस्य किम्?

विधा जीवनम् अस्ति, अविद्या मृत्युः। सत्यं जीवनम् अस्ति, असत्यं मृत्युः। धर्मः जीवनम् अस्ति, अधर्मों मृत्युः। परोपकारः जीवनम् अस्ति, स्वार्थः मृत्युः। एकता जीवनम् अस्ति, विरोधः मृत्युः। प्रेम जीवनम् अस्ति, घृणाः मृत्युः। सत्संगः जीवनम् अस्ति, कुसंगो मृत्युः। वीरता जीवनम् अस्ति, कायरता मृत्युः। अहिंसा जीवनम् अस्ति, हिंसा मृत्युः। पुरूषार्थ जीवनम् अस्ति, आलस्य मृत्युः।

अजाद सिंह:

बी.ए.(विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



संस्कृतं पठामः, संस्कृतेन आचरामः

आंरलभाषां त्यजतु संस्कृतभाषायां वदतु। Hello Hello मास्तु हरिओउम् वदत्।। Good Morning मास्तु सुप्रभातं वदत्। Good Night मास्तु शुभ रात्रिः वदतु।। Mummy Dady मास्तु माता पिता वदतु। Welcome Welcome मास्तु स्वागतं वदत्।। Good Afternoon मास्तु सुमध्याहनं वदत्। Good Evening मास्तु शुभसंध्या वदतु।। Thank you मास्तु धन्यवादं वदतु। Dont Worry मास्तु चिन्ता मास्तु वदतु।। Bye Bye मास्तु पुन: मिलाम: वदतु। Sorry Sorry मास्तु क्षम्यतां वदत्।। Sister Brother मास्तु भ्राता भगिनि वदतु। Sir Mam मास्तु महोदय महोदया वदतु।। Nice Nice मास्तु शोभनं शोभनं वदतु। Very Nice मास्तु अति शोभनं वदत्।।

आशीष भारद्वाजः

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्



को नाम धर्मः

वर्तमानसमये धर्मस्य नाम्नि बहवः कपटवेषाः भवन्ति। ये समाजजातिराष्ट्रानां क्षतिं कुर्वन्ति। अस्मादेव कारणाद् अराजकता संतोषातंकवादान्धविश्वासानां जन्म जायते, यत् समाजजातिराष्ट्राय अवोन्नतेः कारणं भवति। अस्य मुख्यकारणं तु धर्मस्य सत्यस्वरूपस्य ज्ञानस्याभावो वर्तते। अधिकांशतो जना एवं मन्यन्ते यत् हिन्दूसिख-ईसाईमुस्लिम इत्यादयाः एव धर्माः सन्ति। परन्तु एते सर्वे धर्माः न, अपितु सम्प्रदायाः सन्ति। ये मनुष्यान् स्वमार्गात् निवारयन्ति, अर्थात् स्वकर्तव्यात् च्युतं करोति। अतो धर्मस्यवास्तविक-स्वरूपज्ञानायास्माभिः वेदादिशास्त्राणां आर्षग्रन्थानां चाध्ययनमपेक्ष्यते। तदैव धर्मस्य वास्तविक-स्वरूपस्य ज्ञानं भविष्यति।

स्मृतिकारेणोक्तम्-

धृति: क्षमा-दमोऽस्तेयं शौचिमिन्द्रियनिग्रह:। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

मनु० 6/92

महर्षिमनुना धर्मस्य दशलक्षणानि गणितानि। (धृतिः) सुखदुःखहानि लाभेष्विप व्याकुलो भूत्वा धर्मो न त्याज्यः, किन्तु धैर्येन धर्म एव स्थिरी भवनम्। (क्षमा) निन्दास्तुतिमानापमानान् सोढ्वा अनपकारपूर्वकं धर्मस्यैव करणम्। (दम) मनोऽधमार्गात् सर्वदापसार्य धर्म एव प्रवर्तनम्। (अस्तेयम्) मनकर्म वचनान्यायाधर्मैः परेषा द्रव्यानां न स्वीकरणम्। (शौचम्) रागद्वेषादेः त्यागेनात्ममनसोः पवित्रकरणम्, जलादिभिः शरीर शुचिं करणम्। (इन्द्रियनिग्रहः) श्रोत्रादिबाह्येन्द्रियानि विषयेभ्यो निवार्य धर्म एव चालनम्। (धीः) वेदादिसत्यविद्यानां ज्ञानम्, कुसुंगदुर्व्यसन-मद्यपानादीनां त्यागः। (विद्या) यया आभूमिं ईश्वरपर्यन्त पदार्थस्य यर्थाथबोधो भवति। (सत्यम्) यः पदार्थः यथास्ति तथैव ज्ञानं सत्यम्। (अक्रोध) क्रोधादिदोषान् त्यक्तवा शान्त्यादिगुणानां ग्रहणं धर्म इति कथ्यते। एतेषां विपरितकरणम् अधर्म इति कथ्यते।

इतोऽपि लघुनोपायेन धर्ममभिगन्तुं शक्नोति। यथा स्वात्मने व्यवहारो रोचते तथैव परेषां समाचरणं धर्म इति कथ्यते।

उक्तञ्च-

वेद: स्मृति: सदाचार: स्वस्य च प्रियमात्मन:। एतत्चतुर्विधं प्राह: साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।। मन्० 2/12

धर्मवीर आर्यः

एम.ए. (अन्तिमवर्षं) संस्कृतम्



अरमाकं देश:

अस्माकं देश: भारतवर्षम् अस्य उत्तरास्यां दिशायां हिमालय: पर्वतराजोऽस्ति प्राचीन काले भारतस्यामिधानमार्यवतै: आसीत्। अत्रस्या: मूलतिवासिन आर्या अत्र पुरा एव प्रतापो नृपोऽभवत यस्याभिधोज भरत:आसीत्।

तस्य राज्यं न केवल भारते एव आसीत् अपितु विदेशेषु अपि तस्य शासनमासीत् राज्य प्रबन्धे सः अतिव कुशलः आसीत्। सर्वे जना तस्य राज्ये सुखितः आसन तस्याभिधाने नैव एतस्य देशास्याभिधानं भारतमस्ति अस्माकं देशे विविधाभाषा विविधाः च सम्प्रदायाः सन्ति परम् अनेकाषां भाषाणामुद्गमः संस्कृतभाषाया अस्ति अनेकाषां च सम्प्रदायानामुदगमः वैदिक संस्कृते अस्माकं भारत भूमि चैका तस्मात वे वयं भारते वसामः ते सर्वे एवं भारतभूमि चैका। यदि वयं सहयोगिन कार्य करिष्यामः परस्परं च स्नेहेन मिलित्वा स्थास्यामः तपाऽस्माकं सर्वेषां कल्याणं यदि च वयं परस्परं घृणां द्वेष दर्शियष्यामः तदाऽस्माकं देशस्य च महती हानिः भविष्यति।

राहुल:

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



पुरतकम्

पृथिव्याः श्रृंगारम् पुस्तकम्। ज्ञानस्य भंडारं पुस्तकम्।।

व्यक्तित्व-निर्माणं करोति पुस्तकम्। दिशानिर्देशं करोति पुस्तकम्।।

चिन्तामुक्त करोति पुस्तकम्।

मनोरंजनस्य साधनं पुस्तकम्।।

सामान्य ज्ञानकारणम् पुस्तकम्। पथप्रदर्शकं प्रेरणादायञ्च पुस्तकम्।।

अजाद सिंह:

बी.ए.(विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्

संस्कृतश्लोक:

आलस्य कुतो विद्या, अपिधस्य कुतो धनम्।
 अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतो सुखम्।।

अर्थ - आलसी को विद्या कहाँ अनपढ़ को धन कहाँ निर्धन को मित्र कहाँ अमित्र को सुख कहाँ।

2. आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान रिपु:। नास्त्युद्यमरागो बन्धु: कृत्वा यं नावसीदति।।

अर्थ- मनुष्य के शरीर में रहने वाला आलस्य ही उसका सबसे बड़ा शत्रु होता है। परिश्रम जैसा दूसरा मित्र होता तो परिश्रम करने वाला कभी दु:खी नहीं होता।

यथा हि एकेन चक्रेण न रथस्य गतिर्भवेत्।
 एवं पुरूषकारेण बिना दैवं न सिद्धति।

अर्थ - जैसे एक पहिये से रथ नहीं चल सकता, वैसे ही पुरूषार्थ के बिना भाग्य नहीं हो सकता है।

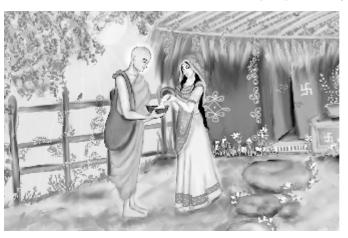
अष्टादशः पुराणेषु व्यासस्य वचन्द्वयम्।
 परोपकाराः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।

अर्थ- महर्षि वेदव्यास जी ने अठारह पुराणों मे दो विशिष्ट बाते कही है परोपकार कराना पुण्य होता है। पाप का अर्थ है दूसरो को दु:ख देना।

जाडंय धिये हरित सिंचित वाचि सत्य।
 मनोप्रति दिशिति पापमपालकरोति।।

अर्थ – अच्छे मित्रों का साथ बुद्धि की जड़ता को हर लेता है, वाणी में सत्य का संचार करता है मान और उन्नित को बढ़ाता है और पाप से मुक्त होता है।

राहुलः बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्





सुरस सुबोधा, विश्व मनोज्ञा ललिता हृद्या, रमणीया। अमृत वाणि, संस्कृत भाषा नैव क्लिष्टा न च कठिणा।

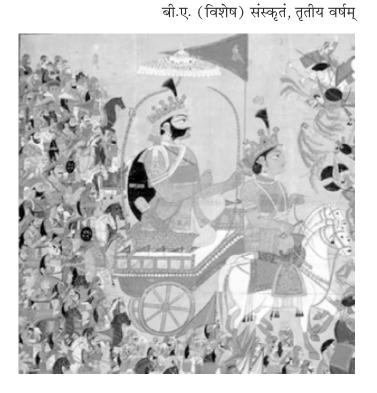
> कवि कोकिला वाल्मीकि विरचिता रामायण रमणीय कथा। अतीव सरला मधुर मन्जुला। नैव क्लिष्टा न च कठिणा।।

व्यास विरचिता गणेश लिखिता महाभारते पुण्य कथा। कौरव पाण्डव संगर मथिता नैव क्लिष्टा न च कठिणा।।

> कुरूक्षेत्र समराङ्गणगीता विश्ववन्दिता भगवद्गीता। अमृतमधुरा कर्मदीपिका नैव क्लिष्टा न च कठिणा।।

कविकुलगुरूनवरसोन्मेषजा ऋतु-रघु-कुमारकविता। विक्रम-शाकुन्तल-मालविका नैव क्लिष्टा न च कठिणा।।

कमल शर्मा



नैव क्लिष्टा न च कठिना गुरु-मित्र-विद्यार्थीलक्षणानि

गुरू का लक्षण-

गुकारस्त्वन्धकारस्य रुकारस्तद्विरोधकः। अन्धकार विरोधित्वात् गुरूरित्यभिधीयते।।

अनुवाद: 'गु' अन्धकार का वाचक है, 'रू' उस अंधकार का विरोधी है। इस प्रकार अज्ञान रूपी अंधकार का विरोध करने वाला होने से गुरु होता है।

मित्र का लक्षण-

पापान्निवारयति योजयते हिताय गृह्यं निगृहति गुणान् प्रकटीं करोति। आपद्गतं च न जहाति ददाति काले सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।

अनुवाद: जो पाप कार्य का निवारण करता है हितकारी कार्यो में लगाय। गोपनीय बातों को छुपाकर गुणों को प्रकट करता है। काल में विपत्ति आने पर साथ नहीं छोडता बल्कि साथ देता है। मित्र का लक्षण सन्त बताते है।

छात्र का लक्षण-

काक चेष्टा, बको ध्यानं श्वान निद्रा तथैव च अल्पहारी, गृहत्यागी, विद्यार्थी पञ्च लक्षणं।।

अनुवाद: कौए के समान अच्छा, बगुले के समान ध्यान, कुत्ते के समान निद्रा, अल्पहारी, गृहत्यागी विद्यार्थी के पाँच लक्षण हैं!

विद्यार्थी के लक्षण-

सुखार्थी त्यजते विद्यां विधार्थी त्यजते सुखम् सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम्।।

अनुवादः जो व्यक्ति सुख के पीछे भागता है उसे ज्ञान नहीं मिलेगा तथा जिसे ज्ञान प्राप्त करना है वह व्यक्ति सुख का त्याग करता है।

> -निखिल पाराशरः बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्







नीतिवचनानि

पापस्य किं कारणम्? लोभ: पापस्य कारणम्।

प्रवासे किं मित्रम्? विद्या मित्रं प्रवासेषु।

कुत्र पूज्यते विद्वान? विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

कस्मात् भयं साधूनाम्? साधूनाम् दुर्जनात् भयम्।

> अजाद सिंहः बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्

सुभाषितम्

भये वा यदि वा हर्ष सम्प्राप्ते या विमर्शयेत्। कृत्य न कुरुते वेगात् न स सतामाप्नुयात् भये जाते आनन्दे जाते च यः तस्य पौर्वापर्य विषये चिन्तयसि, अयि न वेगेन कार्यं करोति सः कदापि दुःख मा अनुभवति।।

प्रियंका

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्

संस्कृतं पठनेन लाभः

संस्कृत पठनेन संस्कारः लभ्यते। भारतीय संस्कृति ज्ञायते। प्राचीन विज्ञानं लभ्यते। अन्यभाषाः ज्ञान सुलभ भवति। अनेकानि सुभाषितानि श्लोकाः च ज्ञायन्ते। नीतिकथाः ज्ञायन्ते। सुमधुर गीतानि प्राप्यन्ते। भाषा नैपुण्यं वर्धते। शस्त्रज्ञानं वर्धते। मानसिक आनन्दः प्राप्यते। मंत्रोच्चारणेन पुण्यं लभ्यते।

मन: कामना भगवन् ! त्वदीय भक्ति न कदापि विरमेद् ।

प्रियंका

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



महाकविकालिदासः

कविकुलगुरूः कालिदासः संस्कृतसाहित्ये इन्दुरिव प्रकाशते। अयं महाकवि 'कवि शिरोमणिः, ''कविसम्राटः'' इतिपदाभ्यामंलकरोति। यथा आंग्ल सहित्ये शेक्सपीयरस्य स्थानं, तथैव संस्कृतसाहित्ये महाकवि कालिदासस्य स्थानमस्ति। अयं प्राचीनकालस्य राष्ट्रकविरुच्यते। अस्य प्रतिभा नाट्यकलायां काव्ये तथा गीतिकाव्ये दृश्यते। कालिदास्य एते ग्रन्थाः प्रसिद्धाः सन्ति-रघुवंशम्, ऋतुसंहारम्, मेघदूतम्, कुमारसम्भवम्, मालविकाग्निमत्रम्, विक्रमोवंशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलम्। एताः सर्वाः अद्वितीयाः कृतयः संस्कृतसाहित्ये अमूल्य निधिरूपेण वर्तन्ते इव।

अस्य महाकवे: स्वजीवनविषये कोऽपि संकेत: नास्ति किंतु अयं चन्द्रगुप्त द्वितीयस्य राज्यकाले अवस्थित: अभूत इति विदूषां मतम्। चन्द्रगुप्त द्वितीय: विक्रमादित्य इत्युपाधि धारयते।

संस्कृतसाहित्ये कालिदासः उपमायै प्रख्यातः अस्ति। कथ्यते एवं उपमा कालिदास्य सत्यमेव अस्य उपमाः अनुरूपा, रमणीया च वर्तन्ते। अस्य रघुवंशम् नाम महाकाव्यं उपमालङ्कारस्य प्रयोगनैव प्रारभ्यते-

> वागर्थाविव सम्पृक्तौ वार्गथाप्रतिपत्त्ये। जगतः पितरौ वन्दे पावर्ती परमेश्वरौ।।

अस्य महाकवे: अन्य विशिष्ट: गुण: 'भाषासरलता' अस्ति। अस्य नाटकान्यपि अतीव उत्कृष्टानि। अस्य 'अभिज्ञानशाकुन्तलं' नाटकं विश्वविख्यातमस्ति। इदं नाटकं कालिदासस्य सर्वस्वं मन्यते।

अजाद सिंह:

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



संस्कृताध्ययनस्य उपयोगिता

संस्कृतम् इति संस्कृतभाषायाः कृते प्रयुज्यते। भारतवर्षे यावत्यः भाषाः अधुना अपि वदन्ति तासां विशेषतः उत्तरभारतीयानां भाषाणाम् उत्पत्तिः संस्कृतभाषातः एव अन्याश्च काश्चन भारतीयाः एव द्रविडभाषाः यद्यपि संस्कृतभाषातः नोत्पन्नः, किन्तु तासाम् अपि संस्कृतेन सम्बन्धः सुदृढो व्यापकश्च। मलयालम-कन्नड-तिमल-तेलुगूभाषाः द्रविड परिचारीयाः प्रधानाः। तासु प्रतिशतं षष्टिः सप्तिः वा शब्दाः पञ्चाशतम् अभिव्याप्य तु अवश्यं संस्कृतस्य वर्तन्ते।

वयं सर्वे जानीमः यत् भारते सम्प्रति अपि एकस्याः राष्ट्रभाषायाः समस्या न समाहिता। यद्यपि स्वतंत्रता-प्राप्तेः पूर्वतः एव एषः प्रश्नः उत्थापितः समाधानं च अस्य कृतम् हिन्दी समग्रस्य भारतस्य एका राष्ट्रभाषा भवतु इति। परन्तु विशालस्य अस्य देशस्य बहुभाषस्य अनेक विचारस्य तादृशी जटिलता वर्तते यत् स्वतंत्रता प्राप्त्यन्तरम् अयं पूर्व-निर्णीतः अपि विचारः सर्वेः मान्यः न अभवत्। फलतः अस्य प्रस्तावस्य पूर्ण कार्यान्वयनम् सर्वकारस्तरे कियप्सु वर्षेषु अतीतेषु स्यात् इति एषः निर्णयः निश्चितः वा देश सञ्चालकैः नेतृभिः कृतः। किन्तु एतावप्सु वर्षेषु अतीतेषु अपि कदापि एषः अवसरः न लब्धः यदा सम्पूर्ण-भारतस्य राष्ट्रभाषा हिन्दी मान्या अभविष्यत्। एषा एव स्थितिः वर्तते।

अन्य दृष्ट्रयापि भारते संस्कृतस्य अध्ययनस्य उपयोगः अपरिमितः। भारतीया संस्कृतिः संस्कृतमूला। भारतीया महान्तः विश्वविश्रुताः प्राचीनाः ग्रन्थाः संस्कृतमूलाः। धार्मिकमान्यता संस्कृतमूलाः। सर्वे भारतीयाः पदार्थाः पेयाः भक्ष्या, लेहया, दृश्याः, स्पष्टयाः श्रोतव्याः घ्रातव्याः, संस्कृतनामवन्तः एव। दिनानाम् तिथीनाम्, पक्षयोः, मासानाम्, ऋतूनाम् वर्षस्य च नामानि संस्कृतमूलानि।

भारत वर्षस्य सर्वे: जनै: मनुस्मृति अध्ययनकरणीया। यतः अस्मिन् ग्रन्थे निवेदितम् अस्ति यत् केन सह कथं व्यवहरणीयम्, परिस्थितिविशेषस्य चर्चा सर्वत्र दृश्यते परं एषा स्मृति: तु संस्कृतभाषायाम् एव अतः अनेन दृष्ट्रया अपि संस्कृताध्ययनस्य उपयोगिता भवति।

तदित्थं हिन्द्याः राष्ट्रभाषात्वेन पूर्णप्रतिष्ठापनम् संसारे आत्म-महत्वप्रदर्शनम् भारतीयतायाः समग्रः बोधः भारतस्य अत्यावश्यकम् एवयम् इत्यादि विषयाः संस्कृताध्ययनात् एव सम्भवित्ं शक्नोति।

जगमोहन कुमारः

एम.ए. (संस्कृतं), प्रथम वर्षम्



भाषाणां जननी संस्कृतभाषा

अस्ति खलु संस्कृतभाषा संसारस्य प्राचीनतमा भाषा नात्र मतद्वयं सम्भवित। सन्ति वेदाः संसारस्य प्राचीनतमा ग्रन्थाः। ते च वर्तन्ते संस्कृतभाषायामेव प्राचीन भारतस्यासीत्संस्कृतमेव लोकभाषा राजभाषा च। महर्षिणा यास्केन तस्या द्वौ भेदौ स्वीकृतौ–वैदिक संस्कृतं लौिककसंस्कृतं च। संस्कृतशब्दव्य व्युत्पित्तिनिमित्तकमर्थ– मस्ति शोधितं, पिरमार्जितं वा। एतस्मादर्थात् प्रतीयतेयत् संस्कृतभाषा विशुद्धा परिष्कृता च वर्तते। पाणिनि–प्रभृतयो महाविद्वांसो वैयाकरणाः सन्तिः तस्याः परिष्कर्तारः। संस्कृतभाषा देववाणी भारतीयादिभिर्नामभिरपि व्यवह्वियते। एते शब्दास्तस्या गौरवमेय प्रतिपादयन्ति।

भारतस्य सर्वापि वर्तमाना आर्यभाषाः संस्कृतभाषाया एवोत्पन्नाः। एवषोऽस्ति सर्वसां भारतीय भाषाणामपि जननी। भाषावैज्ञानिकानां मतानुसारेण संस्कृतभाषायाः पालीभाषा, पाल्याप्रदेशमेन विविधाः प्राकृतभाषाः, प्राकृतभाषाग्योऽपभ्रंशभाषा अपभ्रंशभाषाग्यश्चाऽधुनिकाः पंजाबी-सिंधी-हिन्दी-गुजराती-मराठी-उड़िया-बंगाली-बिहारी-अवधी-व्रजप्रभृतयो भाषाः निष्पन्नाः। इदं वैशिष्टयमस्ति यत् संस्कृतभाषायां शब्द-रिववरचना अपूर्वा वर्तते।

संजना बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्



अनुशासनम्

जीवने अनुशासनस्य अतीव महत्त्वं वर्तते। निर्धारितानां नियमानां पालनं, आदेशानां पालनं सन्मार्गस्य अनुसरणं इति अनुशासनस्य अर्थः अस्ति। अनु उपसर्ग पूर्वकं शास् धातोः ल्युट प्रत्यये कृते 'अनुशासनं' शब्दः निष्पद्यते। परिवारस्य, विद्यालयस्य, समाजस्य, राष्ट्रस्य च नियमसमुदायस्य परिपालनं तदनानुसारम् आचरणं च अनुशासनमुच्यते। सर्वेषु स्थानेषु अनुशासनस्य पालनं परमावश्यक भवति। अनेन विना जीवनं उन्नतम् भवति। अस्य पालनेन मानवः स्वजीवने सफलताम् प्राप्नोति। निष्ठापूर्वकेन स्वर्ध्मस्य कर्त्तव्यस्य या पालनमेव अनुशासनमस्ति। यदा मानवः अनुशासनम् व्यजति तदा सः स्वधर्म, आदर्शस्य उन्नतेः च आधारस्तंभ अस्ति।

प्रत्येक-क्षेत्रे निर्धारिताः नियमाः भवन्ति। परिवारे परिवारिक नियमाः समाजे सामाजिकनियमाः, विद्यालये शैक्षणनियमाः, राष्ट्रे राजकीयनियमाः निर्धारिताः सन्ति। तेषाम् नियमानाम् पालने सर्वेभ्यः जनेभ्यः आवश्यकं वर्तते। यत्र तेषाम् पालनं न भवति तत्र पतनमपि आवश्यकं।

विद्यालये यथासमयम् आगमनं, विद्यालयां नियतं परिधारणं सावधानेन पठनं, अपशब्दानां नोच्चारणम्, गुरूणाम् आज्ञापालनं, सम्मानं च विद्यालयस्य अनुशासनमस्ति, सर्वे: छात्रै: तद् अनुशासनं परिपालनीयं। अनुशासनस्य पालनेन छात्रा: निश्चित रूपेण सफलाः भवन्ति। अनुशासनहीनतया छात्रा: कदापि सफलकं न प्राप्नुवित। ते शनैः शनैः कुमार्गगामिनः भवन्ति वयं पश्यामः यत् प्रकृतिः अति अनुशासनवृद्धा भवित। सूर्यः स्वकाले उदित चास्त गच्छिति ऋतवः नियमतः एव परिवर्तन्ते, सर्वाणि ग्रहनक्षत्राणि नियमतः एव परिभ्रमन्ति। अतः अनुशासनं हि मनुष्याणां परं कर्तव्यः। एवमात्मनः समाजस्य देशस्य राष्ट्रस्य च उन्नत्यै अनुशासनं अत्यावश्यकम्।

कंवरजीतः बी.ए. (विशेष) संस्कृत, तृतीय वर्षम्





भारतीया संस्कृतिः

''सा प्रथमासंस्कृतिर्विश्ववारा'' इत्यादिसुभाषितानामुपधात्र्यास्त अस्मदीया भारतीया संस्कृतिः। संस्करणं परिष्करणं चेतस आत्मनो वान्यच्च सा नाम संस्कृतिर्या शपनयित मलं मानसी चपलता च। साम्प्रतिक्यां लोकसंस्थितौ संस्कृतिरस्मदीया प्रकाशयित मनोभावन् चेतिस संस्थापयित स्थैर्यम्, अविद्यातमोऽपतन्ति, भूतिं भावयित सुखदा सरला मनोहारिणी, हृदयङ्गमा चास्ति। न केवलमयमुपकर्त्री व्यष्टेरेवापि तु समष्टेरिप जीवनभूता। उपकरोतीयमात्मनोमनसो लोकस्य देशस्य संसृतेर्वा। भारतीया संस्कृतिर्विश्वस्य सर्वप्राचीना संस्कृतिः। संस्कृतिरियं मर्त्यान् व्यवच्छेदयित सत्वेभ्यः उक्तञ्च धर्मो हि तेषामिधको विशेषो धर्मेण हीनः पशुभिर्समानाः। यम नियमब्रह्मचर्यादिसिद्धिधात्री लोककल्याणकारी दैत्याध्यात्मिकी पारलौकिकी भावनात्मकी राजनीयापालनीया– साधनीया च भारतीया संस्कृतिरसंसृतौ यशसे सुखबोधाय धर्मकृते च। किश्चत् कविनापि विवर्णितम।

संस्कृतं संस्कृतिर्नाम....

प्रद्युम्नः

संस्कृत विशेष स्नातक, प्रथम वर्ष

मनोकामना

भगवन्! त्वदीयं भिक्त न कदापि विस्मरेश्यम्।
निज-देश-जाति-सेवा इसको हरे भवेयम्।
जायेत जातु नो मे परपीडनाभिलाषः।
दीने सहायहीने सततं प्रभो। द्रवेयम्।
गतिरस्तु सर्वदेशे रितरस्तु नैजवेशे।
गुरुपादयोर्निदेशे स्वमनः प्रवर्तयेयम्।
न विभो परापवादे समुदेतु मेऽनुरागः।
परकीयावित्तभागं मनसाऽपि नो हरेयम्
कुरुते सदा विनीतो विनयं कृपैकसिन्धो
गुरु-पूज्य-वृन्द-सेवाकरणे वयो नयेयम्।।

प्रियंका

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्

विद्याधनम् सर्वधनप्रधानम्

विद्या एव तद्धनम् यया सर्वेऽपि मानवीयो मनोरथोऽभिलाषो वा पूर्यते। विद्यया एव कर्त्तव्या–कर्त्तव्य–ज्ञानम्, यस्य अपरं नाम विवेक: अस्ति।

किं किं न साधयित कल्पलतेव विद्या। कल्पलता इव सर्वसुखसाधिका, सर्वगुणप्रदा सर्वाभीष्ट सन्धात्री च। एषा मातृवत् संरक्षिका, पितृवत् सत्यपथ-प्रदर्शिका च। इयं कीर्तिप्रदा, वैभवदायिनी दुर्गुणगणनाशेन मनसः पावियत्री च। सर्वमनोरथ-पूर्णकारणात् इयं कल्पलतया उपमीयते। विद्या एव तत्वज्ञानाधिगमाद् ब्रह्मरूपस्य अमृतत्वस्य च साक्षात्कारेण अमृतत्वावाप्तिः सम्भवति।

अतः विद्या समम् एव बुद्धेः अपि समन्वयः अनिवार्यः। बुद्धिमन्त्रेण विद्या मौद्ध्यमेवा-विष्करोति। बुद्धिपूर्विका हि विद्या सर्वविषयसारग्रहिका समस्तसुखसन्निधात्री च। अत एव उच्यते -'विद्याया बुद्धि उत्तमा'।

'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते' अर्थात् विद्वज्जनः सर्वत्र पूज्यते। सः कुत्रापि क्षुधार्तः न भवति। विद्यया मनुष्ये विनयः कीर्तिः, विवेकः आदयः सदगुणाः आगच्छन्ति। एवं प्रकारेण 'विद्याधनम् सर्वधनप्रधानम्'-इयमुक्तिः सर्वथा उपपन्ना एव।

अंकितः एम.ए. संस्कृतं, प्रथम वर्षम्



शिवराज



सर्वेभ्यः शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम्

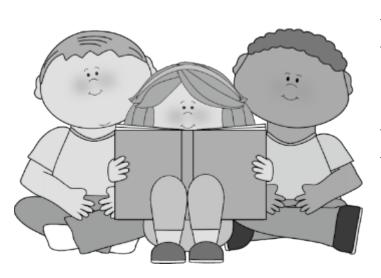
किम् अस्ति तत् पदम् च: लभते इह सम्मानम् किम् अस्ति तत् पदम् य: करोति देशानाम् निर्माणम्

> किम् अस्ति तत् पदम् यं कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम् किम् अस्ति तत् पदम् यस्य छायायाः प्राप्तम् ज्ञानम्

किम् अस्ति तत् पदम्
य: रचयित चिरित्र जनानाम्
गुरू अस्ति अस्य पदस्य नाम
सर्वेषाम् गुरूणाम् मम शतं प्रणाम:।

कमल शर्मा

बी.ए. (विशेष) संस्कृत, तृतीय वर्ष



आमुखपटले सुविचार्य चित्राणि

आमुखपटले बहवः जनाः सन्ति।
ते स्वरूच्यानुसार अत्र अनेकानि चित्राणि स्थापयन्ति।
तेषु अनेकानि चित्राणि महापुरूषाणां भवन्ति।
अनेकानि चित्राणि अभिनेताभिनेतृणां भवन्ति।
अनेकानि चित्राणि अभिनेताभिनेतृणां भवन्ति।
अनेकानि चित्राणि सुललितसुभाषितानाम् अपि भवन्ति।
एतानि वैविध्यपूर्णाणि चित्राणि।
स्थापकस्य व्यक्तित्वं प्रदर्शयन्ति। अतः आमुखपुस्तके सुविचार्य
एवं चित्राणि स्थापनीयानि।

कमल शर्मा

बी.ए. (विशेष) संस्कृत, तृतीय वर्षम्



अनुशासनस्य महत्त्वं

अनुशासनस्य अस्माकं जीवने अतिमहत्वं अस्ति। अनुशासनम् शब्द 'अनु' उपसर्ग 'शासनम्' शब्देन निर्मितं अस्ति। अस्य अर्थमस्ति–शासनस्य अनुसरणम्। अतः नियमानां पालनं नियन्त्रणं स्वीकरणं वा अनुशासनम् कथ्यते। जीवनस्य प्रत्येकस्मिन् क्षेत्रे कितप्यानां नियमानां पालनं आवश्यकं वर्तते। प्रातः शीघ्रं जागरणं नियमितव्यायामं, नियमेन स्वकार्यं करणं, कार्यं प्रति पूर्णसमर्पणं अनुशासित जीवनस्य अंगनानि सन्ति। प्रकृत्याः श्रृष्ट्याः वा मूलेअपि अनुशासनं दृश्यते। प्रकृत्याः नियमाः शाश्वताः, ध्रुवाः च सन्ति। पृथ्वी, ग्रहाः, नक्षत्रः, सूर्यः, चन्द्रः सर्वे अनुशासने बद्धाः सन्ति। शरीरस्य आरोग्याय यथा संतुलितं भोजनम् अपेक्षते। छात्राणाम् कृते अनुशासनस्य बहुमहत्त्वं अस्ति, यदि छात्राः ध्यानेन पठन्ति तर्हि भविष्ये जीवनस्य प्रत्येकस्मिन क्षेत्रे साफल्यं प्राप्तुवन्ति।

दुर्गेश गौतमः

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्



गुरोः महत्त्वम्

भारतीय संस्कृतौ गुरो: महत्त्वम् दिव्यरूपेण वर्णितम्। केनचित् विदुषा उक्तम् यत् गुरु: ब्रह्मा अस्ति। गुरु: एव विष्णु: अस्ति। गुरु: साक्षात् महेश्वर: परब्रह्म: च अस्ति।

सद्गुरु: स: एवं अस्ति य: नि:स्वार्थपेण निरन्तरं शिष्याणां कल्याणं करोति। सद्गुरु: एवं शिष्यं कुयागीत् निवारियतुय् समर्थ स:च पर ईश्वरस्य दर्शनम् अपि कारियतुम समर्थ-

भातु: सरस्वत्या: वरद-पुत्रेण

तुलसीदासेन श्रीरामचिरतमानसस्य प्रारम्भे गुरोः महत्वम् अतिशयेन रूपेण वर्णितम्। गुरुः कृपा-सागरः अस्ति। यथा रिविकरणा अन्धकारम् नाशयित तथैव गुरुः योहान्धकारम् नाशयित। भारतीय साहित्याकाशस्य उज्ज्वल नक्षत्रः तुलसीदासः अग्रे वर्णयित यत् गुरुचरण-कमलयोः परागः अनेकान् रोगान् नाशयित।

एतादृशे पिवत्रे ग्रन्थे रामचिरतमानसे तुलसीदासेन मनोहरं वर्णनं कृतं यत् गुरु-चरण-धूलिका नरस्य कल्याणं करोति। गुरु-चरण-कमलयो: भकरन्द: चित्त-दर्पणस्य मलं हरति।

अयम् तु हर्षस्य विषयोऽस्ति यत् यहाकविः तुलसीदासः ज्ञानस्य निधिः आसीत् सः अग्रे कथयति यत् गुरु-पद-नखानां ज्योति मणीनाम् प्रकाशः इव अस्ति। गुरु-चरण-ज्योति-स्मरणे हृदये दिव्यदृष्टि उत्पन्ना भवति। गुरु-चरण-ज्योतिः अज्ञानान्धकारम् नाशयति।



गुरुं प्रति श्रद्धाभावेन हृदयस्य आन्तरिके नेत्रे विकसितो भवति। हृदये अपूर्व-आनन्दस्य अनुभूति भवति। गुरु-पद-रजः नयनामृतम् अंजनम् अस्ति, नेत्राणाम् दोषम् अपहरित। अतः अस्माकं परं कर्तव्यम् अस्ति यत् वयम् रामचिरतमानसस्य अध्ययनम् अवश्यमेव कुयभि। अस्य पवित्रस्य ग्रन्थस्य पठनेन गुरुं प्रति श्रद्धा उत्पन्ना भवति।

गुरु: वास्तविक-रूपेण शिष्यानां सर्वविधं कल्याणं करोति। गुरु: तेषां नैतिकं, सामाजिक, अध्यात्मिक च विकासं करोति।

परं तु वर्तमान-काले छात्राणां हृदयेषु गुरुं प्रति श्रद्धा न्यूना दृश्यते। कारणं तु स्पष्टम् अस्ति यत् दूरदर्शने विभिन्न प्रकारेषु कार्यक्रयेषु, नाटकेषु च अनुशासनहीनता दृश्यते। अश्लीलता पूर्णं नाटकं दृष्टवा छात्रा: पथभ्रष्टा भवन्ति। चलचित्राणाम् प्रस्तुतीकरणमपि भारतीय-आदर्श-विहीनम् भवति। नग्न-चित्राणां दर्शनेन छात्रा किंकर्तव्य-विमूढा: सन्ति, गुरूणाम् आदरं न कुर्वन्ति।

भारतशासनस्य परं कर्तव्यम् यत् तेन दूरदर्शने नैतिकता-वर्धकानां कार्यक्रमाणां प्रस्तुतीकरणं कर्तव्यम्। भारतीय-संस्कृति युक्तानां कार्यक्रमाणां प्रसारणं छात्रेभ्यः कल्याणप्रदं भविष्यति। तेषां दर्शनेन छात्राणाम् हृदये गुरुं प्रति श्रद्धा उत्पन्नाः भविष्यति।

गृहे भातुः पितृः च कर्तव्यम् अस्ति यत् ताभ्याम् स्वबालकानाम् हृदये गुरुं प्रति श्रद्धा उत्पन्ना करणीया। छात्राणाम् परं कर्तव्यमस्ति यत् तैः सर्वदा गुरुः पूजनीयः। यदि छात्राः स्वः सर्वविधं विकासं इच्छन्ति तर्हि ते गुरोः आदरम्, पूजां च कुर्युः।

कंवरजीत:

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



अरमाकं किम् कर्त्तव्यम्

किं कर्त्तव्यम् – परोपकारः

2. किं वक्तव्यम् – हितकर वचनम्

3. किं श्रोतव्यम् — मधुरं वचनम्

4. किं विज्ञेयम् – निजकर्त्तव्य्यम्

5. किं कर्त्तव्यम् संकटकाले – धैर्यधारणम्

िकं कर्त्तव्यम् दुर्जनसंगे – मौनधारणम्

7. किं कर्त्तव्यम् यौवनकाले – धनोपार्जनम्

8. किं कर्त्तव्यम् जराकाले - भगवद्भजनम्

9. किं कर्त्तव्यम् अन्तिमकाले - ईश्वर स्मरणम्

आजाद सिंहः

बी.ए.(विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



मानवधर्मः

अभिवादन शीलास्य नित्यं वृद्धोपसेवित:।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुविद्या यशोर्बलम्।।
तृणिन भूमि: उदवा बाबा चतुर्थो च सूनृता।
एतान्यपि जता गेहे नोच्छिद्यन्ते कदाचन।।
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रिय च नानृतम् ब्रूयात् एषः धर्मः सनातनः।।
अलब्ध चैव लिखित लब्ध रक्षेत यत्नतः।
रक्षित वर्धयेच्छैव वृद्ध पात्रेषु निक्षिपेत्।।
दुराचारी हि पुरूषः लोके भवति निन्दितः।
दुखः भागी च सततम् व्याधितोऽल्पायुः एव च।।

राहुल:

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्

ध्येयवाक्यानि

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम् -विद्यया विन्दतेऽमृतम् अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान -शरीरमाद्य खल् धर्मसाधन् दिल्ली विश्वविद्यालय - निष्ठा धृति: सत्यम् शिवाजी महाविद्यालय - अमृतं तु बिद्या सत्यवती महाविद्यालय - तमसो मा ज्योतिर्गमय रामजस महाविद्यालय - ज्ञानात् परतर न हि स्वामी श्रद्धानन्द महाविद्यालय - श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् भारतीय सर्वोच्च न्यायालय - यतो धर्मस्ततो जय: भारतीय जीवन बीमा निगम - योगक्षेमं वहाम्यहम भारतीय नौसेना - शं नो वरुण: भारतीय आकाशवाणी - बहुजनहिताय बहुजनसुखाय दुरदर्शन - सत्यं शिवमं सुंदरम् एनसीईआरटी- विद्यया अमृतमश्नुते रिपब्लिक ऑफ इंडिया - सत्यमेव जयते भारतीय मौसम विभाग - आदित्यात् जायते वृष्टिः रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन - बलस्य मूलं विज्ञानम् मिरांडा हाउस - स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम् दौलतराम महाविद्यालय - ऋते ज्ञानान्न मुक्ति मैत्रेयी महाविद्यालय - सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म जीसस एंड मैरी महाविद्यालय - तेजोऽसि तेजो मिय देहि पी.जी.डी.ए.वी महाविद्यालय - असतो मा सद्गमय मोती लाल नेहरु महाविद्यालय - बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति एनआईओएस - विद्याधनम् सर्व धनम् प्रधानम् जानकी देवी मैमोरियल महाविद्यालय - विद्या हि परमं ज्योति: दीन दयाल उपाध्याय महाविद्यालय - सत्यमेव जयते विकिपीडीया - स्वतन्त्रविश्वकोशः **भारतीय तटरक्षक** - वयम् रक्षाम्: ट्रिज्म डेवलेपमेंट ऑफ इंडिया - अतिथि: देवो भव: सीमा शुल्क एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क - देशसेवार्थ करसंचय दिल्ली संस्कृत अकादमी - सरस्वती श्रुतिमहती महीयताम् केंद्रीय विद्यालय संगठन - तत् त्वं पूषन् अपावृण् विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा - सा विद्या या विमुक्तये

राहुल मण्डलः

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, द्वितीय वर्षम्

शिवराज



वेदामृतम्

शिवो भू: । - हे जीव! तू सब जीवों का कल्याण करने वाला बन।
उद्धयं तमसस्परि। - हम सदैव अन्धकार से ऊपर उठे।
तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु। - वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।
अदीना स्थान शरद: शतम्। - हम सौ वर्षो तक स्वतंत्र होकर जियें।
ऋतस्य पथि वेधा अपायि। - सत्य के पथिक की रक्षा ईश्वर करता है।
त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ। - अपने ज्ञान के प्रकाश से हमारे
अज्ञान को नष्ट करो।

आचार हीनं न पुनन्ति वेदा:- आचार व्यवहार से हीन व्यक्ति को वेदादि शास्त्र भी पवित्र नहीं कर सकते।

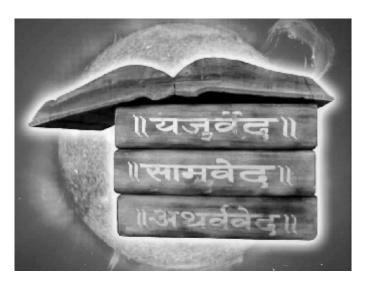
ब्राह्मणोडऽस्य मुखमासीद। – ब्राह्मण इस समाज रूपी शरीर का मुख है।

उतो रिप: पुणतो लोप दस्यित । – दानी का धन घटता नहीं । अपृणन्तमिभ: सं यन्तु शोका: । – परोपकार–हीन कन्जूस को शोक हमेशा घेरे रखता है ।

केवलाघो भवति केवलादी । - अकेला खाने वाला पाप खाता है।

पूजा रायः

बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



वृक्षाः

वने वने निवसन्तो वृक्षाः। वनं वनं रचयन्ति वृक्षाः।। शाखादोलारीना विहगाः। तैः किमपि कूजन्ति वृक्षाः।। पिबन्ति पवनं जलं सन्ततम्। साधुजना इव सर्वे वृक्षाः।। स्पृशन्ति पादैः पातालं च। नभः शिरस्सु वहन्ति वृक्षाः।। पयोदर्पणे स्वप्रतिबिम्बम् कौतुकेन पश्यन्ति वृक्षाः।। प्रसार्य स्वच्छायासस्तरणम्। कुर्वन्ति सत्कारं वृक्षाः।।

> **राहुलः** बी.ए. (विशेष) संस्कृतं, तृतीय वर्षम्



NCC

















TED^X





















E-SUMMIT

























INSPIRE

































International Seminar on Gender Parity

































NSS EVENT













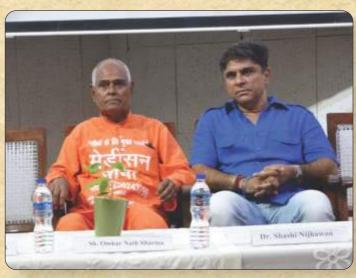












ORIENTATION DAY













SPIC MACAY











SPORTS DAY

























VAN MAHOTSAV









TEACHERS' DAY







YOGA DAY













VIBRATIONS-2019

































TEEJ CELEBRATION







ECO CLUB













OUR PREMISES















हिन्दी विभाग





अनुक्रम

क्र.स.	विषय	लेखिका / लेखक	पृष्ठ स
1.	छात्र संपादकीय	अभिनव सिंह / पृथ्वी कुमार	23
2.	शिष्य का अद्भुत आज्ञा पालन	अम्बुज मिश्र	24
3.	दिल्ली शहर में प्रेम	डॉ. तरुण	25
4.	ईश्वर के प्रति समर्पण	अभिनव सिंह	25
5.	बचपन की यादों में	रवि शर्मा	26
6.	ख्वाहिशों का कैदी हूँ मैं मुझे हकीकतें सजा देती हैं	रवि शर्मा	26
7.	पर्यावरण की समझ	पृथ्वी कुमार	27
8.	जिंदगी का महत्व	विशाल	28
9.	समाज में पांव पसारती नकारात्मक सोच	अम्बुज मिश्र	29
10.	मानव—प्रकृति संवाद	दीपेश कुमार	29
11.	मानव या मानवता के विक्रेता	अम्बुज मिश्र	30
12.	ट्रैफिक सिग्नल	सूरज सिंह	31
13.	स्वच्छता	आशीष कुमार जायसवाल	32
14.	अब चुप न रहूँगी।	शिवांगी रॉय	33
15.	भारत तुझको नमस्कार है,	सौरभ नामदेव	33
16.	पर्यावरण निबंध	अभिनव सिंह	34
17.	कर्णधार	सौरभ	35
18.	चौथा स्तंभ डगमगा रहा है	पृथ्वी कुमार	36
19.	लक्ष्य के लिए संघर्षः	अभिनव सिंह	37
20.	पर्यावरण दिवस	पूनम कुमारी	38
21.	मेरा गाँव	वैभव शर्मा	39
22.	परिश्रम	प्रीति	39
23.	देश की पहचान है	सौरभ नामदेव	39
24.	सोशल मीडिया–उपयोगिता और खामियाँ	लवेश कुमार	40
25.	क्या लोकतंत्र की जगह प्राणीतंत्र हो?	अम्बुज मिश्र	41
26.	तब मैं बच्ची थी	मुस्कान	42
27.	मीडियाः लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ?	रवि शर्मा	43
28.	शिक्षा	अक्षय	43
29.	भारतीय चिंतन का विकास और महात्मा गाँधी	डॉ. तरुण	44
30.	आज का भारत	शुभम सिंह	46
31.	नई पीढ़ी	मुकुलित भट्ट 'कान्ता'	47
32.	सोच व सफलता	पवन कुमार	47
33.	सोशल मीडिया	अमर भारती	48
34.	गुरू शिष्य सम्बन्ध	वैभव शर्मा	49
35.	भगवान की मूर्ति	चंचल चंचल	49
36.	आदमी	डॉ. विकास शर्मा	50
37.	नालंदा	डॉ. तरुण	50
38.	शिक्षा के विविध आयाम	पपिल कुमार त्रिपाठी	51
39.	जीवन में कुछ करना है तो	विशाल	51
40	हे भगवान ऐसा क्यों होता है?	अत्तय यादव	52



छात्र संपादकीय



पृथ्वी कुमार

अभिनव सिंह

शिवाजी कॉलेज की वार्षिक पत्रिका 'शिवराज' विगत वर्षों से आप सब के समक्ष प्रस्तुत होती रही है। और इसी क्रम में इस वर्ष (2019—2020) में भी आप सब के समक्ष बड़ें हर्षों—उल्लास के साथ प्रस्तुत है। विद्यार्थियों की चित्तवृत्तियों को मूर्त बनाने और उनकी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए हर वर्ष कॉलेज की यह पत्रिका अपनी पूर्ण गरिमा और मर्यादा के साथ महाविद्यालय में घटित होने वाली स्थितियों व गतिविधियों को सभी के समस्त प्रस्तुत करती है और उन्हें जीवंत मूर्त रूप प्रदान करती है।

पत्रिका में विद्यार्थियों की भावनाओं, लेखों, संवेदनाओं, प्रतिभाओं को कविता, कहानी, निबंध, एकांकी व अन्य विधाओं के रूप में हिंदी, अंग्रेजी व संस्कृत में प्रस्तुत किया गया है।

शिवराज पत्रिका में शिक्षकों एवं छात्र—छात्राओं द्वारा दिए गए लेख या रचनाएँ सम्मिलित हैं और यह पत्रिका पाठकों को प्रेरणा देने में ज्योति सिद्ध होगी।

मंडराती चुनौतियों, किवनाइयों एवं समस्याओं का सामना करते आगे बढ़ती आयी है शिवराज सबकी भावनाओं, विचारों को समेटे, पिरोए आयी है शिवराज। अंत में हम महाविद्यालय की प्राचार्या एंव उप—प्राचार्या सिहत, शिक्षकों, समस्त सम्पादकों एवं कला—सम्पादकों को धन्यवाद करते हैं, जिनका स्नेह, सानिध्य एवं मार्गदर्शन हमेशा हमें प्राप्त होता रहा है।

अभिनव सिंह / पृथ्वी कुमार बी.ए. हिन्दी विशेष (तृतीय वर्ष)

शिष्य का अद्भुत आज्ञा पालन

गुरु–आरूणी खेत का बंधक (मेढ़)
 टूट जाने से खेत का पानी बह जा
 रहा है उसे जाकर रोक दो।

2. जो आज्ञा गुरूदेव मैं तुरन्त जाता हूँ।

3. आरूणी—(दौड़कर खेत में जाता है) अरे ये क्या वर्षा, जल तो खेत में रूक ही नहीं रहा है। मुझ मिट्टी डालनी चाहिए।

4. आरूणी—मैं मिट्टी डालकार थक गया हूँ। लेकिन जल रूक ही नहीं रहा है। एक उपाय है, मैं अगर खुद बंधक बनकर लेट जाऊँ तो जल रुक जायेगा।

5. गुरूमाता—स्वामी क्या आपने आरूणी को देखा। भोजन का समय हो गया अभी तक आया नहीं।

7. गुरू–आरूणी कहाँ हो? आरूणी। आरुणी। आरूणी। 6. गुरू हे ईश्वर मेरे आरूणी की रक्षा करना। मुझे किसी अनहोनी की आशंका हो रही है। इतनी देर हो गई अभी तक लौटा क्यों नहीं?

8. गुरूदेव—हे भगवन क्या हो गया आरूणी को? ये खेत में क्यों पड़ा हुआ है? इसका शरीर ठण्डा पड़ गया हैं जल में भीगकर

9. गुरूमाता — हे राम! आरूणी की ये दशा कैसे हुई। लाइए मैं उपचार करती हूँ।

10. आरूणि गुरूमाता मैं यहाँ कैंसे आया? खेत का जल रुका या नहीं?

11. गुरुदेव या तुम्हारी ये क्या दशा कैसे हुई।

> 12. आरूणि—गुरूदेव मेरे अथक प्रयास के बावजूद जल का बहाव स्थिर नहीं हो रहा था। आपकी आज्ञा पालन के लिए मैं स्वंय इस मेढ़ (बांध) पर लेट गया। उसके बाद मुझे कुछ याद नहीं

13. गुरूदेव तुम धन्य हों गुरू आज्ञा का ऐसा दृश्य अद्वितीय है। आशीर्वाद।

> अम्बुज मिश्र बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष



दिल्ली शहर में प्रेम

आज मैंने जाना कि तुम्हारी आँखों में एक शहर बसता है वरना तो इस शहर में तुम्हारी आँखों को बसाने की चाहत लिए न जाने कितनी बार मूलचंद फ्लाईओवर को क्रॉस किया है मैंने। तुम्हारी साउथ दिल्ली वाली आखें जमुनापार वाली नजरों में कब समाई पता ही नही चला जानती हो जब भी तुम्हारे भीतर की फ्रेंड्स कॉलोनी हँसती है मेरे भीतर का भजनपुरा घबरा जाता है कमबख्त एक ही शहर में हँसी और डर साथ साथ प्यार करना चाहते है। तुम कहती हो तुम डर क्यों जाते हो मेरी हंसी से मैं पूछता हूँ सिग्नेचर ब्रिज बनने से पहले क्या त्मने कभी वज़ीराबाद का पुल पार किया है। तुम फिर हँस देती हो 'धत्त' कह के चल देती हो। में कैसे कहूँ की मेरे भीतर जमुनापार धड़कता है अब भी जिस तरह सर्द जाड़े की सुबह दोपहर को ताकती है ऐसे देखा है तुम्हें गर्म रेत को उंडी चाँदनी रातों का इतजार रहता है जैसे जैसे एक शहर में घनी भीड़ के बीच प्रेमी युगल तलाशते हैं अपने लिए कोई सुरक्षित कोना जैसे सर्द मौसम में धूप का टुकड़ा तलाशता है कोई वृद्धजन ऐसे तलाशा है तुम्हें जमुनापार की सारी दुर्गन्ध को छिपाकर साउथ बनने की कोशिश में कितने सहे हैं अपने लंगोटियां यारों के ताने जहां शरीफ़ दिखना शरीफ़ होने से ज़्यादा खतरनाक हो सकता है वहाँ जहाँ प्यार को गरीबी और मेहनत निगल लेती है मैंने महफूज़ रक्खा है इसे तुम्हारी एक 'धत्त' के इतजार में।

> **डॉ. तरुण** सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

ईश्वर के प्रति समर्पण

हे मालिक, हे ईश्वर, हे भगवान, हे दाता तू है जगत विधाता, हे करूणानिधि हे शीर सिंधु, हे सृष्टि निर्माता देश पर कृपा दृष्टि बनी रहे।

तुझसे कर रहा मैं यही प्रार्थना, तू भर दे प्रकाश कर के कुबुद्धि का सर्वनाश, हे ईश्वर, हे मालिक, हे दाता तू है जगत विधाता।

हे क्षीरसिन्धु, हे दुख हरण, कष्ट निवारन तेरी कृपा सब पर बनी रहे।

भूगोल बदल जाए, प्रतिक्षण इतिहास बुने जाए प्रतिपल, साहित्य का सृजन बना रहे, मानवता का अनुशीलन हो मानव को लक्ष्य का पता रहे। हर बालिका सुन्दर हो, बालक शिवकुमार बना रहे।

लहरे झण्डा गगन तक, माँ की कोख हरी—भरी रहे। अभिनव चाहेगा इस धरती पर मानव का सम्मान बना रहे।

जाति, धर्म, मन्दिर, मस्जिद से नहीं इंसानियत से पहचान बनी रहे, जब तक संस्कृति सभ्यता आचरण रहे इस धरती पर तब तक सूर्य, चन्द्रमा की भॉति चमकता हिन्दुस्तान रहे।

> अभिनव सिंह हिन्दी (विशेष) तृतीय वर्ष





बचपन की यादों में

कुछ भूला—सा हूँ... कुछ भटका—सा हूँ... बचपन की बिसरी यादों में... आज भी अटका सा हूँ... बचपन की यादों से लिपटकर आज हम रोते हैं... अनचाही खुशियों को ओढ़कर अन्दर से रोते हैं... रगों की रवानी के आराम के वो दिन अब ना रहे... अब ना यादें मिटती हैं... ना ही हम खाक होते हैं...।

सुकून मिट सा गया... मैं सिमट—सा गया... अनजाने में एक जीवन पीछे छूट—सा गया... अब दिन की थकावट से हम रात में सोते हैं... बचपन की सुनहरी यादों को एक धागे में पिरोते हैं...।

अमृत को कहीं पीछे जी आए हम, आज बेमन से विष भी पीते हैं खुद के लिए नहीं अब हम औरों के लिए जीते हैं गिल्ली डण्डा, धोकर और मिट्टी के घर अब भूल—सा गया... मंजिल की चाह में, कहीं पिछड़—सा गया।

जो सुकून था कागज की नाँव और मिट्टी के घर में... वो सुकून अब नहीं पैसों के घर में, रात के अंधेरे में कहीं दूर कुछ तकता—सा हूँ... आज भी पुरानी बचपन की यादों में अटका सा हूँ...।

> **रवि शर्मा** बी.ए. प्रोग्राम, तृतीय वर्ष



ख्वाहिशों का कैदी हूँ मैं... मुझे हकीकतें सजा देती हैं...

"अनजान राहों के लिए अनजाना हूँ मैं... एक लो के पीछे परवाना हूँ मैं... जिन्दगी के मकसद से मुलाकात के लिए ना चाहते हुए भी खुद से बेगाना हूँ मैं..."

'खाबों को हकीकत में बदलने निकला था मैं... हकीकतों को ख्वाबों में बदल चुका हूँ मैं... बनावटीपन ने बनावट को ही बिगाड़ दिया... सचेतन में बेखुदी का अहसास दिला दिया...''

''आशंकाओं के पीछे लगकर आकांक्षाओं को पीछे छोड़ आया इबारत के चक्कर में इबादत को ही कहीं भूल आया... आने वाली जिन्दगी को खुशनुमा बनाने के लिए... मदहोशी में कहीं पीछे एक खुशनुमा जिन्दगी छोड़ आया...''

''ख्वाब दिल्लगी और अनजाने रिश्तों से दूर होना चाहता हूँ... खुद के अन्दर मैं मौजूद होना चाहता हूँ... कहते हैं वक्त नूर को बेनूर कर देता है मगर जिन्दगी में खुद के सामने बेकसूर होना चाहता हूँ...।''

> **रवि शर्मा** बी.ए. (प्रोग्राम), तृतीय वर्ष









पर्यावरण की समझ

पर्यावरण आज के संदर्भ मे सभी चर्चाओं, समस्याओं, मृद्दों गतिविधियों, में एक महत्वपूर्ण विषय बनकर उभर रहा है। इसका कारण है कि यह हमारे अस्तित्व और हमारी सम्पूर्ण पृथ्वी से जुड़ा हुआ है। पर्यावरण विषय उभरता हुआ वह विषय है जिस पर पहले इतना ध्यान नही दिया जाता था। इसके उभरने का सबसे बडा कारण यह है कि जब तक हमने इस विषय को समझना शुरू किया तब तक इसका अंत आरंभ हो चुका था। इसी अंत को रोकने के लिए आज पर्यावरण विश्व के प्रत्येक बुद्धिशील व्यक्ति से जुड़ रहा है। हालांकि यह पर्यावरण एक आम आदमी से उतना ही ताल्लुक रखता है जितना कि बुद्धिजीवी वर्ग के व्यक्ति से रखता है। पर्यावरण हमारे जीवन और हमारी आने वाले पीढीयों से भी संबंधित रखता है इस बात की ओर एक आम आदमी की सोच नहीं जाती, इसी अज्ञानता की वजह से वह अपने जीवन अवधि में पर्यावरण का जितना दोहन कर सकता है उससे अधिक करने की लालसा रखते हुए दोहन करता है।

हमारे देश में या फिर पूरे विश्व में पर्यावरण की शिक्षा शायद उस प्रकार से नहीं दी जाती जिस प्रकार रोजगार नैतिक, धार्मिक, व्यवहारिक आदि की शिक्षा दी जाती है। पर्यावरण की अशिक्षा हमें पर्यावरण की क्षति करवाती है। बच्चों को पेड-पौधों जानवरों आदि से सम्बन्धित कविता. कहानी, निबंध आदि पढा तो देते हैं लेकिन उसकी मूल समस्याओं और महत्व को वास्तविकता से नहीं समझाते, उन बच्चों को किताबी ज्ञान से उठाकर प्रकृति की गोद में बिटाकर उनका स्पर्श करवाना अनिवार्य कर देना चाहिए। उन्हें नदियों के उन दृश्यों को दिखाना चााहिए जहां पर अनेक बड़ें-बड़े दुर्गंधित और विषैले नाले आकर मिलते हैं, जिससे वे बच्चे एक बार तो दृश्य की विभिषिका को याद कर जल प्रदूषित करने से पहले सोचेंगे। आज की शिक्षा-नीति पर्यावरण को लेकर जागृत तो हुई है लेकिन उस प्रकार नहीं जैसी होनी चाहिए। पर्यावरण को हमारे अंकों में आंका नहीं जा सकता उन्हें पर्यावरण को व्यावहारिक रूप से समझने की जरूरत है। पर्यावरण का ज्ञान भाषा के सीखने के वक्त से ही आरंभ कर देना चाहिए।

आज के औद्योगिक युग ने शहरीकरण का विकास किया है। इस तरह के विकास ने पर्यावरण को बहुत ही





बुरी तरह से प्रभावित किया है। सीमेंट और कंकरीट की बनी सड़के, फर्श इत्यादि ने वर्षा का जल भूमि तक पहुंचने से रोका है जिससे भौमजल का स्तर नीचे गिर गया। इसके नीचे गिरने से मात्र मनुष्य जाति को की हानि नहीं हुई है। बल्कि वहां की वनस्पतियाँ और उन वनस्पतियों के ऊपर निर्भर वे सभी पशु—पक्षियों कीट—पंतगें भी बुरी तरह से प्रभावित हुए हैं। कुछ तो इस प्रकार प्रभावित हो चुके है जो प्रायः विलुप्त हो गए हैं, या विलुप्त होने के हाशियें पर है।

पर्यावरण को यदि किसी ने सबसे ज्यादा क्षति पहुंचायी है तो वह है प्रदूषण और इस प्रदूषण के पीछे भी मनुष्य जाति है जो अपने आप को विश्व में सबसे अधिक बुद्धिमान प्राणी समझता है। वह ज्ञान—विज्ञान के आविष्कारों के कारण अपने आप को सर्वश्रेष्ठ समझने में कहीं भटक रहा है। पेट्रोल, कोयले के प्रयोग से गाड़ी, मशीन का प्रयोग करना तो सीख लिया, लेकिन जीवन के मूलभूत अत्यंत आवश्यक तत्व जल वायु, भूमि, आदि को बर्बाद कर दिया। क्या फायदा ऐसी प्रगति का जिसमें एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के रक्त की धारा बहा दे वो भी सिर्फ पानी को पाने के लिए। आज भविष्य में यदि तृतीय विश्व युद्ध होगा तो वह सिर्फ और सिर्फ जल संकट के कारण।

अतः यह कहा जा सकता है कि पर्यावरण आज एक ऐसा विषय बन गया है जिसे सिर्फ समझने की आवश्यकता नहीं है उसे आत्मसात् करने की जरूरत है पर्यावरण को हमारे जीवन से जोड़ने का विषय है। लोगों को जागरूक कर उसे समझने और समझाने की जरूरत है। सोशल मीडिया के माध्यम से हम मनोरंजन की जगह पर्यावरण जैसे गंभीर विषयों के ऊपर छोटी—छोटी वीडियो, फिल्म, धारावाहिक आदि के माध्यम से लोगों को पर्यावरण के प्रति सचेत कर सकते हैं। पर्यावरण का संतुलन हम तभी बना सकते हैं जब हम दूसरों को इसके बारे में समझाने की जगह खुद समझे। पर्यावरण किसी एक व्यक्ति से नहीं जुड़ा हैं यह तो सभी सजीवों—निर्जीवों से जुड़ा है इस बात को समझने और समझाने की जरूरत है। पर्यावरण को हर क्षेत्र से जोड़ने की आवश्यकता है।

पृथ्वी कुमार बी.ए. (विशेष) हिंदी, तृतीय वर्ष

जिंदगी का महत्व

अगर जिंदगी में कुछ पाना है तो तरीके बदलो इरादे नहीं। ऊपर वाला महँगी घड़ी सबको दे पर मुश्किल घड़ी किसी को ना दे। अपनी तारीफ खुद करिये। क्योंकि आपकी बुराई करने के लिए तो पूरा जमाना बैठा है। वक्त भी सिखाता है और टीचर भी। पर दोनों में फर्क सिर्फ इतना है कि टीचर सीखा कर इम्तिहान लेता है। और वक्त इम्तिहान लेकर सिखाता है। संघर्ष के बिना कोई तरक्की नहीं होती। कर्मों से ही पहचान होती है, इंसानो की इस दुनिया में। अच्छे कपड़े तो बेजान पुतलों को भी पहनाए जाते है दुकानों में।

विशाल

बी.ए. (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष





समाज में पांव पसारती नकारात्मक सोच

दिन प्रतिदिन उन्नित की ओर अग्रसर समाज में एक तरफ उच्च जीवन शैली आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान सहस्त्र तक सुखदायी द्रव्यों का प्रसार हो रहा है तो दूसरी ओर हमारी निकृष्ट (पर कष्टकारी) नकारात्मक सोच उसके साथ प्रतिस्पर्धा कर रही है। बालक से लेकर वृद्ध तक सभी इसके चपेट में है। मानव की सोचने, विचारने, निर्णय लेने की शक्तियाँ ही उसे अन्य जीवधारियों से पृथक करती है।

मनोवैज्ञानिकों ने सोच को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''किसी व्यक्ति वस्तु घटना के पक्ष या विपक्ष में भावना की अभिव्यक्ति सोच है।'' इसके दो पक्ष हैं सकारात्मक तथा नकारात्मक। जब व्यक्ति किसी निर्णय को करते समय केवल कमियों, बुराईयों को ही देखता है, तब नकारात्मक सोच की उत्पत्ति होती है। नकारात्मक सोच मनुष्य के बिना विचार व चिंतन मनन के, लिए गए निर्णयों का परिणाम है।

विद्याालय के बच्चे के कम अंक पर अभिभावक प्रायः उसकी तुलना अधिक अंक वाले छात्र से कर, उसे समझाने और स्वाध्याय के लिए प्रेरणा देने की बजाय उसका खेल-खूद, जेब खर्च बंद कर देते है। यह वाक्या उस छात्र पर नकारात्मक प्रभाव ही डालेगा। दिनभर केवल हत्या. चोरी. बलात्कर. गंदी राजनीति. झगडा. हडताल आन्दोलन कर सकारात्मकता की हत्या की जाती है। जनगणना 2011 के अनुसार भारत में 22 लाख लोग मानसिक परेशानियों के शिकार है। नकारात्मक विचार आदि गंभीर रोगों की ओर ले जातें है। अध्यात्म, योग, पूजन वंदन भारत के कण कण में व्याप्त हैं जो नकारात्मक सोच विचारों को नाश करने वाले हैं। धार्मिक चिहन हमें सकारात्मकता की ओर प्रेरित करते हैं। ज्ञान उसी प्रकार सकारात्मक सोच को उजागर करता है जैसे सूर्य अपनी किरणों से पूरे जगत को उज्ज्वल करता है। सफलता का सबसे बड़ा लक्षण मनुष्य की सकारात्मक सोच है।

> अम्बुज मिश्र बी.ए. (प्रोग्राम) तृतीय वर्ष

मानव-प्रकृति संवाद

अब चैत पूस में आता, फागुन आता सावन में लुप्त हुए पेड़ पशु हैं बने महल अब कानन में हम अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु भूले बैठे प्रकृति को चुन—चुन कर नष्ट किया, ईश्वर की प्रतिकृति को आनन्द नहीं किसी मौसम का, वह मनमानी करता है जाकर अपने आर्य से पूछो उनसे गहरा नाता था कमी नहीं किसी चीज की थी. शाति मुझसे ही पाता था अब तुमको सर्वसुख चाहिए तो जो चाहे मुझसे ले लो किन्तु मेरे प्यारे मानव, बाढ़, सूखा, भूकम्प भी झेलो भूल हुई क्षमा करो, तुमसे ही अस्तित्व हमारा उपाय बताओ कोई, लौटा सकूं सर्वस्व तुम्हारा तो सुनो, ना चीरो मेरी छाती, ना बांधों मेरी धारा हर त्योहार पर एक वृक्ष लगाओ खुशहाल होगा जग सारा।

दीपेश कुमार एम.ए. (हिन्दी) द्वितीय वर्ष





मानव या मानवता के विक्रेता

"मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है लेकिन वह सामाजिक जंजीरो में जकड़ लिया जाता है।" रुसो ने मनुष्य के लिए यह बात उसकी परंपराओं, रीतियों एवं आडंबरो को ध्यान में रखकर कही। परन्तु प्राचीन काल से ही एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को निर्जीव मानकर उसकी तस्करी, खरीद—फरोख्त करता आ रहा है। यूरोप में गोरे लोगों ने काले लोगों को दास बनाकर, उन्हें असभ्य, आदिवासी बताकर पूरे विश्व पर राज किया।

आतंकवाद, नशीली दवाओं के कारोबार के बाद मानव तस्करी विश्व का तीसरा सबसे बड़ा संगठित अपराध माना जाता है। संयुक्त राष्ट्र की परिभाषा के अनुसार ''किसी व्यक्ति को डराकर, बल प्रयोग कर या दोषपूर्ण तरीके से भर्ती करने एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने या शरण में रखने की गतिविधि मानव तस्करी की श्रेणी में आते हैं।'' वर्तमान समय में दास प्रथा के चलन का तरीका बदल गया है। दुनिया भर में 80 प्रतिशत से ज्यादा तस्करी यौन शोषण तथा बंधुआ मजदूरी के लिए की जाती है।

'अमेरिकी विदेश विभाग' प्रतिवर्ष मानव तस्करी से जुड़ी अपनी रिपोर्ट जारी करता है। इस वर्ष के पूर्व 2017 में चीन, रुस, ईरान, सीरिया जैसे देशों को सबसे संवेदनशील माना गया। इन देशों को टियर—3 में रखा तथा भारत को टियर 2 में रखा। विश्व के विकसित देशों के आंकड़े तथा मानव तस्करी के मामले में स्थिति संतोषजनक नहीं है।

जहां बालक में ईश्वर के दर्शन किए जाते है। 'यंत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तब देवता' (अर्थात् जहां स्त्रियों का सम्मान



होता है वहां देवता निवास करते हैं) जैसी भावनाएं रखने वाले भारतवर्ष को मानव तस्करी का एशियाई गढ़ माना जाता है। ये मानव तस्करी कम होने के बजाय दिन—प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। भारत सरकार के आंकड़ों के अनुसार हमारे देश में हर 8 मिनट में एक बच्चा लापता हो जाता है। यहां केवल एक बच्चा लापता नहीं होता, लापता होता है भारत का भविष्य, लापता होता है एक संसाधन जो आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में भारत को धनवान कर सकता है।

भारत के कई राज्यों में गरीबी, अशिक्षा, अत्यधिक असमान लिगांनुपात, शहरों में कामतृप्ति हेतु बिच्चयों की आवश्यकता मानव तस्करी का मुख्य कारण है। नौकरी देने, विवाह करने जैसे झांसे देकर तथा गरीब मां—बाप से उनकी बेटियों को खरीद कर वेश्यालयों में छोड़ दिया जाता है या बलात्कार किया जाता है। असमान लिंगानुपात वाले क्षेत्रों में एक ही स्त्री परिवार के सभी पुरुषों की वासनाओं का शिकार बनती है।

अगर इन्हीं देश की बेटियों को अवसर मिलता है वो ओलंपिक, एशियन खेलों मे भारत की झोली स्वर्ण पदकों से भर देती हैं, डॉक्टर, अभियंता, राजनीतिज्ञ, शिक्षक, भारतीय सैनिक, अंतरिक्षयात्री, योद्धा कुछ भी बन सकती हैं।

हाल ही मे बिहार और उत्तर प्रदेश के मुद्दे को कौन भूल सकता है जिसमें सिस्टम के लगभग सारे लोगो की भागीदारी थी। भारत की लचीले कानून तथा नेताओं व सिस्टम के अधिकारियों के सहयोग ने इन कार्यों को बढ़ावा देने में मदद की है। भारत के प्रत्येक नागरिक की रक्षा का दायित्व सरकार पर है। भारत सरकार की 1098 चाइल्ड हेल्पलाइन जैसे कार्यक्रमों के द्वारा सरकार ने जन जागरुकता फैलाने की चेष्टा की है। लेकिन कठोर कानून को बनाकर व ईमानदारी से उसके पालन से ही इसे रोका जा सकता है। अगर हमारी सरकारें दुश्मन सेना को भारतीय सीमा में घुसने से, खाद्यान्न की कमी से लोगों को मरने से (हरित क्रांति) रोक सकती है तो ये भी आसान है। इसमें समाज के लोगों का भी कर्तव्य है कि वे जागरुक होकर ऐसे दलदल में फंसे लोगों की मदद करें।

जय हिन्द!

अम्बुज मिश्र बी.ए.(पी) पंचम सत्र



ट्रैफिक सिग्नल

- देखा है मैंने...
 रोज बस में सफर करते हुए
 व्यस्त सड़क के सिग्नल पर
 पेट की आग को सहते हुए
 महज़ चार—पाँच साल के कुछ नन्हे बच्चों को
 जिनका कोई न आगे—पीछे
 शायद अनाथ या फिर किस्मत के मारे बच्चे
 जो कर तो बहुत कुछ सकते हैं
 पर कर नहीं पाते
 बस प्रतीक्षा करते लाल बत्ती की
 सड़क किनारे फुटपाथ पर
- देखा है मैंने...
 बस कुछ मिनटों की लाल बत्ती
 पर उनके लिए हैं खुशी के पल
 जब रूक जाती है सारी गाड़ियाँ
 वह लाल बत्ती जो कभी राहगीर को आराम देती हैं
 तो वहीं शांत करती है इन बच्चों की भूख भी
 छोटे—छोटे हाथ और नन्हें नन्हें कदम
 फुदकते जा पहुँचते गाड़ियों की ओर
 थेथर स्वभाव और चुंबक की भाँति चिपक जाना
- देखा है मैने...
 गाड़ीवालों के सामने छोटे—छोटे हाथ फैलाना
 उम्मीद भरी निगाहें, पैसे रूपी भीख पाने को ललचाती
 कुछ दया कर, तो कुछ पीछा छुड़ाने को
 दो—चार सिक्के हथेली पर रख ही देते
 कुछ को मिलते चंद रूपये
 तो कुछ को मिलता है दुत्कार
 यह सब देख मेरा हृदय कर उठता चित्कार
- लेकिन...
 देखा है मैने...
 एक शख्स और है
 जो अक्सर उस लाल बत्ती पर
 करीब साढे आठ बजे सुबह
 उन बच्चों की मदद करते
 नाम, पता कौन है, कहाँ से है, कुछ पता नहीं
 पर अक्सर उसे उन बच्चों को
 खिलौने, बिस्किट, कपड़े बाँटे पाया है
 कहते हैं जिनका कोई नहीं होता
 उनका खुदा होता है

देखा है मैनें... उस अनजान शख्स को उनका खुदा बनते हुए पर कुछ और बच्चें भी हैं जिन्हें शायद हाथ फैलाना नहीं आता क्योंकि वो प्रतिभा के धनी हैं जो सड़कों पर करतब दिखाकर गुलाब खिलौने, गुब्बारे बेचकर मेहनत की रोटी खाते हैं इसलिए मन के भीतर एक सोच कचोटती है और बस यही सवाल खुद से पूछा करता हूँ कि क्या दोष है इन मासूमों का? जो ऐसा जीवन जीने को विवश है क्या यही इनका भविष्य होगा? क्या यही भारत का भविष्य होगा? फिर ऐसे में खुद को खुशिक्रम्त मानता हूँ इसलिए नहीं कि धन—संपत्ति है बल्कि इसलिए की मेरा जीवन ऐसा नहीं है एक परिवार, दोस्त, गुरु के रूप में ईश्वर ने इतना कुछ दिया जो है।

देखा है मैंने... उन मासूम नन्हें बच्चों के आँसुओं से भरी निगाहों में बेवज़ह खिलखिलाती मुस्कानों में ठंड में सिकुड़ते, फटे—पुराने चिथड़ों में लिपटे कठिन हालातों का सामना करके भी जीवन जीने की हठ लिए जिन्हें अपने भविष्य की चिंता नहीं देश—दुनिया, समाज की कोई खबर नहीं क्योंकि वह आज में जीते हैं कि क्या आज खाना भी नसीब में है या नहीं

• देखा है मैंने...
उन नन्हें नन्हें भीख माँगते हुए हाथों को
उस अधनंगे बदन पर स्पष्ट दिख रही हड्डियों को
उनके मासूम बचपन का गला घोंटते
इस कदर भूख की आग को
जी हाँ... देखा है मैनें...
अपने सफर के दौरान, प्रत्येक लाल बत्ती पर
उन मासूम भीख माँगने वाले बच्चों के
बचपन को दम तोड़ते हुए
देखा है मैनें....

सूरज सिंह बी.ए. (विशेष) हिन्दी, तृतीय वर्ष





रवच्छता

स्वच्छता से अभिप्राय है, तन, मन, बुद्धि, आत्मा एवं पर्यावरण को स्वच्छ रखना। हम अपने घर की सफाई को ही स्वच्छता मानते है परंतु जीवन में स्वच्छता जितनी बाहरी रूप से अनिवार्य है उतनी ही स्वच्छता आंतरिक रूप से भी अनिवार्य है। स्वच्छता क्या है, कैसे हम पूर्ण रूपेण स्वच्छता समाज में ला सकते हैं। अकसर लोग स्वच्छता का अर्थ सिर्फ अपने घर एवं पर्यावरण की स्वच्छता से लेते है। इसे हम इस प्रकार समझ सकते है।

बच्चे को मन, बुद्धि एवं आत्मिक रूप से स्वच्छ बनाकरः समाज में स्वच्छता तभी आ सकती है, जब हम अपनी आने वाली पीढ़ी को चहुँमुखी रूप से स्वच्छ रहने का मार्ग बताये एवं उनके आचरण में उतारे। आजकल समाज में हम सिर्फ बाहरी प्रदूषण पर ध्यान दे रहे हैं। जैसे—पर्यावरण प्रदूषण—जल प्रदूषण, ध्विन प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण इत्यादि। परंतु आज आवश्यक है कि समाज के महत्वपूर्ण ईकाई मानव—मानव पर ध्यान दे। क्योंकि अगर मानव मन, मस्तिष्क, बुद्धि आत्मा से स्वच्छ हो जाता है तो पर्यावरण स्वतः ही स्वच्छ हो जाएगा क्योंकि पर्यावरण को प्रदूषित, गंदा करने के लिए कोई जिम्मेदार है तो वह हे मानव संसाधन हमें मानव संसाधन पर कार्य करना होगा।

शिक्षा में सुधार द्वाराः हमे अपनी शिक्षा में नैतिक मूल्यों को बढ़ाना चाहिए तथा स्वच्छता के विषयों को पाठयक्रम में जोड़ना चाहिए। जिससे समाज स्वच्छ हो सके। समाज अपने पर्यावरण के प्रति जागरुक हो सके। हमे प्राचीन समय की शिक्षा पद्धति पर भी विश्लेषण करना पड़ेगा जिसमें विद्यार्थी को पर्यावरण के खुले आसमान में शिक्षा दी जाती थी। जिससे व्यक्ति पर्यावरण एवं उनके घटको से मनुष्य का आत्मिक लगाव उत्पन्न होता था।

घर्म के वास्तविक अर्थ को समझकरः घर्म का अर्थ होता है धारण करना अर्थात ऐसे आचार, विचार, गुण धारण करना जो व्यक्ति और समाज के लिए महत्वपूर्ण एवं कल्याणकारी हो। धर्म हमे अपनी मन, बुद्धि, आत्मा को स्वच्छ रखने के लिए सद्गुणों को धारण करने का पाठ पढ़ाता है। धर्म हमें आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है तो उसे जड़ एवं चेतन सभी पदार्थों में जीवन एवं गुण दिखाई देते है, जिससे व्यक्ति सजीव एवं निर्जीव वस्तुओं का संरक्षण करता है एवं उसका सदुपयोग करता है। जिससे हमारे पर्यावरण को हानि नहीं पहुचती है और पर्यावरण स्वच्छता एवं निर्मलता अपने वास्तविक रूप में बनी रहती है।

पर्यावरण की अस्वच्छता को दूर करने एवं स्वच्छता लाने के उपायः

लोगों को चहुँ मुखी रूप से शिक्षित करनाः हमे आज लोगों को सिर्फ स्कूली शिक्षा द्वारा शिक्षित करने के बजाय उन्हें पर्यावरण से जोड़कर, उनके मन, आत्मा तथा बुद्धि द्वारा पर्यावरण से आत्मिक लगाव उत्पन्न करके ही हम पूरे विश्व को स्वच्छ बना सकते है।

लोगो को सकारात्मक बनाकरः लोग पर्यावरण को अस्वच्छ इसलिए भी करते हैं, क्योंकि नकारात्मक विचारों के शिकार होते हैं। अतः लोगों को ऐसे विचार समय—समय पर मिलते रहने चाहिए जिससे लोग सकारात्मक सोच बना सके।

आस—पास के वातावरण को एवं माहौल को सुंदर बनाकरः हमें अपने आस—पास का माहौल स्वच्छ बनाना होगा तथा हमें अपने मन, मस्तिष्क एवं आत्मा में ऐसे स्वच्छ विचार भरना होंगे ताकि नकारात्मक व्यक्ति भी हमारे विचार एवं आचरण से प्रभावित होकर स्वच्छ हो सके तथा उसके मन—बुद्धि में स्वच्छता जन्म ले सके।

अच्छे संस्कार द्वाराः हमें अपने समाज के उन संस्कारों को पुनः जीवित करना होगा जो हमारे एवं हमारे पर्यावरण को स्वच्छ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते थे और दे सकते है। जैसे—पर्यावरण से जुड़ने के संस्कार—वृक्षों को पूजा करने के संस्कार, जीव—जन्तुओं एवं पादपों से एकात्मक होने का संस्कार। पर्यावरण में कुछ समय व्यतीत करने के संस्कार आदि।

इस प्रकार हम कह सकते है कि हमें स्वच्छता को लाने के लिए सबसे पहले हर व्यक्ति पर कार्य करना होगा। क्योंकि आज मानव का मस्तिष्क अस्वच्छ हो रहा है।

हमें व्यक्ति के मन, मस्तिष्क को सकारात्मक तथा अच्छे विचार समय—समय पर देकर पर्यावरण को, समाज को, देश को तथा पूरे विश्व को और विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं को भ्रष्टाचार मुक्त कर सकते है तथा सुशासन ला सकते है। इस प्रकार हम अपने देश, समाज, परिवार तथा पूरे विश्व को स्वच्छ बनाने की सेवा कर सकते हैं।

आशीष कुमार जायसवाल बी.ए. हिंदी (विशेष)



अब चुप न रहूँगी।

अब चुप न रहूँगी न तो सहूँगी जो भी हुआ उसको अब तो कहूँगी खुद को समेट कर मैं अब तो लडूँगी

घाँवों पर मरहम न शर्म का लगेगा जो भी हुआ अब वह खुल के रहेगा दुनिया सितम से मैं टूट चुकी हूँ अब और मैं न टूट सकूँगी जो भी हुआ उसको अब तो कहूँगी

ममता का पाठ क्यों बस हमको पढ़ाया क्या प्यार करना किसी और को न सिखाया? क्यों इस प्यार में हम हार जाते हैं घाव भी हमे मिलता है और काम भी हम ही आते हैं सिसकने से अच्छा अब तो कहूँगी अब चुप न रहूँगी

> जुल्म न सहूँगी ना ही चुप रहूँगी झूठी मुस्कान के पीछे दर्द न छुपाऊँगी जो भी हुआ, अब तो बताऊँगी।

इस अँधेरे भरी जिंदगी में अब रोशनी तो चमकेगी तू चाहे या न चाहे अब तो मैं कहूँगी अब चुप न रहूँगी

> शिवांगी रॉय बी.ए. (हिंदी), द्वितीय वर्ष

भारत तुझको नमस्कार है,

भारत तुझसे मेरा नाम है, भारत तू मेरा धाम है, भारत मेरी शोभा शान है, भारत मेरा तीर्थ स्थान है,

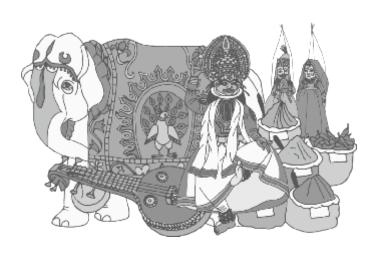
भारत तू मेरा सम्मान है, भारत तू मेरा अभिमान है, भारत तू धर्मो का ताज है, भारत तू सबका समाज है,

भारत तुझमें गीता सार है, भारत तू अमृत की धार है, भारत तू गुरूओं का देश है, भारत तुझमें सुख संदेश है,

भारत जब तक ये जीवन है, भारत तुझको ही अर्पण है, भारत तू मेरा आधार है, भारत मुझको तुझसे प्यार है,

भारत तुझ पर जां निसार है, भारत तुझको नमस्कार है, भारत तुझको नमस्कार है,

> **सौरम नामदेव** बी.ए. (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष







पर्यावरण निबंध

पर्यावरण की परिभाषाः

पर्यावरण किसी स्थान विशेष चर्तुर्दिक आवरण (जल भूमि वायु) से घिरा होता है।

पर्यावरण और मानव जीवन का एक अटूट सम्बन्ध है जिसका शब्दों में वर्णन करना अत्यंत मुश्किल है।

आक्सफोर्ड एडन्साल्ड लर्नस के अनुसारः

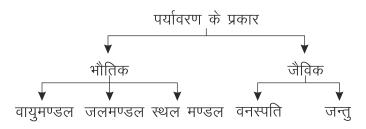
पर्यावरण जीवन की स्थिति, परिस्थिति या प्रभाव है।

मनुष्य और पर्यावरण का सम्बन्धः

मनुष्य और पर्यावरण का सम्बन्ध परस्पर एक दूसरे पर निर्भर करता है। मनुष्य का जीवन पर्यावरण के बिना संभव ही नहीं है, अपितु पर्यावरण के बिन मनुष्य जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है।

खगोलशास्त्रियों के अनुसार ''पर्यावरण का मुख्य मानव है ऐसा इसलिए क्योंकि जीव—जन्तु और पादपों के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं''

सही समय में सही स्थान पर मनुष्यों की स्थिति पर्यावरण पर निर्भर करती है। मनुष्य का वातावरण या परिवेश जैसा होगा उसका आचरण भी वैसा ही होता है। मनुष्य और पर्यावरण या वातावरण का सम्बन्ध निम्न क्षेत्रों में होता है। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, रहन—सहन का क्षेत्र हो ये सब उसके वातावरण पर निर्भर करते हैं। पर्यावरण के भौतिक घटक जैसे भूमि, मृदा आदि और जैविक घटक वायु, जल आदि इन सब के परिवर्तन से मनुष्य का जीवन सम्भव हो पाता था।



पर्यावरण में भौतिक परिवर्तन के साथ—साथ जैविक परिवर्तन भी हो जाता है।

पर्यावरण की गतिशीलताः पर्यावरण की गति शीलता प्रकृति पर निर्भर करती है। जैविक और अजैविक घटकों के कारण पर्यावरण की स्थिति में परिवर्तन होता रहता है। मनुष्य जिस वातावरण में रहता है। उनकी संगति वैसी ही हो जाती है।

''संगत से गुण होता है असंगत से गुण जाय।''

प्राकृतिक संसाधन, प्राकृतिक दशायें और धरातल पर स्थिति मानव जीवन को प्रभावित करती है।

साढ़े 6 सौ करोड़ वर्ष पहले धरातल से गणनीय जीव जन्तु विलुप्त हो गये जिसका अनुमान लगाना ही समझ से परे है।

पर्यावरणीय कानून व नियम :--

हमारे देश के संविधान ने पर्यावरण संबंधी कुछ कानून भी बनाये गये

- 1. जल प्रदूषण सम्बधी कानून
- 2. रीवर बोर्ड अनुच्छेद (1954)
- 3. जल (प्रदूषण निवारण एवं विश्लेषण अधिनियम) 1974
- 4. जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण अधिनियम) 1977
- 5. वायु प्रदूषण सम्बधी कानून, 1948
- 6. पर्योवरण संरक्षण अधिनियम, 1986
- 7. वन संरक्षण अधिनियम, 1980
- 8. राष्ट्रीय पर्यावरण नीति, 2002
- 9. दिल्ली वाहन प्रदूषण अधिनियम, 1994

ये सब कानून मानव जीवन और जीव—जन्तु के जीवन के लिए ही नहीं अपितु पर्यावरण को बचाने के लिए बनाये गये हैं।

मनुष्यों का वातावरण किस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में 8.2 आर्थिक प्रतिदरों के हिसाब से कॉलेजो स्कूलो में सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है। वहीं गरीब व्यक्ति को ऐसा वातावरण न मिलने के कारण वह दयनीय होता जा रहा है।





पर्यावरण प्रदूषण — जहाँ हमें प्रकृति से वरदान मिला है वही किसी न किसी प्रकार से हमे अभिशाप भी मिला है। आज हम जिस वातावरण में साँस लेते है। उसे ही हम लोग लाभ के लिए नष्ट करते जा रहे हैं। जैसे—जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, रेडियोएक्टिव, पालीथीन का प्रयोग आदि। ये सब चिंतन के विषय है। जो हमारे जीवन ही नहीं बल्कि कई पीढ़ियों के जीवन को बर्बाद करती है।

वायु प्रदूषण — आज के भूमण्डलीकरण के दौरान वायुप्रदूषण इतनी तेजी से बढ़ रहा है जिसका संरक्षण करना मुश्किल और हमारे जीवन के लिए घातक हो रहा है। जैसे आटो मोबाइल विषैली गैसों मे छिड़काव इस प्रकार तेजी से बढ़ रहा है जिसमें साँस लेना भी मुश्किल हो रहा है।

जल प्रदूषण — जल प्रदूषण की समस्या अत्यंत गंभीर और चिन्तनीय है। कारखानों के कूड़े कचरे को नदी में फेंकना नालों का पानी सड़को पर भरना, जिससे आदि बिमांरियाँ हैं जो, डेंगू, चिकगुनिया आदि मानव जीवन में प्रवेश कर रही हैं।

मृदा प्रदूषण — मृदा प्रदूषण वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि के कारण पेड़—पौधों की कटाई होने के कारण लगातार मृदा का क्षय होता जा रहा है। जिससे निरन्तर मुश्किलें पैदा होती जा रही है।

औद्योगिक क्रान्ति — औद्योगिक क्रान्ति के कारण पेड़—पौधे जंगलो से काटकर इमारतो कारखानों में अपने लाभ के लिए प्रयोग कर रहे हैं। जिससे कई पीढ़ियों तक स्थितियाँ बिगड़ती है।

पर्यावरण संरक्षण — पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986 के अनुसार पर्यावरण का संरक्षण व्यक्ति का दायित्व होता है। वह अपने निजी लाभ के लिए जरूरतमंद चीजों का ही प्रयोग करे। पर्यावरण का बचाव हमारे लिए अपने जीवन को सुरक्षित करना है। पर्यावरण सम्बधी कुछ समझौते हुए है। जैसे स्काटहोम समझौता 1974 आदि। इतने कानूनों के होते हुए भी पर्यावरण को बचाना मुश्कल है नामुकिन नहीं।

निष्कर्ष — उपरोक्त विवेचन के आधार पर कह सकते है कि पर्यावरण का सम्बन्ध मनुष्य से इस प्रकार हो जैसे आत्मा का शरीर से। बिना आत्मा के शरीर का अस्तित्व नहीं, ठीक उसी प्रकार पर्यावरण के बिना मनुष्य का जीवन नहीं है। पर्यावरण मनुष्य जीवन के लिए वरदान सिद्ध हुआ है।

अभिनव सिंह बी.ए. हिन्दी (विशेष), तृतीय वर्ष

कर्णधार

तुम समाज के कर्णधार हो, धरती का उत्थान करो

तुम्हें तपस्या से मानव को जलता दीप बनाना है तुम्हें नई आवाज़ लगाकर सोया मनुज जगाना है

अंधकार को चीर भूमि पर नया सवेरा ले आओ तुम तूफानों की तरणी को पारकर—तट पर ले जाओ

> तुम समाज के दुखी जनों का अपने सुख से ध्यान करो तुम समाज के कर्णधार हो, धरती का उत्थान करो

जनता हो तुम तोड़ गिरा दो जीर्ण शीर्ण दीवारों को हर पीड़ित की पीड़ा दिखा दो तुम ऊंची मीनारों को।

> तुम्हे ''बुद्ध'' की तरह ''शुद्ध'' मानव का हृदय बनाना है तुमको रोती हुई धरा का सोता भाग्य जगाना है

सीखो जीवन भर तप करना छाती पर गोली खाना तुम ''सुभाष'' की तरह देश का, झंडा ऊंचा फहराना,। तुम समाज के कर्णधार हो, धरती का उत्थान करो!....

> **सौरम** बी.ए. (प्रोग्राम)

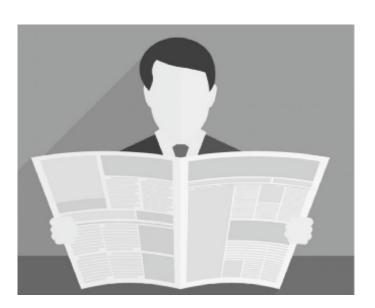




चौथा स्तंभ डगमगा रहा है...

हमारा भारत देश लम्बे संघर्षों के पश्चात लोकतांत्रिक देश के रूप में उभरकर अस्तित्व में आया। यह लोकतंत्र रूपी भवन वर्तमान तक तो चार स्तंभो पर टिका हुआ है लेकिन भविष्य में शायद... इसके कई कारण हैं, जिन्हें प्रमुख रूप से संक्षिप्त में बताया गया है। लोकतांत्रिक व्यवस्था जिन चार स्तंभों पर टिकी है वे हैं – 'न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधानपालिका और मीडिया'। मीडिया को ही चौथा स्तंभ माना जाता है जो बाकि के तीनों स्तंभो में संतुलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिस प्रकार साहित्य को समाज का दर्पण माना गया, उसी प्रकार मीडिया को देश का दर्पण मानने में कोई आपत्ति नहीं होगी। जहाँ साहित्यकार समाज के यथार्थ को कल्पना का मिश्रण कर अपनी कलम के माध्यम से समाज की समस्याओं को उजागर करने का काम करता हैं. वही पत्रकार भी समाज को आईना दिखाने के लिए अपनी जान जोखिम में डालकर कलम के सहारे समाज में हर जातिवाद पूँजीवाद, सांमतवाद और बाजारवाद आदि विचारधाराओं के दृष्टिकोण की भावनाओं को दूर रखकर समाजवादी, उदारवादी आचरण की भावनाओं का समाज में अहम संदेश जनता तक पहुँचाता है।

उसे अपना कर्तव्य समझ अपनी पूरी ईमानदारी से जनता के बीच रह कर पूरा करता है। मीडिया किसानों की, मजदूरों की, महिलाओं की, व्यापारियों की, आदिवासियों की, दलितों की और हर उस कमजोर वर्ग की दबी आवाज को



न्यायपालिका, कार्यपालिका व विधानपालिका के कानों तक पहुँचाती है। इन तीनों को सरल भाषा में सरकार कहते हैं, जितनी भी सरकार अब तक आई है वह थोड़ा कम सुनने वाली ही आई है। इन असहायों, बेसहारों, दिव्यांगो और लाचारों की दर्द से कराहती आवाज को सरकार तक पहुँचाने का माध्यम पत्रकार बनता है। लेकिन आज कितनी बड़ी विडम्बना बन गई है कि, वर्तमान में पत्रकारों की ही आवाज को कई सारी बुरी ताकतें दबा रही है।

आवाज दबने के कारण मीडिया अपने ही उद्देश्य से भटकती जा रही है। वे सच को दिखाने की कोशिश तो कर रही है, परंतु स्वार्थी राजनेताओं और छल-प्रपंची व्यवसायिकों मीडिया को सच प्रस्तुत करने से गुमराह कर देते है। कुछ के 'ईमान' को खरीदकर तो कुछ को 'खौफ' दिखाकर, पत्रकार को कर्तव्य विमुख कर देते है। पत्रकार तो 'दूसरों का भला' करने के चक्कर में अपनी ही जान से हाथ धो बैठते है। 'गौरी लंकेश', 'खागोशी' जैसे पत्रकार इसके जीवंत उदाहरण है। पत्रकारों को हमारी फिक्र बहुत होती है, लेकिन 'हम' पत्रकारों को बदले में क्या देते है? भीड-भाड में उनकी मौत का तमाश देखते है। हम उन बेईमान पत्रकारों की खबर पढते है या देखते है जो व्यावसायिक दृष्टि से असली सच को पर्दे से ढ़क कर झुठा सच प्रस्तुत करते है। जैसे हाल ही में 'चोटीकटवा' खबर सनसनी की तरह हर तरफ फैली हुई अफवाह वाली खबर थी। आज के दौर में सच्ची खबर दिखाने वालों की संख्या न के बराबर है। जहाँ देखों क्रिकेट, सास–बह सीरियल, कॉमेडी शो, ज्योतिषी, फैशन, फिल्म, राजनीति के छोटे-छोटे मुद्दो के मसाला-मिर्च लगाकर चटपटे ढंग से प्रस्तुत कर आम जनता को सच से कोसों दूर कर रही है। 'टी. आर.पी.' की भूख मीडिया क्षेत्र में दिनो-दिन बढ़ती जा रही है। आज कई सारी पत्र-पत्रिकाएँ और न्यूज़ चैनल के आने से इनके बीच प्रतियोगिता बढ गई है। बिना विज्ञापन के तो जैसे इनकी रोजी-रोटी ही न चले। पूँजीवाद के प्रभाव से सच का वजूद मिटता जा रहा है, क्योंकि सच लिखने वालों को प्रशासन सुरक्षा प्रदान करने में हर बार असमर्थ रहती हैं। कलयुग में सत्य के मार्ग पर चलना कोई सरल कार्य नहीं रह गया है।



हमारे देश की रीढ़ कहे जाने वाले किसान की स्थितियों से सभी परिचित है। आये दिन इनकी आत्महत्या की खबर देश के कोने—कोने से आती रहती है। हम इसे पढ़ते है और फिर अपने—अपने काम में लग जाते है। नशा रूपी दानव हमारे युवाओं को निगलता जा रहा है, फिर भी यह वैध और अवैध तरीके से बिक रहे है। जल, वायु, मृदा, ध्विन प्रदूषण मजबूत होते जा रहा है व पर्यावरण को कमजोर कर रहे है। शिक्षा, संस्कृति, भाषा, खान—पान, आदि विषय रोगी की भाँति क्षीण होते जा रहे हैं। न जाने ऐसी कितनी और भी समस्याएँ है जिसे समाप्त करने के लिए ईमानदार पत्रकार चक्रव्यूह में प्रवेश तो कर जाता है, किंतु अभिमन्यु की भाँति निकल ही नहीं पाता।

मीत का जोखिम कौन उठाना चाहता है? उठाएँ भी तो किसके लिए? उसके लिए जिसके पास पत्रकारों के प्रति कोई सहानुभृति नहीं है। सच्चे पत्रकारों की दयनीय स्थिति के लिए प्रशासन जिम्मेदार नहीं है। अगर कोई जिम्मेदार है तो वह सिर्फ हम जैसी आम जनता। वही आम जनता जिसके कभी एक साथ मिलकर 'सत्याग्रह' आंदोलन चलाकर गुलामी की जंजीर को उखाड फेंका था। तो क्या एक बार फिर से सत्य को मिटने से बचाने के लिए. सत्य को उजागर करने वालों को बचाने के लिए, एक साथ आग्रह नहीं कर सकते? क्योंकि चौथा स्तंभ डगमगा रहा है। इतना ही न सही तो क्या हम झूट का पर्दा हटाकर सच जानने की कोशिश तक नहीं कर सकते। इंटरनेट ने तो मीडिया को और भी तीव्र गति से संचार करने की शक्ति प्रदान की है। हमारा दायित्व बनता है कि चौथे स्तंभ को डगमगाने से बचाने के लिए हम एकजुट हो। नहीं तो अगर ये स्तंभ धराशाही हो गया तो बाकी तीनों स्तंभो को संतुलित करना और भी अधिक मुश्किल हो जाएगा।

अगर हम सच को देखना आरंभ कर देंगे तो मीडिया भी सच दिखाने के लिए मजबूर हो जाएगी जो अब तक समूची मीडिया की छिव खराब कर रही थी। एक मछली गंदी होने पर पूरे तालाब को गंदा कर देती है, यही अवधारणा लोगों की बन चुकी है। सच देखने पर सच ही लाएँगे तब सच की एक दिन जीत होगी। भारतीय शास्त्रों—उपनिषदों में भी एक सूक्त मिलता है — 'सत्यमेव जयते'

पृथ्वी कुमार बी.ए. (विशेष) तृतीय वर्ष

लक्ष्य के लिए संघर्ष:

सब चल रहे, तू बैठा रह
किरमत को लेकर रोता रह।
समुन्द्र की लहरे उठती रहे
उसकी छींटें तुझ पर पड़ती रहे।
सब चल रहे तू बैठा रह
किरमत को लेकर रोता रह।

कामयाबियाँ तेरे चरणों में तू किसी और के भरोसे बैठा रह। वक्त को दोषी देता रह सब चल रहे तू बैठा रह किस्मत को लेकर रोता रह।

कांटो पर तू चल आया पगडंडी पर चलने को रोता है। वक्त को दोष देता रह किरमत को लेकर रोता रह।

> माना हर मोड़ पर समस्या आई है लेकिन तुझमे क्या लाचारी है जो तू सामना नहीं कर पाया है। सब चल रहे तू बैठा रह किस्मत को लेकर रोता रह।

मैं बार—बार हार रहा, लेकिन मन मे जीत ठानी है न उठ तू यूँ जो बैठा रह, तूने मन हार मानी है, सब सोच रहे लक्ष्य जाने को, तू बैठा लक्ष्य गवाने को तू वक्त को दोषी देता रह, किस्मत को लेकर रोता रह।

> सब कर रहे प्रयास तू हदय थामे बैठा रह, वक्त को दोष देता रह सब चल रहे तू बैठा रह किस्मत को लेकर रोता रह

> > **अभिनव सिंह** बी.ए. हिन्दी (विशेष) तृतीय वर्ष



पर्यावरण दिवस

मनुष्य का अपने पर्यावरण से बहुत गहरा रिश्ता है। क्योंकि जिन मूलभूत सुविधाओं की मनुष्य को आवश्यकता होती है, जैसे वायु के रूप में ऑक्सीजन, भोजन के रूप में अनाज व खाद्यान्न तथा इसी प्रकार के अन्य बहुत से वरदान माने जाते है ये सब तत्व पर्यावरण से ही प्राप्य हैं। क्योंकि मनुष्य का शरीर ही पांच तत्वों से मिलकर बनता है—आकाश, जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि। पर्यावरण से मनुष्यों को बहुत कुछ प्राप्त होता है। सूरज से रोशनी व हवा से नया जीवन। पर क्या वास्तव में मनुष्य अपने पर्यावरण के प्रति सजग है? क्या वह बदले में अपने पर्यावरण को कुछ दे पा रहा है?

भारत जैसे विकासशील देश पर्यावरण की समस्या से जूझ रहे हैं। या कहे कि केवल भारत ही नहीं दुनिया के अन्य विकसित देश— अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, चीन इत्यादि जैसे देशों को भी इस समस्या का सामना करना पड़ रहा है। क्योंकि मनुष्यों ने अपने पर्यावरण के प्रति कर्तव्यों का निर्वहन नहीं किया। जिसका परिणाम मनुष्यों को ही भोगना पड़ेगा। 2013 की



उतराखण्ड (टिहरी) बाढ़ त्रासदी से हम सब भली भाँति परिचित है। यह उदाहरण प्रदर्शित करता है कि यदि मानव प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करता है तो वह अपनी तबाही देखेगा। अन्य और भी बहुत से उदाहरण है जो पर्यावरण की दयनीय दशा के सूचक हैं जैसे — जल संकट, सुनामी,भूंकप, सूखा, बाढ़ इत्यादि।

आज हम उन चिड़ियों, पक्षियों, पशुओं का नाम तक नहीं जानते जिन्हें हमारे दादा—दादी ने प्रत्यक्ष रूप से देखा था।

प्राचीन काल में अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए लोगों द्वारा पेड़ों को देवी—देवताओं की उपाधि देकर उनकी पूजा—अर्चना की जाती थी, परन्तु आज का समाज वैसा नहीं है इसलिए पेड़ों की कटाई पर एक कानून पारित करना पड़ रहा है। अतः इसी दिशा की ओर चिपको आंदोलन से मनुष्य सीख ले सकता है कि पर्यावरण हम सभी के लिए कितना महत्वपूर्ण है। भारत में आज भी गंगा नदी को गंगा मैया कहा जाता है।

पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए कई अधिनियम भी बनाए गए हैं और कई संस्थाएं भी हैं। परन्तु केवल कानून बनाने व पास करने से ही काम नहीं चलेगा उनको व्यावहारिकता में लाना होगा।

अतः आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति पर्यावरण रक्षा को अपना मूलभूत व मौलिक कर्तव्य समझे। प्रत्येक व्यक्ति अपने जन्मदिन पर ही सही पर एक पौधा अवश्य लगाए। स्वच्छता का ध्यान अवश्य रखें। क्योंकि पर्यावरण एक वरदान जरूर है परन्तु उसे अभिशाप बनते देर नहीं लगेगी। कागजों, पेंसिलों, इमारतों, लकड़ियों इन सभी का अल्प उपयोग हो सकता है। कहा जाता है कि किसी भी नई चीज़ की शुरूआत स्वयं से होती है। इसलिए स्वयं से शुरूआत करनी होगी और दूसरों से भी करवानी होगी क्योंकि पर्यावरण हमारी संपदा है और स्वस्थ संपदा का अधिकार भावी पीढ़ी को भी है। इसलिए हर वर्ष 5 जून के दिन पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है।

पूनम कुमारी हिन्दी(ऑनर्स) तृतीय वर्ष



मेरा गाँव

उस शहरी जीवन के कोलाहल से दूर भीषण दमघोंटू वातावरण से मीलों दूर तपती मशीनों और उगलते धुँए से दूर, जहाँ कहीं छाँव है शांति प्रेम का दुलारा मेरा प्यारा, वहीं मेरा गाँव है कूदरत का हर रंग यहाँ नजर आता है नए कलख करता पक्षी रोज यहाँ इठलाता है जहाँ बढ़ाते बड़े-बुज़ुर्ग, सौहार्द बरगद की छाँव में पढ़ते-लिखते मौज उड़ाते, बच्चे मेरे गाँव में.... शोरगुल से हीं दूर जहाँ शांति सत्य और ध्यान है स्वर्ग से सुन्दर संपनों से प्यारा वहीं मेरा गाँव है। लहलहाती फसलों की हवा जहाँ बदन को छू जाती है जहाँ प्रेम सौन्दर्य की महक साँसों मे उतर जाती है जीवन एक सुकून पाए जहाँ शीतल छाँव में, सुख-दुख में सब मिलकर रहे वहीं मेरे गाँव में जहाँ संग भिक्त का राग और श्रद्धा की अजान है राग, द्वैष, छल-कपट से दूर वहीं मेरा गांव है।

> **वैभव शर्मा** बी.ए. (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष



परिश्रम

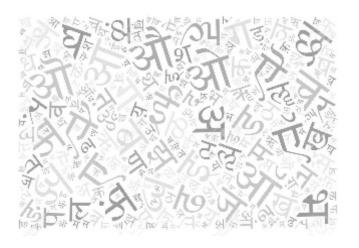
केवल मन के चाहे से ही
मनचाही होती नहीं किसी की
बिना चले कब कहाँ हुई है
मंजिल पूरी यहां किसी की
पर्वत की चोटी छूने को
पर्वत पर चढ़ना पड़ता है,
सागर से मोती लाने को,
गोता खाना ही पड़ता है।
उद्यम किए बिना न सिंह को
भी अपना शिकार मिल पाता
इच्छा पूरी होती तब जब
उसके साथ जुड़ा हो उद्यम
प्राप्त सफलता करने का है
मूल मंत्र उद्योग परिश्रम।

प्रीति द्वितीय वर्ष

देश की पहचान है

वो देश क्या जिसकी, कोई जुबान नहीं है, सर तो हुआ है, स्वाभिमान नहीं है भाषा तो आप चाहे जो भी, बोल ले लेकिन हिन्दी के बिना देश की पहचान नहीं है। भाषा को धड़कनों में जिए जा रहा हूँ हर शब्द को अमृत सा, पिए जा रहा हूँ अंग्रेजी जानता हूँ मगर, गर्व है मुझे हिन्दी में काम काज, किए जा रहा हूँ सागर से मिल के भी, नदी प्यासी बनी रही हँसने के बाद भी तो. उदासी बनी रही अंग्रेजी को लोगों ने, पटरानी बना दिया हिन्दी हमारे देश में, दासी बनी रही सोच लिया है भारत मां की, बिन्दी को अपनाएगें तमिल, तेलगू, उर्दू, उड़िया, सिन्धी को अपनाएगें अपने देश की सब भाषा, हमको जान से प्यारी है, लेकिन सबसे पहले मिलकर हिन्दी को अपनाएगें गर्व देश का और स्वाभिमान है गौरव है उत्साह का, है वतन हिन्दुस्तां हमारा भारत देश का गहना है ''हिन्दी'' और मोती जैसी बोली पहचान है देश कि ''हिन्दी'' भाषा और इसकी हर एक बोली

> **सौरम नामदेव** बी.ए. (प्रोग्राम)





सोशल मीडिया: उपयोगिता और खामियाँ

अर्थ / परिभाषाः सोशल, मीडिया क्या है? जैसा कि हम सभी जानते हैं, सोशल मीडिया आज के समय में एक ऐसा माध्यम बन चुका है जिसके जिए हरेक व्यक्ति अपनी भावनाओं, विचारों आदि का आदान—प्रदान कर रहे हैं। या हम कह लें कि सोशल मीडिया एक ऐसा मंच है। जिसके जिरए हरेक व्यक्ति पत्रकार बनना चाहता है अर्थात् अपने निजी स्तर पर अपनी बौद्धिक क्षमता का प्रयोग करते हुए वह समाज में चल रही समस्याओं पर अपनी राय देना चाहता है।

सोशल मीडिया की उपयोगिताः आज के इस आधुनिक दौर में हरेक व्यक्ति सोशल मीडिया से किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ है। सोशल मीडिया आधुनिक संचार, माध्यमों के अलावा ज्यादा कुछ नहीं है। हम यह देख सकते हैं कि सोशल मीडिया के बगैर हम समाज के भीतर चल रही उन ज्वलंत समस्याओं पर विचार-विमर्श या उनका पूर्णरूपेण विश्लेषण नहीं कर सकते जो कि हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है। अगर व्यक्ति सोशल मीडिया से नहीं जुड़ा है। तो कहीं न कहीं वह अपने ही समाज से कटाव महसूस करने लगता है। इसकी उपयोगिता का अंदाजा हम इस बात से लगा सकते है कि इसका प्रयोग व्यक्तियों के द्वारा मी टू के रूप में सोशल मीडिया पर हो रहा है। वे स्त्रियाँ जिन्होंने काफी अन्याय सहा है और जो सह रही है उनके द्वारा भी इसका प्रयोग किया जा रहा है। सोशल मीडिया इस प्रकार की स्त्रियों को न्याय दिलवाने में एक अहम भूमिका अदा कर रहा है। गौर कीजिए अगर सोशल मीडिया न हो तो हमारी दैनिक कार्यो पर क्या प्रभाव पडेगा और हमारी जिंदगी कैसी हो जाएगी। आज हम इसके साथ इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि हमारा मस्तिष्क भी सोचता है कि देश-विदेश में क्या चल रहा है।

सोशल मीडिया हमारे लिए ज्ञानवर्धक है इसमें कोई दो राय नहीं है। हम इससे ज्ञान की चीजें भी सीखते हैं जो कि हमारे जीवन से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई होती हैं। ज्ञान के साथ यह हमारे मस्तिष्क को खोलता है और हमें बाहरी दुनिया से रूबरू कराता है। आज के हमारे माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी ट्वीट् जैसे साधनों का इस्तेमाल करते हैं और रेडियो पर अपने मन की बात करते हैं। यह सब क्या है? इसकी उपयोगिता ही तो है। हमें सोशल मीडिया देश—विदेश की खबरों से और उनके द्वारा बनाई जा रही रणनीतियों से परिचित करवाता है। इस प्रकार सोशल मीडिया हमारे लिए बहुत उपयोगी है।

सोशल मीडिया की खामियाँ: हम सभी जानते हैं कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं अर्थात् हरेक चीज में जहाँ सकारात्मकता होती है वहाँ नकारात्मकता भी पाई जाती है। सोशल मीडिया देश या समाज में बढ़ रहे अपराधों का भी कारण है। कई बार कुछ नेता सोशल मीडिया पर ऐसा भड़काऊ वक्तव्य देते हैं जिससे समाज के विभिन्न वर्गों में दंगे भड़क उठते हैं। इससे लड़ाइयाँ व खून-खराबा होता है और हमारे देश की सरकारी संपत्ति का नुकसान होता है। सोशल मीडिया अश्लीलता को भी बढावा देता है। कई बार सोशल मीडिया पर ऐसे अश्लील विज्ञापन आते हैं जिससे युवा पोर्नाग्राफिक्स वीडियो देखने को उत्तेजित हो जाता है और इससे वह अपने मार्ग से भटक जाता है और समाज में हो रहे दुष्कर्मों को बढ़ाता है इस प्रकार से हमारी युवा शक्ति खोखली पड जाती है और देश विकास नहीं कर पाता है। कई बार सोशल मीडिया से आपकी व्यक्तिगत जानकारी भी चूरा ली जाती है और उसका गलत कामों में इस्तेमाल किया जाता है इसलिए ज्यादातर व्यक्ति सोशल मीडिया का प्रयोग करने से डरने लगते हैं। कई बार सोशल मीडिया पर ऐसे खतरनाक एप्स मौजूद होते हैं जो युवाओं के मस्तिष्क को धोने का प्रयास करते है और उन्हें बुरे कामों को करने के लिए प्रेरित करते हैं। ऐसे युवा बाद में अपने मूल देश के ही दुश्मन बन बैठते हैं। इससे न तो युवा को कोई फायदा होता न ही देश को। इसके कारण युवा जो ऐसे कामों में फँस चुके हैं, अपने घर-बार से हाथ-बाहर बैठते हैं इस प्रकार सोशल मीडिया अपराधों को भी पनाह देता है।

निष्कर्षः हमें पता है कि सोशल मीडिया हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है। जहाँ सोशल मीडिया आपको एक मंच देता है अपनी बातों को कहने का वहीं यह अपराधों का कारण भी बनता है। इसलिए हमें सभी को सोशल मीडिया का बड़ी सतर्कता के साथ प्रयोग करना चाहिए। हमें इसके नकारात्मक पक्ष को नकारना नहीं चाहिए और इससे सावधानी बरतनी चाहिए। वहीं पर हमे सोशल मीडिया का प्रयोग अनुकूल उद्देश्यों के लिए करना चाहिए। जो कि समाज व हमारी दृष्टि से उचित हो। अतः सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग है।

लवेश कुमार बी.ए. (प्रोग्राम), प्रथम वर्ष



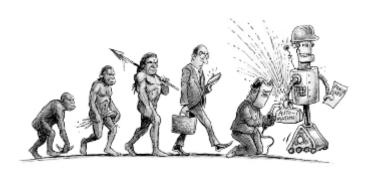
क्या लोकतंत्र की जगह प्राणीतंत्र हो?

पृथ्वी एक अनोखा ग्रह है जिस पर जल व जीवन दोनों पाये जाते हैं। यहां सूक्ष्म जीव कवक, फंजाई से लेकर हाथी व ब्लू हवेल जैसे जीव पाये जाते हैं। इस पृथ्वी पर सभी प्राणियों का उतना ही हक है जितना की मनुष्य का, लेकिन मनुष्य संसाधन की विचारधारा लाकर पृथ्वी के भौतिक व जैविक पारिस्थितिकी तंत्र का शासक बन बैठा है। इसके इस अतिदोहन की नीति से अन्य प्राणी प्रभावित होते हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जानवरों के घर मनुष्य ने छीन लिए और उन्हें 'अवारा' बना दिया। भारत में अवारा जानवरों की जनसंख्या वृद्धि आर्थिक व तकनीक वृद्धि से भी तीव्र है केवल आवारा कुत्तों की जनसंख्या 30 मिलियन है। गायें, सूअर, बिल्ली, नीलगाय, सियार, बंदर, हिरन आदि जानवर प्रायः भारत के ग्रामीण या शहरी क्षेत्र में देखे जा सकते है। कभी—कभी शेर, तेंदुआ, भालू, जंगली हाथी के देखे जाने की खबरें अखबारों की सुर्खिया बनती हैं।

गलियों का शेर कहा जाने वाला वफादार जानवर दिन—रात अपरिचितों से गली की रक्षा के लिए गश्त लगाता रहता है। भारत में मनुष्यों की जिस प्रकार उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग का स्तर है उसी प्रकार जानवरों (कुत्तों) का भी है। प्रथम स्तर के पालतू कुत्ते हैं जो मालिक के परिवार के सदस्य होते हैं दूसरे वर्ग के कुत्तों को केवल खाना मिलता है रहने की व्यवस्था नहीं होती निम्न वर्ग के कुत्ते आवारा होते हैं जिनके पास न तो खाने का ठिकाना होता है न ही रहने का। ये मनुष्य के लिए खतरनाक होते हैं इनकी जनसंख्या बढ़ने के भी कुछ प्रमुख कारण है। आवारा कुत्तों की आने वाली पीढ़ी भी आवारा (प्रायः) होती है।

ये भोजन की तलाश में भटका करते हैं कूडेदानों में, भंडारों के जूठे पत्तलों में, जानवरों के गोबर में, नालों मे, सब्जी मंडियों में, मांस के दुकानों के पास ये प्रायः भटकते हैं। ये आवारा पशु



हमारे परिस्थितिक तंत्र के लिए बहुत आवश्यक हैं। ये भोजन चक्र को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। लावारिस व मृत जीवों को खाकर ये पर्यावरण की रक्षा भी करते हैं।

वर्तमान समय में ये मानव के लिए मुसीबतों का पहाड़ खड़ा करने लगे हैं। प्रत्येक घंटे कुत्तों के काटने के 9 मामले केवल दिल्ली में ही दर्ज किए जाते हैं। इनसे रैबीज, हीटस्ट्रोक, हर्टवार्म, डाग फ्लू, मैगट्स आदि बीमारियाँ हैं जो फैलती हैं। यदि कुत्ते के काटने से किसी की मृत्यु हो तो म्युनिसपालिटी 3 लाख, यदि विकलांग हो जाए तो 1 लाख मुआवजा देती है। इसी प्रकार गाय जिसे 'गो-माता' सुरभि, आदि नामों से जानते हैं लेकिन औद्योगिकरण के बाद इनके बछड़े आवारा हो गए हैं। शहरों में तो ये भी आवारा घुमती है। निष्ठुर, निर्दयी, व्यक्ति इनका दूध निकालने के लिए सुबह-शाम ले जाते हैं और दूध निकालकर खुला छोड़ देते हैं। जो यातायात में व्यवधान खड़ा करती हैं। कूड़ा, पॉलीथीन खाने से इनका दूध जहरीला हो जाता है जो अमृत बजाय विष का कार्य करता है। प्रायः ये यातायात दुर्घटना का भी कारण बनते हैं। बुचडखानों पर पाबंदी से गावों में किसान अब मनचाहा फसल भी नहीं उगा पाते हैं क्योंकि इसकी इतनी बड़ी जनसंख्या उनके फसलों को समाप्त कर देती है।

भारत के विभिन्न नगर निगमों की जिम्मेदारी होती है कि वे इन आवारा जानवरों पर काबू पाने में समर्थ हों। बंदरो, गीदड़ो जैसे जानवरों के घर वन थे परन्तु वनोन्मूलन ने उनसे उनके घर छीन लिए। शहरों की बढ़ती आबादी में मनुष्य के रहने की जगह नहीं तो जानवरों के 'सेल्टर होम' की क्या कल्पना की जाये। मनुष्य द्वारा पारिस्थितिक तंत्र बिगड़ने का भी यह नतीजा है। सामाजिक व धार्मिक नीतियां इनकी जनसंख्या बढ़ने के कारण हैं।

हमें इन जानवरों के प्रति दयावान होने की आवश्यकता है। अगर एक परिवार एक आवारा जानवर को अपना ले तो इनकी संख्या कम हो सकती है ये शहरों में बहुत मुश्किल है। अगर जानवरों में नसबंदी जैसा कार्यक्रम कर सके तो कारगर उपाय हो सकता है। हमें राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम बनाने होंगे जो जमीन तक पहुंचे। मानव अस्तित्व के लिए जानवरों का अस्तित्व भी महत्वपूर्ण है।

जय हिन्द!

अम्बुज मिश्र बी.ए.(पास) तृतीय वर्ष



तब मैं बच्ची थी

खुश हो जाती थी एक छोटी सी टॉफी मिलने पर तब मैं बच्ची थी नदियों में ही संसार बना जाती थी पापा मम्मी और नानी की तब मैं बच्ची थी। दिन खिलौनों से खेलने में गुजार आती थी, नाता गहरा था उन गुड़ियों से तब मैं बच्ची थी वो एक कहानी से ही गहरी नींद सो जाती थी, पापा के पेट पर सर रख कर तब मैं बच्ची थी। डर लगता था जब भूत का छप जाती थी माँ की गोद में तब मैं बच्ची थी। आगे तो तभी बढती थी, गिरती भी थी तो, खुद संभल भी जाती थी कभी हार भी जाती थी. तो क्या फिर जीत के भी दिखाती थी कितनी अनभिज्ञ थी मैं उस चिंता के बवंडर से



तब मैं बच्ची थी। फिर आज क्या हुआ? क्या हुआ ये जमाना इतना अंजान क्यों हुआ, क्या हुआ वो टॉफी की खुशी आज जहाँ भर में ढूँढ नहीं पाती क्या हुआ जो नाता खिलौनों से टूटना नहीं था, आज आपस में लोग नहीं निभा पा रहे क्या हुआ जो आज दिन भर की थकावट और मुलायम गद्दे भी, सुला नहीं पाते, क्या हुआ गोदियों में नच जाता संसार आज कुछ बड़ा हो गया... जो नाप नहीं पाते अब मैं बड़ी हो गई हूँ। जो देख रही हूँ... उससे पहचानने लगी हूँ। सूरत के पीछे काम कर रहे, सीरत से मिलने लगी हूँ। आज मम्मी की गोद में छिपकर डर जाती नहीं. आज डर का सामना करना सीखने लगी हूँ। अब बचपन नहीं रहा, अब मैं बड़ी हो गई हूँ। ख्याल आता है एक बार काश तो बचपन ही रहता एक बार आसूँ बहाए और फकीर हसीं आ जाती थी वो नकली भृत का डर तो लगता पर असली से बच जाती दिल टूटता भी तो क्या फिर एक चॉकलेट से जुड़ भी जाता। लेकिन फिर जिंदगी का ख्याल आता है. सिर्फ बचपन की खिलखिलाहट तो जिंदगी नहीं. हर आयाम को पार करना ही जिंदगी है। इम्तहानों और कसौटियों से भरी है, तो क्या हर रात के बाद सुबह की नई किरण, यही तो जिंदगी है।।

> **मुस्कान** बी.ए. (प्रोग्राम) द्वितीय वर्ष



मीडिया: लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ?

मीडिया बेशक लोकतंत्र का एक सशक्त स्तम्भ है। जनमत की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, एक क्रांति है तथा जनचेतना का वाहक हैं। जनविश्वासी भी है लेकिन लेख के शीर्षक में जो प्रश्नवाचक चिन्ह है, वो गम्भीर है तथा एक सवाल है। सवाल है वर्तमान में इसकी भूमिका तथा मूल से दूर जाती इसकी प्रवृत्ति से। एक उदाहरण के माध्यम से इस बात को और ज्यादा सजीवता से स्पष्ट किया जा सकता है। एक राष्ट्रीय सम्मेलन में संवाद के लिए मीडिया के दो जाने–माने चेहरों को आमंत्रित किया गया। पहला प्रश्न उनसे पूछा गया कि वर्तमान में समाचारों के आगे विस्मयादिबोधक (!) तथा प्रश्नवाचक (?) चिह्नों का अथाह इस्तेमाल हो रहा है, इसका क्या कारण है... तो उनका जवाब था कि ''वर्तमान में मीडिया टी.आर.पी. के चक्कर में मात्र एक सूचना या अपवाह को एक समाचार बना देती है और हाँ मीडिया खुद उस खबर के बारे में निश्चित नहीं होती है लेकिन बाजारवाद के बढते प्रभाव की वजह से उसे ऐसा करना पड़ता है''...

उनसे दूसरा प्रश्न था कि पेड न्यूज तथा फेक न्यूज में कितनी सच्चाई है? उनका जवाब का केन्द्रीय बिन्दू था कि वर्तमान में मीडिया की यही सच्चाई है, इनका बोलबाला बढ़ गया है। प्रतिस्पर्धा तथा बाजारवाद की दौड़ में मीडिया अपना मूल स्वरूप खोता जा रहा है जो सम्यक था... निष्पक्ष था।

वर्तमान में मीडिया को मसाला चाहिए चाहे वो कहीं से भी आए कैसे भी आए। छोटे—मोटे नेता अपने ओछे बयान देकर सुर्खियों में आ जाते हैं तथा मीडिया वाले उस पर बहस करवाने लगते हैं। हाल ही में 4—5 दिनों से हर तरह की मीडिया में एक ही मुद्दा चल रहा है — ''हनुमान जी की जाति क्या है?'' और इस पर विशेषज्ञ बुलवाकर बहसें करवाकर निष्कर्ष तक पहुँचने की होड़ मची है। हो ना हो कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे नजरों से ही फिसल जाते हैं।

सोशल मीडिया तो अभिव्यक्ति का सशक्त स्वरूप होता है, लेकिन वर्तमान में अफवाहों का बाजार बना है तथा हिंसा का स्त्रोत भी। प्रिंट मीडिया बहुत हद तक अपनी मूल प्रवृत्तियों में ही रचता—बसता है मगर कुछ वर्षों से विज्ञापन का कहर इसको भी जर्जर कर रहा है।

एक सामान्य नागरिक की मीडिया से अपेक्षा होती है वह निष्पक्ष रहकर जनसामान्य के मुद्दे जैसे—शिक्षा,रोजगार, स्वास्थ्य, बुनियादी सेवाएँ आदि की सच्चाई उजागर करें तथा इनकी बेहतरी के लिए प्रयासरत रहें। अगर मीडिया अपना कैमरा इन मुद्दों पर टिकाए रखेगी, तो कुछ बेहतर होगा। खबरों की अनिश्चितता के प्रश्नवाचक चिह्न अब मीडिया पर भी प्रश्नवाचक चिन्ह हैं।

> रवि शर्मा बी.ए. (प्रोग्राम) तृतीय वर्ष

शिक्सा

शिक्षा आज के दौर का वह माध्यम है जो मनुष्यों के उज्ज्वल भविष्य का सपना सम्पूर्ण करती है। शिक्षा वह कुँजी है जो अज्ञान रूपी अंधकार को खोल मनुष्य को सफल बनाती है। शिक्षा आज के युवकों का वह हथियार है जिससे वह अपना ही नहीं अपने संपूर्ण देश का विकास कर सकता है। शिक्षा ज्ञान की वह धारा है जो संसार रूपी समुद्र की पहचान (अस्तित्व) है शिक्षा ही मानव को मानव बनाती है।

शिक्षा किसी भी देश का अस्तित्व है किसी देश की पहचान है क्योंकि जो देश शिक्षा में आगे है उसका ही 'मानव विकास सूचकांक' भी अधिक है जैसे:- 'नार्वे' भारत के संदर्भ में 'शिक्षा या साक्षर' व्यक्ति की काफी निश्चित सीमा है जैसे: ''भारत में सात साल का वह बच्चा जो लिखना, पढना या अंकगणितीय हल कर ले वह बच्चा या व्यक्ति साक्षर कहलाता है'' यह जो धारणा है वह गलत है क्योंकि आज के युग में साक्षर व्यक्ति वह होना चाहिए जो अपने ज्ञान के साथ-साथ अपने अधिकारों को जाने भारत में आज भी शिक्षा की कमी के कारण लोग धर्म, जाति के लिए इकट्ठा होते है एवं उत्तर प्रदेश में तो भारत के राजनेताओं को ''बाबरी मस्जिद'' को राजनीतिक मुद्दा बना दिया है। ज्ञान की कमी के कारण यह मुद्दा 1990 के दशक से आजतक वैसा का वैसा ही है अगर भारत को प्रगति के राह पर जाना है तो शिक्षा को बढ़ाना होगा इसी के फलस्वरूप शिक्षा को 'मौलिक कर्तव्य' में जोड़ा गया एवं इसी के फलस्वरूप 14 वर्ष तक बच्चों को मुफ्त शिक्षा भी

शिक्षा की स्थिति के कारण ही आज 'केरल' भारत का समृद्ध राज्य है एवं शिक्षा की कमी के कारण ही आज 'बिहार' जो कभी मगध के रूप में समृद्ध था वह आज पिछड़ें राज्यों की गिनती में आ गया है।

शिक्षा सभी के लिए महत्वपूर्ण है चाहे वह नर हो या नारी। शिक्षा के कारण ही इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री का स्वप्न पूरा किया, शिक्षा के कारण ही कल्पना चावला चांद पर जा सकी। शिक्षा महिलाओं को मजबूत बनाती है एवं महिलाओं ने इसका सम्पूर्ण लाभ भी लिया है। जैसे :— हमारे यूपीएससी की परीक्षा के अनु कुमारी, टिना डार्बी 12 वीं की परीक्षा में रक्शा गोपाल। अंततः शिक्षा सभी को मिलनी चाहिए एवं शिक्षा ही मानव को जानवरों से अलग बनाती है। शिक्षा वही माध्यम हैं जिससे हम आकाश को छू सकेंगे व आजाद पंछी की तरह उड़ सकेंगे!

"शिक्षा वह पथ है जिस पर चलकर हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं"

अक्षय

बी.ए. प्रोग्राम (प्रथम वर्ष)



भारतीय चिंतन का विकास और महात्मा गाँधी

भारतीय मस्तिष्क को बनाने में जिन विद्वानों का महत्त्वपूर्ण योगदान है. गाँधी उनमें सबसे आगे खड़े दिखते हैं क्योंकि गाँधी सिर्फ मस्तिष्क का ही निर्माण नहीं करते अपित् वे हृदय परिवर्तन की एक नई सोच भारतीय समाज के दिमाग में डाल देते हैं। यह वही सोच है जो एक डाकू को संन्यासी या साधू बना देती है। कैसे अंगुलीमाल नामक डाकू का हृदय परिवर्तन बिना किसी खडग और ढाल के महात्मा बुद्ध कर देते हैं। गाँधी दरअसल महात्मा बुद्ध जैसे महान बौद्धिकों और समाज सुधारकों के मस्तिष्क का ही विकास है। इसलिये स्वतंत्रता आंदोलन में वे हिंसा से अधिक अहिंसा, और हथियार की जगह आत्मबल या सत्याग्रह को श्रेयस्कर मानते हैं और उसका पालन करते हैं। उनकी पुस्तक 'हिंद स्वराज' संक्षेप में हमारी बड़ी बड़ी चिंताओं का समाधान कर हमारे दिमाग में भरी नकारात्मक ऊर्जा को परिवर्तित करती है बिल्कूल उन वृक्षों की तरह जो कॉर्बन डाई ऑक्साइड लेकर हमें जीवनदायिनी ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। गाँधी इस विषेले और अशुद्ध समाज में स्वच्छ और साफ हवा का संचार करते हैं। वह आदमी को बदलने की जगह उसके मन को बदलने पर जोर देते हैं। वे हमें पापी की अपेक्षा पाप से घृणा करने की सीख देते हैं। किंतु क्या वर्तमान संदर्भ में ऐसा है?

इन वर्तमान संदर्भों का अध्ययन भारतीय चिंतनधारा का अध्ययन भी है। जिसमें गाँधी अपना अमूल्य योगदान देते हैं। वे अपने प्रयोगों से सीखते हैं। गाँधी की खूबी यह थी कि वह स्वयं को परिवर्तित करने को तैयार थे संभवत् इसीलिये वे समाज में बदलाव ला सके थे। आजादी के हिंसक आंदोलन को उन्होंने अहिंसक सत्याग्रह में तबदील कर दिया था। गाँधी के इस सत्याग्रह का थोड़ा बिगड़ा हुआ रूप राजधानी की राजनीति में दिख सकता है। गाँधी अकेले चलकर कारवां बना सकते थे पर दिक्षत यह है कि आज का समाज कारवां को अकेला करने पर आमादा है।

गाँधी गाँवों को देश की बुनियाद मानते थे और उनका कथन था कि 'शहरों के निर्माण में गाँव की मिट्टी ही नहीं उसका खून और अस्थि पंजर तक लग जाते हैं।' गाँधी का भारत गाँवों में बसता था लेकिन गाँधी के बाद का भारत गाँव को समस्या मानने लगा और शहरों के निर्माण को विकास का प्रतीक चिह्न। यह भाखड़ा नांगल की भांति 'भारत के आधुनिक मंदिर' थे। जिनके बिना देश अधूरा था। लेकिन एक शहर न जाने कितने गाँवों की हत्या कर अस्तित्व में आया। आज भी यह दौर जारी है। नोएडा, गुड़गाँव, फरीदाबाद आदि गाँधी की प्रासंगिकता के केंद्र हैं।

गाँधी का कहना था कि 'अगर आँख के बदले आँख मांगी गई तो एक दिन सारी दुनिया अंधी हो जाएगी।' और गाँधी का यह डर सच ही निकला। आज का समाज बदलापुर का समाज है। रोड रेज की घटनाओं में वृद्धि इसका प्रतीक है। पर सवाल यह है कि महात्मा बुद्ध और गाँधी के देश के मस्तिष्क में इतनी हिंसा कहाँ से आई। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अपने प्रसिद्ध एवं चर्चित निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं' में इसका विश्लेषण कुछ यों करते हैं, "कुछ लाख वर्षों की बात है जब मनुष्य जंगली था वनमानुष जैसा। उसे नाखून की जरूरत थी। उसकी जीवन रक्षा के लिए नाखून बहुत जरूरी थे। असल में वही उसके अस्त्र थे दाँत भी थे, पर नाखून के बाद ही उसका स्थान था। उन दिनों उसे जूझना पड़ता था, प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ना पड़ता था, नाखून उसके लिए आवश्यक अंग था। फिर वह अपने अंग से बाहर की वस्तुओं का सहारा लेने लगा।"

समस्या दरअसल वहीं से शुरू हुई आदिम काल में जो मानव हिंसा को अंतिम रूप में सिर्फ स्वरक्षा एवं प्रतिरक्षा के रूप में इस्तेमाल करता था अब वह सांप्रदायिकता और जातिवाद के नाम पर खून की नदियाँ बहाने लगा। विभाजन के दौरान जो कहर बरपा था गाँधी तब मरे नहीं थे। एकाएक न जाने कितने नोआखाली देश में बन गये थे गाँधी तब अकेले रह गये थे।





कारवां उनकी मृत्यु से पहले ही खत्म हो गया था। भारतीय चिंतनधारा पतनोन्मुख हो चली थी। बीच बीच में कुछ लोगों का साथ मिलता रहा, लोहिया आये, जेपी आये। पर किसी न किसी तरह का आपातकाल इस देश में जारी रहा। अभी भी वह आपातकाल अघोषित रूप में जारी है। जहाँ आपकी न तो जान की कीमत है और न जुबान की ही। गाँधी ऐसे समय में और भी अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं।

हमारी कोशिश उन सिद्धांतों को वर्तमान संदर्भों में देखने में निहित है जिसे गाँधी स्वतंत्र भारत की नींव के तौर पर देख रहे थे।आइये उन सिद्धांतों पर बात करें।

आज जब नैतिकता को एक नकारात्मक टर्म के रूप में ही अधिक इस्तेमाल किया जा रहा है। जहाँ प्रोफेशनल होना आपके सफल होने के लिये जरूरी हो चला है। जहाँ सत्य बोलने वाले के लिये हमेशा कंडीशन्स एप्लाई रहती हैं। वहाँ दरअसल सिर्फ गाँधी के विचारों की जरूरत नहीं बल्कि गाँधी के सिद्धांतों और उनके विचारों की युग सापेक्ष प्रासंगिकता में पुनर्मूल्याँकन की जरूरत भी है। क्या हम इसके लिये तैयार हैं? यदि हम इसके लिये तैयार हैं तब गाँधी संबंधित वाद—विवाद, संवाद बन सकता है।

'गाँधी जी का जंतर' – आम आदमी की अवधारणा

मुझे अपने बचपन में पढी एन. सी. ई. आर. टी की किताबें याद आती हैं और साथ ही याद आता है इन विभिन्न विषयों की किताबों में प्रकाशित 'गाँधी जी का जंतर'। तब मुझे यह बहुत अजीब लगता था क्योंकि प्रत्येक विषय की किताब में यह बुनियादी रूप में शामिल किया जाता था और अध्यापक कभी इसका पाठ नहीं कराते थे। यह हमारी रुचि पर ही निर्भर था कि हम इसका पाट करें या इसे छोड आगे बढ जाए। पर आज के वर्तमान संदर्भों में पढ़ा गया गाँधी जी का यह जंतर मुझे मंत्र सरीखा लगता है। आखिर ऐसा क्या है गाँधी जी के उन विचारों में जिसे हमारे शिक्षाविदों ने जंतर या जादू का नाम दिया। सचमूच यह जंतर ही है। इसमें गाँधी जी बताते है कि यदि अहम तुम्हारे आड़े आता हो, या कभी तुम्हारे दिल में यह उलझन हो कि जो काम तुम करने जा रहे हो वह सही है या नहीं। तब मैं तुम्हें एक जंतर देता हूँ। तुमने अब तक जो भी निर्धन, गरीब असहाय आदमी देखा हो अपने दिमाग् में उसका चेहरा लाओ और फिर देखो कि जो काम तुम करने जा रहे हो। क्या उससे उसे कुछ लाभ है? यदि है तो तुम आगे बढ़ सकते हो ।

गाँधी जी का आम आदमी दरअसल किसी पार्टी या दल का सदस्य नहीं है बल्कि वह वो अंतिम आदमी है जो सरकारी घोषणाओं और लाभकारी नीतियों से महरूम रह जाता है। यह वह किसान है जिसके नाम पर हजारों करोड़ रूपये सूखा राहत कोष से निकाले जाते हैं और वह बुंदेलखंड और विदर्भ में अपने मिट्टी के घरों में फंदे पर झूल रहा होता है। यह वो अंतिम आदमी है जिस तक सुख—सुविधाएं तो दूर, उसकी खबर तक नहीं पहुँचती। यह गाँधी का आम आदमी है। गाँधी जिस भारत का सपना देखते हैं उसमें यह अंतिम आदमी दरअसल पहला आदमी बनना चाहिये था लेकिन हाशिये पर खड़ा है या जंतर—मंतर पर बंबुओं के तंबू के नीचे गाँधीवाद के अस्त्रों के सहारे धीरे—धीरे अपने सामने गाँधी की रोज़ हत्या होते देख रहा है।

सत्याग्रह बनाम उग्रवाद

गाँधी जी से जब पूछा गया कि आप जिस सत्याग्रह या आत्मबल की बात करते हैं, क्या उसका इतिहास में कोई प्रमाण है। आज तक दुनिया का एक भी राष्ट्र इस बल से ऊपर चढा हो, ऐसा देखने में नहीं आता।

गाँधी जी ने तुलसीदास को याद करते हुए जवाब दिया –

''दया धरम को मूल है, पापमूल अभिमान, तुलसी दया न छाड़िये, जब लग घट में प्रान।।''

जैसे दो और दो चार होते हैं। वैसा ही भरोसा मुझे ऊपर के वचन पर है। दयाबल आत्मबल है, सत्याग्रह है और इस बल के प्रमाण पग—पग पर दिखाई देते हैं। दुनिया में इतने लोग जिंदा है, यह दिखता है कि दुनिया का आधार हथियार बल नहीं है, अपितु सत्य, दया या आत्मबल है।" गाँधी सत्याग्रह को एक बड़े हथियार की तरह इस्तेमाल करते हैं और उसे किसी भी अन्य हथियार से श्रेयस्कर बताते हैं। परमाणु बमों और हाइड्रोजन बमों की दुनिया में गाँधी जी का यह विकल्प सत्याग्रह दुनिया को बचाने का एक कारगर उपाय बन चुका है। पर आई.एस.आई.एस. सरीखे आतंकवादी संगठनों और अमेरिका जैसे देश गाँधी के इस सत्याग्रह को समझेंगे, ऐसा नहीं लगता।

ऐसे समय में जहाँ राष्ट्र की अवधारणा और उसके सवाल अचानक से चर्चित हो चले हैं हमें गाँधी को पुनः याद करने की ज़रूरत है। संभवतः गाँधी के विचारों में हमें अपने सवालों के जवाब मिल सकें। फिर गाँधी ने तो कहा ही था कि 'मेरे जाने



के बाद मेरी लिखी सारी बातें और मुझसे जुड़ी सारी वस्तुएँ एक पोटली में बाँधकर समुद्र में बहा दी जायें क्योंकि मेरा जीवन ही मेरा संदेश है। मैं किसी वाद का प्रवर्तक नहीं हूँ।' पर क्या गाँधी की इन बातों का पालन किया गया। क्या गाँधीवाद नाम की विचारधारा हमारे सामने नहीं है।

बहरहाल, गाँधी की समझ उनके मूल्यों और सिद्धांतों में उतनी नहीं जितनी की उन सिद्धांतों एवं मूल्यों के वर्तमान संदर्भों में निहित है। गाँधी जिस विश्वशांति और अहिंसा की बात करते थे, गाँधी के स्वराज की जो अवधारणा हमारे समक्ष थी और गाँधी जिस आजादी को पाना चाहते थे यदि, आज उनकी प्रासंगिकता का सवाल उठ रहा है तो इस सवाल के साथ यह जवाब साथ चला आता है कि उपरोक्त विचार अब तक अपने क्रियान्वयन की बाट जोह रहे हैं। कितना भला होता कि गाँधी आज प्रासंगिक न होते। कितना अच्छा होता कि गाँधी के सपनों का भारत, उनका स्वराज और आम आदमी की अवधारणा भारत में लागू हो गयी होती। पर हम सब जानते हैं कि स्वतंत्रता हासिल करने से पहले जो स्वप्न हमने देखा था वह भग हो चुका है और उस सपने की कीमत हम रोज प्रति पल किसी न किसी रूप में चुका रहे हैं। गाँधी की प्रासंगिकता का सवाल स्वतंत्रता से पहले के सपनों से सीधे जुड़ता है और साथ ही गाँधी स्वाधीनता कैसे पाना चाहते थे इससे भी जुड़ता है। दुर्भाग्य से दोनों ही स्थितियाँ गाँधी के विचारों और उनके सिद्धांतों के प्रतिकूल रहीं।

निष्कर्ष के रूप में यह बात रखी जा सकती है कि आज की दुनिया अगर गाँधी को छोड़ना भी चाहे तो गाँधी के विचार आज की दुनिया को नहीं छोड़ते। जब जब कहीं जुल्म की लाठी चलेगी गाँधी के ये विचार अनशन और स्वराज की मांगों के साथ—साथ अपना सीना आगे करते रहेंगे। जब जब सरकारें निरंकुश होना चाहेंगी गाँधी के सिद्धांत किसी न किसी लोहिया और जे पी के रूप में अपनी गिरफ्तारियाँ देते रहेंगे। जब जब कोई किसान या मजदूर दम तोड़ेगा गाँधी उसकी आवाज़ बन आपके कानों में सत्याग्रह का मंत्र फूँक देंगे। जब जब सांप्रदायिकता और हिंसा भड़केगी गाँधी याद दिलाएंगे की तुम महात्मा बुद्ध की संतानें हो और संताने अपनी प्रवृत्ति के प्रतिकृत जाकर अपने पूर्वजों को लांछित नहीं करती।

डॉ. तरुण सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

आज का भारत

प्राचीन समय में हमारा देश 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। हमारें क्रान्तिकारियों ने जिस भारत की कल्पना की थी हमें नहीं लगता आज का भारत वैसा है बात करें आज के भारत की तो कुछ इस प्रकार की झलक है।

बात करे आज के भारत की बेरोजगारी की समस्या से ग्रसित है आज का भारत आंतकवाद के दंश को झेलता है आज का भारत बेलगाम जनसंख्या वृद्धि वाला है आज का भारत भ्रष्टाचार से पीड़ित है आज का भारत

कल्पना करें आज के भारत की गरीबी से युक्त है आज का भारत किसानों की दयनीय दशा है आज का भारत महिलाओं की दयनीय स्थिति है आज का भारत गैर रोजगार परक शिक्षण पद्धति वाला है आज का भारत

> दर्पण में झांके आज के भारत को तो खराब सड़के वाला है आज का भारत लाचार चिकित्सा व्यवस्था है आज का भारत स्वच्छता का अभाव है आज का भारत बात करे आज के भारत की

> > **शुभम सिंह** हिन्दी विशेष प्रथम वर्ष





नई पीढ़ी

"परंपरा का अनुकरण कर रूढ़ियों का बहिष्कार कर भावों को उद्वेलित कर नवीनता को गले लगाकर अतीत को वर्तमान से संबद्ध कर किया नये युग का आरंभ पूर्वजों को था भविष्य की कल्पना कर नये युग के लिए उन्माद किसने सोचा था कि ऐसा होगा बाद।"

''सफलता की कैसे चढ़ेगें सीढ़ी राम जाने कैसे करेगी नई पीढ़ी, पुरातन मानदंडो को किया दर किनार पूर्वज करें इनके विचार कैसे होगी नैया पार हम तो करेंगे मन की बार—बार।''

> "नहीं इन्हें कोई पश्चाताप अपने स्वप्नों के हैं सरताज वक्त की नन्हीं कोई फिकर तब सोचेंगे जब सामने होगी कब्र जिंदगी है मोहताज सी नहीं किसी ताज की।"

''रामायण—महाभारत बन कर रह गए प्रख्यात हैरी—पॉटर तथा कैप्टन अमेरिका हुए विख्यात क्या था जीवन आदर्शों का मूल नहीं कुछ ज्ञात राम जाने कैसे बनेगी बात।''

"भरत, विक्रम, चंद्र बन गए इतिहास करते हैं ये सब पुस्तकों में वास जो लगते हैं इन्हें बकवास गूगल बाबा आते हैं अब हमें रास। साहित्यिक गतिविधियों, पत्र—पत्रिकाओं, संस्कृति आदि की चिंता पर लगाते हैं सोशल मीडिया का तड़का, पर अनजान हैं इस आग को भड़का कैसा लगेगा झटका।"

> ''करता हूँ मैं यह नाद बचा लो स्वयं को आज

इससे पूर्व बने कोई हमारे मुकद्दर का सिंकदर और कर दे जीवन बद्तर। जागो जागो रे भाई, एक तरफ कुआँ तो दूजी ओर खाई कैसी विकट स्थिति बन आई।"

"अब भी समय है वापस लौट चलें अपनी संस्कृति, स्वर्णिम इतिहास तथा अपनो से गले मिलें, अपनी शक्तियों तथा सीमाओं को पहचानकर, वर्तमान को इतिहास में स्वर्णिम काल के रूप में दर्ज कराकर, नई पीढ़ी का अस्तित्व सार्थक सिद्ध करें।"

> मुकुलित भट्ट 'कान्ता' हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष



सोच व सफलता

हम जिंदगी में हारेगें या जीतेंगे ये हमारी किरमत और हालात पर निर्भर करता है। ये हमारी सोच पर निर्भर करता है। हम कई बार अपने सोच व सपनों की सीमाएं तय कर देते है और वंचित रह जाते है महान सफलताओं से।

लोग, समाज, हालात और कई बार हम स्वयं भी अपने दिमाग की सीमाओं को तय कर लेते हैं। अगर कोई कहता है कि ये करना कठिन है और हम धीरे—धीरे उसे सही मानना शुरू कर देते हैं।

स्वयं से कहिए कि आप महान सफलताओं के लिए बने है दूसरो को अपनी सीमाएँ तय मत करने दीजिए। कहिए अपने आप से कि सपने मैने देखें है तो कीमत भी मेरी होगी।

हाथ बांधे क्यों खड़े हो तुम, मुसीबतों के सामने, ये मुसीबतें कुछ नहीं, तुम्हारे होसलों के सामने।

> मन की सुन, सोच बदल एक पल वो भी आएगा बेड़ियाँ तोड़ कर

तू दूर गगन में उड़ जाएगा।

पवन कुमार बी.ए. (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष



सोशल मीडिया

आज के युग में सोशल मीडिया का प्रचार—प्रसार बहुत तेजी से बढ़ रहा है। आज देश के सभी नौजवान युवा व महिलाएं बहुत तेजी से बढ़ रहे सोशल मीडिया का एक भाग एवं अंग है। आज सोशल मीडिया देश के प्रत्येक व्यक्ति द्वारा उपयोग करने वाला एक अंग है।

सोशल मीडिया से हमारा अभिप्राय यह है कि सूचना एवं अन्य जानकारी का देश भर में प्रसारण करने वाला सोशल मीडिया एक उत्तम प्लेटफॉर्म है।

वर्तमान युग में सोशल मीडिया का प्रभाव तेजी से फैल रहा है। जैसे – INDIA AGAINST CORRUPTION

जो एक विशाल एवं महा आंदोंलन जो सोशल मीडिया के जिरए एक बड़ा आंदोलन बना जिसने देश के युवाओं को बड़ी संख्या में अपनी ओर आकर्षित किया और ''अन्ना हजारे'' द्वारा मिलकर इस आंदोलन को एक बहुत बड़ा योगदान का रूप दिया।

सोशल मीडिया के जिरए ही 'निर्भया' के न्याय के लिए बड़ी संख्या में युवाओं ने सड़कों पर आंदोलन कर दिया। जिससे सरकार एक बहुत ही व्यापक एवं प्रभावशाली कानून बनाने पर मजबूर हो गई।

सोशल मीडिया ही एक ऐसा माध्यम है जो देश भर में हो रही सारी घटनाओं को संचार एवं अन्य माध्यमों द्वारा जनता तक पहुँचाती है।

हम जानते हैं कि 2014 के चुनाव में देश भर में युवाओं ने और महिलाओं ने भी बढ़—चढ़ कर इस चुनाव में भाग लिया। बल्कि सोशल मीडिया ने भी चुनाव के साथ—साथ जुड़ी सारी घटनाओं को समय—समय पर व्यक्त किया।



सोशल मीडिया के द्वारा ही फिल्मों का ट्रेलर टेलीविजन पर दिखाया जाता है और इसी माध्यम के द्वारा मनोरंजन के और फिल्मों की सारी जानकारियाँ दर्शकों तक पहुँचाई जाती है।

सोशल मीडिया एक 'अपरांपरागत' दृष्टिकोण है। सोशल मीडिया एक ऐसा तत्व है जो देश भर की सारी जानकारियों को दूसरो तक व्यक्त कर पाता है।

सोशल मीडिया के कई तत्व होते है, जैसे—इंस्ट्राग्राम, फेसबुक, टिविट्र इत्यादि।

यह एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा कम पढ़े—लिखे व्यक्ति भी देश भर में हो रही घटनाओं को जान सकते हैं, अर्थात् उन्हें भी सारी जानकारियाँ उपलब्ध कराई जाती है। अर्थात् वह भी सोशल मीडिया का एक अंग माने जाते है।

सोशल मीडिया लोकतंत्र को भी काफी मजबूत बनाते है और सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक आदि को सृदृढ बनाते है।

हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया खेल जगत की दुनिया और फिल्मी दुनिया की सारी जानकारी विस्तृत रूप से दर्शकों तक पहुँचाता है।

सोशल मीडिया का प्रमुख, कार्य लोगों को सही मार्ग दिखाना एवं शिक्षित करना है और साथ ही साथ मनोरंजन का कार्य भी सोशल मीडिया करता है।

सोशल मीडिया से संबंधित कुछ गलत अवधारणाएं भी सामने आती है जैसे—

- सोशल मीडिया बातों को तोड–मरोड कर प्रस्तुत करता है
- सोशल मीडिया द्वारा प्रस्तुत किए गये खबर कभी गलत भी हो सकती है।

ऐसे कई उदाहरण या अवधारणा है जिनसे यह ज्ञान होता है कि सोशल मीडिया के कुछ गलत प्रभाव भी देखने को अथवा सुनने को मिलते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि सोशल मीडिया एक सकारात्मक साधन है और सूचनाओं का आदान—प्रदान करने का एक उतम साधन है

यह एक तत्व ही नहीं बल्कि उतम प्लेटफॉर्म है।

अमर भारती बी. ए. प्रोग्राम (प्रथम वर्ष)



गुरू शिष्य सम्बन्ध

मनुष्य का जीवन एक रंगमंच हैं यहां नित्य नये—नये खेल चलते रहते हैं। पग—पग पर कितनाई और संघर्ष हैं। मनुष्य जब जन्म लेता है, तब से ही उसे एक मार्गदर्शक शिक्षक गुरू या संरक्षक की आवश्यकता प्रतीत होती है। बच्चे का प्रथम गुरू उसकी माता होती है,जो उसे इस जगत के तौर तरीकों तथा जीवन जीने की कला से वाफिक करवाती है। मनुष्य जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर गुरू बदलते रहते हैं, परन्तु उसकी प्रतिष्ठा, मान मर्यादा यकायक बनी रहती है।

गुरू की तलाश कभी पूरी नहीं होती है। एक जिज्ञासा शांत होती है तो दूसरी सिर उठा लेती है, इस कारण जीवनपर्यन्त तक गुरू की खोज बनी रहती है। उम्र के अगले पड़ाव में जब शिक्षा ग्रहण करने की बात आती है तो गुरू के बिना यह असम्भव है। वह गुरू ही होता है जो अपना सम्पूर्ण अनुभव एवं ज्ञान शिष्य के समक्ष उसी प्रकार प्रस्तुत कर देता है, जिस प्रकार वृक्ष हमें फल, नदियाँ तथा बादल जल एवं गायें दूध देती है।

शिक्षक अपने शिष्य को गुमनामी एवं अंधेरे के रास्तों से प्रसिद्धि एवं उजियाले की राह पर लाता है। जीवन यापन के गुण भी गुरू ही सिखाता है। यहाँ तक की गृहस्थ जीवन जीते हुए भी गुरू की आवश्यकता बनी रहती है। तमाम किठनाइयों से उबारने वाला तथा सफलता को पाने में सहायता करने वाला गुरू ही है। इन सबके बावजूद भी गुरू एकरूपता लिए हुए है, सड़क की भाँति गुरू वहीं रहता हैं जबिक शिष्य को मंजिल तक पहुंचा देता हैं।

हमें चरित्रवान, सक्षम तथा सफल बनाने में माता—पिता तथा गुरूजनों का अहम योगदान है। जो अपनी दिव्य अलौकिक आभा तथा ज्ञान से इहलोक तथा परलोक को सुधारने में सहायता करते हैं। माता—पिता तथा गुरूजनों के चरणों में वंदन.......।

> वैभव शर्मा बी.ए.(प्रोग्राम) —द्वितीय वर्ष

भगवान की मूर्ति

किसी दूर गाँव में एक पुजारी बाबा रहते थे जो हमेशा धर्म—कर्म के कामों में लगे रहते थे। एक दिन वह किसी काम से गाँव के बाहर जा रहे थे तो अचानक उनकी नज़र एक बड़े पत्थर पर पड़ी। उनके मन में विचार आया कि कितना विशाल पत्थर है क्यों न इस पत्थर से भगवान की मूर्ति बनाई जाए, यही सोच कर पुजारी ने वह पत्थर उठा लिया। गाँव लौटते हुए पुजारी ने वह पत्थर का टुकड़ा एक मूर्तिकार को दे दिया। मूर्तिकार ने पहला वार किया उसे एहसास हुआ कि पत्थर बहुत ही कठोर है। मूर्तिकार ने एक बार फिर से जोश के साथ प्रहार किया लेकिन पत्थर नहीं टूटा। उसने लगातार 99 प्रयास किए लेकिन पत्थर तोड़ने में नाकाम रहा।

अगले दिन जब पुजारी आए तो मूर्तिकार ने भगवान की मूर्ति बनाने से मना कर दिया और सारी बात बताई पुजारी जी ने दुखी मन से पत्थर वापस उठाया और गाँव के ही एक छोटे मूर्तिकार को वह पत्थर मूर्ति बनाने के लिए दे दिया।

अब इस मूर्तिकार ने अपने औजार उठाए और पत्थर काटने में जुट गया। जैसे ही उसने पहला हथौड़ा मारा पत्थर टूट गया क्योंकि पत्थर पहले मूर्तिकार की चोंटों से काफी कमजोर हो गया था। मूर्तिकार ने भगवान शिव की बहुत सुंदर मूर्ति बना डाली। पुजारी जी मन ही मन पहले मूर्तिकार की दशा सोच कर मुस्कुराए कि उस मूर्तिकार ने 99 प्रहार किए और थक गया, काश उसने एक आखिरी प्रहार भी किया होता तो वह सफल हो गया होता।

मित्रों? यही बात हर इंसान के दैनिक जीवन पर भी लागू होती है। बहुत सारे लोग यह शिकायत करते हैं कि वे कठिन प्रयासों कें बावजूद सफल नहीं हो पाते लेकिन सच यही है कि वह आखिरी प्रयास से पहले ही थक जाते हैं। लगातार कोशिशें करते रहिए, क्या पता आपका अगला प्रयास ही वह आखिरी प्रयास हो जो आपका जीवन बदल दे।

> चंचल हिंदी (ऑनर्स) तृतीय वर्ष



आदमी

तपती धूप की जलती धरा और उस पर पसीने बहाता आदमी। दौडती मर्सिडीज और उस में चलते म्यूजिक की धुन पर गुनगुनाता आदमी। पेट की भूख मिटाने के लिए किसी शादी के बचे हुए खाने की जूटन में कृतों के साथ पत्तल चाटता आदमी। ड्रांइग रूम के सोफे पर बैठ अपने पालतू बुलडॉग को दूध-बिस्कुट खिलाता आदमी। संसद के गलियारे में राजनीतिज्ञ के नाम पर देश और लोकतंत्र की धज्जियाँ उडाता आदमी। सड़कों और स्टेशनों पर सिर पर गमछा ओढ़े पसीना बहाता हुआ लोगों का सामान उठाता आदमी और पेड की छाँव में बैठ लोगों के जूते-चप्पल उठाता आदमी। होटल-क्लबों और रेस्टोरेंटो में नग-धडंग होकर नशे में झूमता आदमी और स्कूल-कॉलेजो में सही और गलत के बीच फर्क बताता हुआ आदमी।

> **डॉ. विकास शर्मा** असिस्टेंट प्रोफेसर हिंदी विभाग

नालंदा

नालंदा / सोचता हूँ
तुम्हारी आभा कैसी रही होगी
इतिहास में जब भी पढता हूँ
तुम्हारे बारे में।
फिर सोचता हूँ
इतिहास ने ही तो गढ़ी है
वो छवि
तिरंगा लिए भारत के बीचोबीच
उसमें कहीं नहीं
ग्रामवासिनी।
लेकिन ये सब सोचने से पहले
सोचता हूँ
नालंदा
तुम क्यों कर

नहीं
कैसे ख़त्म हुए
ये सोचते ही
इतिहास के शामियाने से निकलकर
कुछ लोग
पकड़ लेते हैं कॉलर मेरी कमीज का
मेरे छात्रों के सामने
नालंदा
तुम देखते रहते हो
देखते रहते हो
सिर्फ देखते रहते हो

डॉ. तरुण सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग



शिक्षा के विविध आयाम

दिन पर दिन बढ़ता सेंसेक्स, अरबपतियों एवं खरबपतियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। देश की आर्थिक सम्पदा अमीर वर्ग के लोगों के पास ही देखी जा रही हैं। अमीर और अमीर होता जा रहा है, जबकि गरीब और गरीब होता जा रहा है।

दूसरा पक्ष यह है कि गरीब वर्ग के लोगों के बच्चों में अभी शिक्षा का प्रसार हुआ ही नहीं हैं। भारत की 59 प्रतिशत जनसंख्या अशिक्षित मानी जा रही हैं, जहाँ अभी तक शिक्षा का व्यावहारिक ज्ञान भी नहीं हैं।

इन दोनों पक्षों से यह पता चलता है। कि अमीरों के बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करके अभाव आगें बढ़ रहे हैं, वहीं गरीबों के बच्चों को निम्न शिक्षा का भी अभवा हैं। देश की प्रगति के लिए शिक्षा का प्रसार व्यापक माना जा रहा हैं। अशिक्षा के कारण ही गाँवों की जनता अच्छा नेता नहीं चुन पाती हैं।

शिक्षा या यूँ कहें कि सम्पदा देश के अमीर वर्ग के पास हैं, मानों ऐसा लगता हैं कि यह उन्हें विरासत में मिली। परंतु आधुनिक युग में मोदी सरकार के कार्यकाल में बढ़ते स्कूल, कॉलेज के साथ—साथ बच्चों का भविष्य भी ब्राइट होता जा रहा हैं। हाल ही में कुछ हद तक सभी गाँवों में स्कूल पहुँच गये हैं, परन्तु गरीबी की वजह से बच्चे स्कूलों तक नहीं पहुँच पा रहे है। अभी तक गरीब वर्ग के 10 प्रतिशत बच्चों ने ही सफलता पायी हैं।

शिक्षा प्रणाली में हमारे बहुत से विषय जोड़े गये हैं, जिसमें कम्प्यूटर का विशेष महत्व आधुनिक काल में माना जा रहा हैं। रामायण और महाभारत काल में अच्छे गुरु बहुत ही कम थें, ठीक उसी प्रकार वर्तमान में भी अच्छे गुरुओं का मिलना दुर्लभ माना जा रहा हैं।

मंत्रालय में बैठे मंत्रीगण शिक्षा पर या शिक्षा के बेहतर से बेहतर प्रबंध पर उनका ध्यान ही नहीं जाता हैं। वर्तमान में औद्योगिकरण के कारण शिक्षा प्रणाली में टेक्नोलॉजी लाने की जरुरत हैं। भारत जैसे अधिक जनसंख्या वाले देश की जीडीपी अभी भी छठवें स्थान पर आती हैं।

शिक्षा मंत्रियों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में व्यापकता लाने के लिए उनको विचार करना चाहिये। देश को आगे लाने के लिए शिक्षा पर ध्यान देना अति आवश्यक माना जा रहा है।

महाविद्यालयों के कुलपतियों की सभा में शिक्षा व्यवस्था, व्यक्तित्व, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक गुणों पर विशेष ध्यान दिया जाता हैं। शिक्षा का क्षेत्र बहुत ही व्यापक माना जा रहा हैं।

ब्रह्मांड में नक्षत्रों, ग्रहों, उपग्रहों की जानकारी के लिए या मिसाइलमैन के नाम से जाने वाली मिसाइलों के लिए अच्छें विद्यार्थियों के साथ—साथ अच्छी शिक्षा का होना बहुत आवश्यक होता हैं। जिस प्रकार ब्रह्मांड की जानकारी के लिए वैज्ञानिकों का होना आवश्यक माना जा रहा हैं, ठीक उसी प्रकार देश के विकास के लिए शिक्षा का महत्व हैं।

शिक्षा का महत्व वर्तमान में बहुत हैं। शिक्षा के बिना मनुष्य एक जानवर होता हैं, ठीक उसी प्रकार देश के विकास के लिए शिक्षा का होना आवश्यक हैं। शिक्षा हमारे समाज को सभ्य बनाने का मात्र साधन हैं।

देश के विकास के लिए राजनेताओं में शिक्षा होनी चाहियें। जब देश पर शासन कर रहे नेतागण ही आशिक्षित हैं, तो उनकी जनता या यूँ कहें कि देश में आशिक्षता का क्रेज इसीलिए हैं। जहाँ के शासनकर्ता ही पढ़े लिखें नहीं हैं, वहाँ की जनता क्या पढ़ेगीं।

शिक्षा व्यवस्था की प्रणाली पर हमारे नेताओं को अच्छी शिक्षा का प्रबंध करना चाहिये।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के बिना मनुष्य एक जानवर के समान माना जाता हैं। शिक्षा मनुष्य को बेहतर बनाने का एक साधन मात्र हैं। शिक्षा मनुष्य के लिए आधुनिक युग में बहुत महत्वपूर्ण मानी जा सकती हैं। शिक्षा के बिना मनुष्य एक जन्मजात शिशु माना जाता है।

> पपिल कुमार त्रिपाठी बी.ए. (ऑनर्स) तृतीय वर्ष



जीवन में कुछ करना है तो

जीवन में कुछ करना है तो, मन को मारे मत बैठो।
आगे—आगे बढ़ना है तो, हिम्मत हारे मत बैठो।।
चलने वाला मंजिल पाता, बैठा पीछे रहता है।
ठहरा पानी सड़ने लगता, बहता पानी निर्मल है।
पांव दिये चलने के खातिर पांव पसारे मत बैठो।।
आगे—आगे बढ़ना है तो मन को मारे मत बैठो।।
तेज दौडने वाला खरगोश, दो पल चलकर हार गया।
धीरे—धीरे चलकर कछुआ देखो बाजी मार गया।।
चलो कदम से कदम मिलाकर किनारे मत बैठो।।
अगे—आगे बढ़ना है तो मन को मारे मत बैठो।।
धरती चलती, तारे चलते, चाँद रात भर चलता है।
किरणों पर उपकार बाँटने सूरज रोज़ निकलता है।।
हवा चले तो महक बिखेरे, तुम भी प्यारे मत बैठो।।
जीवन में कुछ करना है तो मन को मारे मत बैठो।।

विशाल

बी.ए. (प्रोग्राम) प्रथम वर्ष



हे भगवान ऐसा क्यों होता है?

कोई सोता है मखमल के बिस्तर पर तो कोई जमीन पर सोता है, कोई घूमता लंबी-लंबी गाड़ी में, तो कोई नंगे पैर सडकों पर होता है। हे भगवान ऐसा क्यों होता है? कोई चखता है छप्पन भोग को तो कोई भूखा ही सोता है, कोई इतराए अपनी अमीरी पर और कोई अपनी गरीबी पर रोता है, हे भगवान ऐसा क्यों होता है? कोई दिखाए शान-ओ-शोकत और कोई अपनी गरीबी छुपाता है, कोई हँसाए पूरी दुनिया को तो कोई सभी को रुलाता है. हे भगवान ऐसा क्यों होता है? कोई रहता है आलिशान महलों में तो कोई फुटपाथ पर रहता है, कोई मुस्कुराता है जीवन भर और कोई अपना दर्द को सहता है। हे भगवान ऐसा क्यों होता है?



किसी का पल-पल बीते खुशी में तो कोई दुखों में ही जीता है, कोई करे है मदिरा का सेवन और कोई अपने ही आसूँ पीता है, हे भगवान ऐसा क्यों होता है? कोई चलता है छतरी के नीचे तो कोई कडी धूप में जलता है, कोई जन्में लाखों की कोठी में और कोई गरीबी में ही पलता है, हे भगवान ऐसा क्यों होता है? कोई करता है भोजन का अनादर तो किसी को दो टुकड़ा नसीब न होता है, किसी की चोट पर हजारों दुआएँ और किसी के मरने पर भी कोई न रोता है. हे भगवान ऐसा क्यों होता है? कोई लूट रहा किसी गरीब को तो कोई मुश्किलों में जीता है, कोई खरीद रहा सोना और चाँदी और किसी को जहर भी नसीब न होता है हे भगवान ऐसा क्यों होता है? कोई होता है, बिल्कुल निर्धन तो वो क्यों जीने से डरता है. किसी के पास है लाखों की दौलत फिर भी वो मरने से डरता है. हे भगवान ऐसा क्यों होता है?

> अजय यादव हिन्दी (विशेष) द्वितीय वर्ष

B. A. Programme











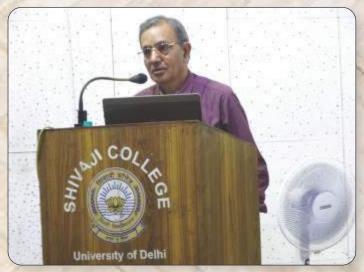






Botany





















Commerce







Business Economics













Chemistry













Geography















Zoology













Physics

























Political Science











Sanskrit













Biochemistry









English







Mathematics









Economics









Hindi













History



























English Section



SHIVRAJ •



CONTENTS

S. No.	Title	Name of the student	Page No.
1.	Student Editorial	Aniket Kumar Jha/Veer Vikram Singh	55
2.	Education	Tinku Jangral	56
3.	The Song of Life	Bidyachandra Lairenjam	57
4.	Lihaaz	Srishti Mishra	57
5.	To the Rover	Bidyachandra Lairenjam	57
6.	Forest Walk	Amanjit Sethi	58
7.	Selfless	Srishti Mishra	59
8.	I	Bidyachandra Lairenjam	59
9.	New in the City	Tenzin Jordan	59
10.	Science and Religion	Eeshan Joshi	60
11.	Paranoia	Muskaan Kapoor	62
12.	The Storm Has Passed	ThangLiamMung	63
13.	Practice What You Preach	Aniket Kumar Jha	63
14.	Some Seasons	Rohin Jakhar	64
15.	Our Nurturer, Our Shield: The Tree	Mohit	64
16.	Waste Management	Mili Rawat	65
17.	Female Infanticide and the	Veer Vikram Singh	65
	Concept of 'Foundling'		
18.	Faith	Srishti Mishra	67
19.	Social Service and the Youth	Sankalp Garg	67
20.	Atheist in the House of Lord	Aniket Kumar Jha	68
21.	Education in India	Nandini Joon	69
22.	Fragile	Srishti Mishra	70
23.	Imbalance in Beauty	Upasana Goel	70
24.	Cleanliness is Next to Godliness	Adiba Jamil	71
25.	Black and Beautiful	Anamika	71
26.	Cingulomania	Muskan Kapoor	72
27.	Inseparable Love: A Short Story	Arushi Grover	72
28.	Bliss	Bhavika Kapoor	74
29.	Her	Simran Chaudhary	74
30.	Existence	Mahesh	74
31.	A Message from Shivaji College	Ashish Panwar/Vaibhav Sinha	75
	Students' Union		
32.	Eulogy to Myself	Muskan Kapoor	75
33.	Suicide: An Unnatural Death	Tanishka Malik	76



Student Editorial



Veer Vikram Singh

Aniket Kumar Jha

The most infectious and virulent thing in this world is an idea which gains its shape out of shrewd intellect. It is the primordial pool which breathes life into creativity. But creativity demands a medium for its expression.

Shivraj, the annual publication of Shivaji College encapsulates creativity at its best. It also showcases diverse voices which reflect the academic and cultural spaces that Shivaji College has nurtured for its students. It continues to unfurl like a sweet fragrance that celebrates art and imagination.

Being the editors, we truly enjoyed going through creative expressions and getting a privileged insight into the minds of our imaginative writers.

It is a refreshing report of all the activities and initiatives that are undertaken by various societies, departments, and committees of the college.

A scalding brew radiates heat which is followed by its aroma. Shivraj is the aroma of all the heat which this great institution has within its boundaries.

Aniket Kumar Jha B.A.(Hons.) English, 1st year

> Veer Vikram Singh B.A. (Prog.), 3rd year



EDUCATION

'Real education has to draw out the best from the boys and girls to be educated.'

- Mahatma Gandhi

Education is the process that facilitates learning and the acquisition of knowledge, skills, values, beliefs, and habits. Educational methods include storytelling, discussion, teaching, training, and directed research. Education may be pursued formally or informally. Any experiment that has a formative effect on the way one thinks, feels or acts may be considered as a means of education. Formal education occurs in a structured environment and its sole purpose is to teach students. Usually, formal education takes place in a school environment with a classroom of multiple students learning together with a trained certified teacher. Formal education is commonly divided into primary and secondary schools, colleges, and universities. Informal education was developed in part as a reaction to the perceived limitations and failures of the traditional education system. It consists of a broad range of educational approaches including alternative schools, self-learning, and home schooling.



Education is the only tool which can change our mind and personality. It helps us attain positive attitude. We must give more importance to education as it is the only source of real happiness in our life. Each and every individual has her own dreams of doing something different in life which can be achieved through a good education system.

The Indian education system is very rigid which completely ignores emotions, thoughts, and ambitions. Education in most schools is only one dimensional with a single-handed focus on scoring well in examinations. Lack of availability of trained teachers at all levels is another drawback. With a literacy rate of 77%, India lags behind other BRICS nations which have literacy rates above 90%. All these countries have a better teacher to student ratio as well. Data from the Ministry of Human Resource and Development show that only half of all students who enter primary schools make up to the upper primary schools, out of which only half of them go to high schools. Several studies have shown that the economic development of a country depends directly on education and the well-being of the people. Low literacy rates in our country are also due to the privatization of educational institutions.

Education without values is a complete waste. Education alone cannot create great personalities. However, if education is imparted alonside values then results could be miraculous. Many educated youths in our country get diverted from their path. This is mainly due to the lack of moral values. Values reflect the character of individuals and their thought processes. So, it's the need of the hour to build an education system which lays importance on ethics and values.

-Tinku Jangral, B.A.(Prog.), 1st year



The Song of Life

Come with the fist of fury
Depart with empty hands like a fakir.
O life! What would I implore to you.
O life! What would you give to me.

The song of a crestfallen cuckoo,
The lament of a fallen flower,
Potrays a thousand stories,
Asks a thousand questions,
And thousand riddles.
What are the answers?
O life! O soul!

-Bidyachandra Lairenjam, B. A. (Hons.) History,1st year



To the Rover

Float like a cloud in the gust of wind, O abandoned kite Come back home, come back home!

Are you still wandering?
Or
ave you lost your way bac

Have you lost your way back?
O abandoned, O rover
Come back home, come back home!

O rover of the night Are your wings being enthralled? Or

Are they in subjugation?
O abandoned slicing through the tempest
With your edges of wings
Come back home,
O kite,
Come back home!

-Bidyachandra Lairenjam, B. A. (Hons.) History, 1st year

Lihaaz

She stood there,
Behind the curtain, covering herself.
She held the piece of velvet tight, crushing it like the dried leaf of autumn.

She stood there, her eyes full,
Drowning in the ocean of grimness,
Watching them wreck the doll she brought with her
(wrecked like the last fragment of
childhood left in her being).

She stood there,
No longer identifying her own body.
Everyday she meets new conquerors
trying to reign over her body,
Like a battlefield of lust.
Trying to make it more of theirs than
it will ever be hers.

She stood there,
Playing with the threads of her tattered frock,
Which is now incapable of
hiding the scars on her body.

She stood there – lost, Yet found by the hornets of the society, As she stood there, watching them sell bodies, naked.

- **Srishti Mishra,** B.A. (Hons.) English, 3rd year





Forest Walk

Crackling noises of dry leaves and a chilling breeze of howling wind penetrating against the frozen wounds made me quite uncomfortable as I tried to open my eyes and recollect the events that had brought me to that situation. Shards of glass and dried blood on the rustling leaves were the only things visible to my eyes under the moonlight. My car was nowhere to be found and the broken wrist watch indicated that only a few hours had passed since I supposedly fell into the hands of wretched sleep while driving vigorously for hours without a break.

I brushed off the dirt and leaves that had got stuck all over my clothes and with a deep sigh, I continued towards the road – wondering if I rolled down into the forest during my slumber. It took me almost forty minutes to finally reach the only road that was paved through the dense forest. It connected two towns - my home town and the one from where I started my journey.

The morning was cold. My wound was minor with no pain so I never got around to check it. I wondered if I had just rolled off downhill during a minor car accident and slept it off.

'10:30 a.m.', my watch indicated as I finally reached the periphery of the forest and continued towardsmy family cottage which stood in isolation. Much to my relief, I witnessed the first sign of life after five hours of my walk back home. A sudden state of confusion and sadness circled around me while I looked at my family and my relatives and the only person missing was my terminally ill father. One could see the outburst of emotions on the faces of each family member present there and instantly figure out what had happened.



"I didn't make it in time", I exclaimed as I walked into my house. Many had come to pay their respect to my influential father, but they were too caught up in their own grief to notice another individual quietly making his way inside.

By then, my broken wristwatch had finally taken its last breath - just like my father. We had a big digital wall clock in our living room where the body was covered with white sheets and my mother was crying over it.

I took a step towards the clock to check the time. A strong gush of wind rushed through the windows, making me turn and see my father sitting on a wheelchair amidst the crowd, shedding tears.

I turned back and looked down at the corpse which was now uncovered by the wind, revealing my face. I lay on the floor and my mother was crying over me.

- Amanjit Sethi, B.A. (Hons.) English, 2nd Year



Selfless - A Prose Poem

With wrinkled hands and trembling fingers, this old lady sitting beside me weaves a cardigan with love for warmth.

If only these threads could weave something to cover our misery and palliate the rage we all have been guarding, maybe some of us could learn to love.

This old lady, she knows not of these woes. She knows not how to not give. She is the epitome of forgiveness. Her eyes carry a tint of redness in them, perhaps she has been fighting too hard with her sleep to weave this.

Her eyes, they are deep.

The immeasurable depth of her love is something that slides down her lashes upon trying too hard to get the needle.

This old lady, she is the embodiment of selflessness. She knows not how to unlove. All her life she has been giving. Giving her love, her time, her warmth, her gratitude, herself - to people she loves. She makes me ruminate on the thought of selflessly giving myself to something or someone and not expecting anything in return. She makes me wonder if I - if we, would ever be able to love without expecting anything in return.

With wrinkled hands and trembling fingers, this old lady beside me is weaving love.

-Srishti Mishra, B.A. (Hons.) English, 3rd year



T

I am an outcast kite
thrown out of the folk, flew over the vast ocean alone.
But I don't have any regrets,
As I could see the world down below from above.
I am a lone wolf who hunts
for the consummate prey in the forest of life.
I am a sailor sailing down the river
through the blowing breezes.
And, I am a lover
who drinks the nectar from the flower of love,
And is a navigating light to all.

-Bidyachandra Lairenjam, B. A. (Hons.) History, 1st year



New in the City

Being away from home is not always easy as one has to cope up with a whole new routine, new culture, and new environment. Earlier, I used to think that living in Delhi is very easy and comfortable. But, unfortunately, things turned out to be quite different. To live in this city is not easy. Here, people are often busy with their own lives. Nobody has the time to interact or bond with each other. In the beginning, I found it extremely difficult to adapt myself to this new environment and culture. But with the passage of time, I too became a part of this rat race. "Life is like a rat race. The one who wins the race will live a great life and the one who fails will get nothing". I heard a great speaker say these lines. So, we shouldn't follow this path to alienating success blindly and should follow our heart instead. Ibelieve that when one follows one's heart, one surely reaches the destination. It is never too late to start.

> -Tenzin Jorden, B. Com.(Prog.), 1st year



Science and Religion:

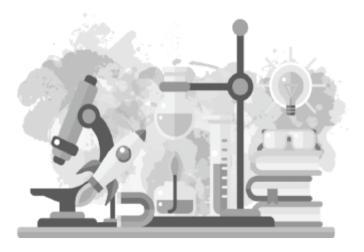
The Material-Abstract Convergence Essential for a Utopian Universe



"Science and religion, religion and science, put it as you may, they are the two sides of the same glass, through which we see darkly until these two focus together, reveal the truth."

The above words by American novelist Pearl S. Buck truly underline the propinquity between science and religion, i.e. the material and abstract notions essential for achieving the dual goals of advancement and enlightenment.

Technology has time and again sensationalized the human race with its noble applications in sundry spheres. The unprecedented pace of conveyance, the radicalisation in the medical field, and the redefinition of interaction with social media, all can be regarded as an offspring of science. While most of these state-of-the-art mechanisms have been put to judicious use, certain people have resorted to unethical acts such as hijacking the aeroplanes, carrying out unscrupulous organ trade, and using the social media for stalking. This is where religion is required to take the role of a mentor and steer an individual's actions to morally sound deeds.



Science can be defined as the drawing of inference through practical experimentation and observation. Religion is a set of doctrines with devotion to a supernatural power. Religion not only serves as a medium to standardize the customs and behavioural traits of a community but also affects its mental faculties as well.

Science and religion are traditionally viewed as contrasting concepts. Science is objective, while religion is subjective; science relies on experiment, while religion relies on experience; science focuses on the magnitude, while religion focuses on magnanimity. Though the approaches are different, the goal is the same- to trim human life with comfort and contentment. The presence of one in the absence of the other leads to chaos in societies.

In the embryonic phase of human civilization, religion subsumed the ability to reason and logic. This resulted in blind faith and as a result a number of superstitious activities gained prevalence. The misconceptions regarding the shape of the earth and revolution pattern of other heavenly bodies are testaments to this statement.

As we progressed, the practices of cognition and inference gained ground. Science transitioned the world beyond imagination, with most of the ailments being conquered. But, this came at the cost of spiritual and moral degradation. The Industrial Revolution led to the formation of a materialistic society, with men being treated like cogs. The desire to dominate led to two catastrophic World Wars, where science, in the form of weapons, wreaked havoc on mankind.

SHIVRAJ



The debate between the upholders of the two nations can be attributed to the acts of some inconsiderate and callous individuals who presented one stream as superior to another, thereby creating a mental block. In fact, most of the fundamental religious practices have scientific significance. The chanting of 'Om' is found to improve pulmonary functions and cognitive abilities. The Islamic practice of circumcision prevents penile cancer and urinary tract infections. Religions such as Buddhism do not stress much on supernatural existence, but on values like tolerance and non-violence.

Science has helped us develop amenities and apparatus, while religion has helped us sustain the progress. In an era of cut-throat competition, religion serves as a channel to vent out stress.

Unfortunately, today more focus is laid on rebellion than revolution, and the challenge to religion is a consequence of this behavioural pattern. In the words of Martin Luther, 'Science gives man knowledge that is power, and religion gives man wisdom that is the control.', there exists a metaphorical bridge between the two, the absence of which leads to disasters, as seen in the case of dynamite. Invented by Alfred Nobel for rock blasting, disregard for human life led to its usage in warfare.

Religion and science are not inimical, but interlinked. They are outwardly opposite approaches, the meeting point of which is the human mind. Thus, it is in the best interest of mankind that the two complement each other so that we are able to achieve evolution as well as enlightenment.

-Eshaan Joshi, B. Com. (Hons.), 2ndyear



SHIVRAJ



Paranoia

Towards the end of his days, he was given the gift of paranoia.

He shifted his recliner near the window and sat there all day long.

His food was served on a white plate and he always ate after five minutes, for some unnamed reason.

At night, he double locked every entrance to the house.

Once a week he went out, just till the garden and wore black overalls.

One day I noticed that he was carrying a gun.

I asked him several times who he was hiding from.

In a panicky voice, he always answered the same, "He...he is a shadow."

"Whose shadow?", I'd asked. "Mine, he...he tries to hurt me. He...he carries a sharp knife with him too and his eyes always bleed with a big grin on his face. And honey, he also has a bullet wound in his head."

Then he held me tight with his arms and looked straight into my eyes with a strange madness and said,

"He will kill you too. I have seen it."

This went on for three months and one day, I saw him running back to me, horror in his eyes.

His eyes were blood red.

I ran back to my room and suddenly realised that I didn't lock the door.

I ran to lock it and saw him standing at the door.

He closed the door slowly and I could hear it creak

He aimed the gun at me, gave a big smile and shot straight at my head.

My body felt numb and I fell with a loud thud.

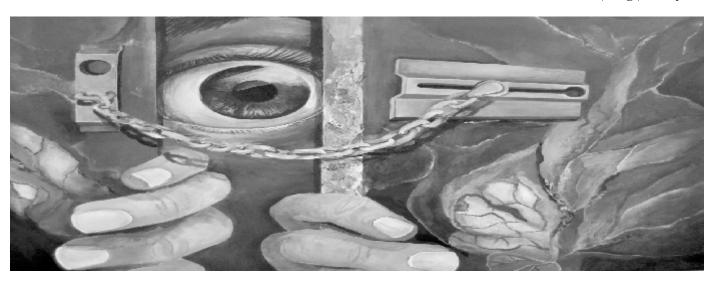
From the corner of my eye, I saw him looking at me dumbfounded.

He walked to the mirror, aimed the gun at his head, smiled again and whispered,

"I won't let you kill me."

And he fired.

- Muskan Kapoor, B.Com(Prog.), 3rd year





The Storm has Passed

The storm has passed and the rain has stopped,
The thunder is tranquil and the angry wind calm.

Dawn has risen and the cold mist gone,
The sun beaming bright and the snow melted,
The sky is cloudless and the bare trees green.
The flowers have bloomed and the dew drops glare.
I looked up as I walked down the mountain.
Oh, how beautiful is the pure blue sky!
My journey up ahead I see

untouched. Fate knows what lies ahead,

A place where the blue sea meets heaven.

But before that lies an uncharted forest -

But life has its own way.
Until then, I'll keep on going
For here, my journey doesn't end.

Good or bad.

Men need not be hasty

For the setting sun is just as beautiful

'Cause now I know when another storm passes by,

To wait patiently for the clear blue sky.

-Thang Lian Mung, BA (Prog.), 2nd year



Practice What You Preach

Speak, you freak!
Speak out loud, you freak!
Speak as loud as thunder,
Don't you think you're a voluble freak?

You political freak, Your blabbering mouth Whispers the sympathy prayers. Speak till your tongue dissolves.

Speak until your throat creeks, Your wrath will make us weaklings shriek, Your promises soar above reach, Go on till madness absorbs you, freak!

You've raised an army, O holy freak!
Yell at the mass which has mounted you,
Yell at the bowels of hell,
You've got power but you're not an immortal freak.

You social freak,
Peep inside your neighbour's window,
Gossip and backstab,
Speak foul and prove yourself a scoundrel.
Lessen your amplitudes, all you freaks!
Lessen your words because we might freak,
Or proceed and speak your lungs out,
But, practice the least of what you preach.

- Aniket Kumar Jha, B.A. (Hons.) English, 1st year





Some Seasons

Seasons were changing, but with no bliss.

First came the end of summer.

I was exhausted like the northern plains - waiting for the torrents.

My heart resembled the Thar, sometimes hot and sometimes cold.

My brain was like succulent stems of the cactus which conserve water,

but I conserved a few dreams.

The clouds of your fondness set in.

I became the low pressure and you, the high.

First, came your decent charm like winds of the first rain.

Then, came the clouds of your affection –

dark and heavy.

Monsoon of your love was all set.

I was unaware and so were you.

One day, those towering clouds started pouring water - slowly, outspreading the petrichor of our intimacy.

Slowly the rain intensified,

And now I'm scared of its withdrawal.

- Rohin Jakhar, B.A.(Prog.), 3rd year



Our Nurturer, Our Shield: The Tree

Can you manage to take out a couple of minutes to say 'Hello!' to a tree in your nearby park?

The philanthropist who provides a midas touch to your polluted atmosphere, would you be able to manage a couple of minutes to water it without an axe?

Oh yes! I will be able to manage a couple of minutes to give it a hug, for it manages not a couple of minutes, but stands its entire life.

For it becomes the Achilles' shield in this acrimonious war of pollution, for it provides us with oxygen.

- Mohit, B. A. (Hons.) English, 3rd year



Waste Management

Recently, there was a landslide in Ghazipur. It was a shocking phenomenon since Delhi is not a mountainous area. What could be the possible reasons for the Ghazipur landfill collapse? One of the major reasons is the improper disposal of waste. The Ghazipur dump was 65 mts. tall, less than the height of the Qutub Minar. Quite recently, before the collapse it was reported in the news that the dumpsite had exceeded its capacity. However, no further action was taken against it.

We, as the residents of Delhi, should take initiatives to improve such conditions. People should be made aware of the varieties of wastes and how they should segregate them. Waste should be categorised into biodegradable, non-biodegradable, wet, dry, etc. The government should also take steps in making special arrangements for ensuring proper transportation of waste. Funds should also be allocated for the same as lack of funding is also one of the major reasons for such tragedies.

Reports reflect that 75% of the waste was dumped unprocessed. The government should pay attention to this system of waste management. Campaigners should also make people aware of the ill-effects of improper disposal of waste.

This Ghazipur incident was one of the examples of the effects of improper disposal of waste out of many. It is better to take precautions in order to reduce such incidents from happening in future. The government should impose penalties in the form of fines for littering etc.

We, the residents of Delhi, have a responsibility to provide the same level of environmental conditions to our future generations, if not better!

> -Mili Rawat, B.A. (Hons.) English, 2nd Year

Female Infanticide and the Concept of 'Foundlings'

In the past decades, India has advanced to a considerable extent in terms of education as well as social, political, economic, and cultural spheres. However, a small section of its population continues to practice conformism and orthodoxy. This reality is manifested in the prejudiced attitude meted out to women in India.

India has seen great number of campaigns and movements that seek to fight for the rights of women and their safety. In spite of such efforts, around five crore cases of female foeticide have been reported since the country attained independence. It's not necessarily true that malpractices like female foeticide and infanticide are prevalent only among the illiterate section of the society. It is a crime that is committed even by 'educated' people. It is horrific to learn that people commit these shameful acts without a feeling remorse or compunction.

Regressive religious beliefs are the greatest hindrances to the campaigns which are being organized to save the girl child. The necessity of a male child for carrying forward the family name and legacy has generated a fear in the society and the outcome of this is the annihilation of the girl child inside the womb. The society believes that it's the male/boy/manthat brings glory to it and his family.

Society has created so many social stigmas attached to the birth of a girl child. However, the fact must not be ignored that women have procured significant official positions in the field of politics, arts, culture etc. The conformist mind-set of the people living in the society is a huge obstruction to the nation's welfare. Until the situation of women is addressed properly, the progress of the country itself remains under threat.

We need women at all levels, to change the dynamics, reshape the conversation. Their voices must be heard. However, the underlying cause of the crisis which is deeply rooted in Indian society, will not be easy to remedy, neither will the process be a quick one. But, instead of waiting for an over-night

SHIVRAJ



miracle to happen all by itself, we should focus on an immediate and effective solution. There's one good idea out there for addressing this urgent problem: 'baby hatches'. Although it's not a permanent solution, it could be a temporary stopgap.

A 'baby hatch' is a safe place; maybe a crib or a room, often attached to a health centre, where parents can leave their infants without the fear of prosecution. These infants are then looked after by the government and if possible, placed in an adoptive family. There is a special term for such children. They are not 'orphans' because they have living parents; they are termed as 'foundlings', as they have been found. Since the eighteenth century, versions of the 'babyhatch' concept have existed in much of Central Europe, where they were sometimes called 'foundling wheels'.

Many American states now have 'safe haven' laws, which designate safe drop-off locations where parents can leave unwanted babies. These are usually hospitals, police stations, or fire stations. In France, a woman is allowed to deliver her baby in a hospital and it's her choice whethershe wants to keep it or not. She is not questioned. Many countries have set up their own systems of baby hatches: Italy, Hungary, China, Poland, Russia, Japan, the Philippines and South Africa, to name a few.

Women, who leave their babies in a hatch, have a certain amount of time, usually three months in which they can reclaim them without the fear of



prosecution. When a child is reclaimed, the mother is offered support from a hospital. German hatches, which are often held up as a model for western countries, also offer inkpads and papers. The mother takes an imprint of the child's foot to use as an initial conformation of its parenthood, which is followed by medical tests, after which she can reclaim the child.

Using the model and experience of the work already done in Tamil Nadu, India could set up a nation wise system of baby hatches. Of course, key pre-requisites for a baby hatch system to work successfully are that women must know that such places exist, where these places are and that no questions will be asked.

Critics of 'baby hatches' argue that it could create problems. First and foremost, they say it will increase abandonment. This may well happen. However, that's no reason to not have such safe havens. If parents who really want to abandon their children are keeping them simply because there is no other alternative, one can imagine the kind of care these children receive. Forcing parents to keep unwanted children can lead to abuse and infanticide.

Some also worry that it will result in more children for the public to look after. To manage this situation, India can increase child-care facilities and ease adoption laws and procedures to make the process faster and more efficient, enabling the adoption of more children. Some government departments are already planning to do the latter. This problem may actually turn out to be a boon for the lengthy queues of aspiring parents wishing to adopt. Strict critics argue that the system of baby hatches contradicts the U.N. Convention on The Rights of the Child: that the child has the right to know its identity. Abandoned children would not likely know their parents. However, children safely abandoned in baby hatches would at least survive. Supporters say that the hatches save lives of babies which are at risk of infanticide or dangerous abandonment. A nationwide system of baby hatches could be a real life saver.

> -Veer Vikram Singh, B.A.(Prog.), 2nd year



Faith

I seek refuge in fantasy, prose, verse, and poetry.

Metaphors and paradoxes

when weaved beautifully into words,

make me think of the power that words hold.

I seek refuge in words.

As a child I used to hear my mother chanting rayers and I remember fumbling with words trying to speak the language of religion.

She found refuge in the power of her prayers and I found refuge in her belief.

I found refuge in faith.

As I grew I learnt how it has to be kept delicately in our fragile heart cases.

With people bowing their heads before faith, circling temples burdened with grief,
I learnt how faith was abating their misery.
I seek refuge in their resilience and the power their conviction carries.

I seek refuge in their silent glances and how it echoes the sound of their infinite desires.

I seek refuge in their stability.

I seek refuge in the grief behind prayers.

I seek refuge in homes once shattered By this inhumane civilization which gambled with their beliefs.

I seek refuge in homes built with recitation of prayers.

I seek refuge in the silence of meditation. I seek refuge in this universe and

the pain

the grief

the anguish

the hope

the faith

the love it pertains.

I seek refuge in every soul and the divinity it carries.

-Srishti Mishra,

B.A. (Hons.) English, 3rd year

Social Service and the Youth

Have you ever found yourself alone? A majority of people would answer in the affirmative. Despite of thousands of people around, out of a few which we call friends, the millennial stands alone. It wouldn't be wrong to say that it is this state of loneliness which produces negative thoughts in the youth. Do you dream of a place free from loneliness? Such a place can be constructed through community service. When you are indulged in any service to the society, you actually serve yourself. If I am to tell about my very own personal experience, the service has not only stimulated me towards positivity but it has also transformed me into a better human being. It has laid a great impact over my mind set. But what could be the reason behind this? What is that one great asset which brings these transformations in a human being? Once you associate yourself with social service, you will discover that a sense of your selfesteem gets attached to the smiles of people whom you help. It might be possible that you have not done anything bigger to grab the attention of the whole nation, but this selfless act gives you a boost. In today's competitive world, we need to scrounge for a stable job and fixed income and we automatically come to assume that social services cannot not fulfill our basic needs. But this is the point where we often make a mistake. Social service is now a tested and proven career option.

> - Sankalp Garg, B.Sc.(APS), 3rd year



SHIVRAJ



Atheist in the House of Lord

A monstrous night engulfed the sky,
Wind in its wildest kind set high,
Thunder was very fond of plundering,
The four horsemen were riding in plain sight.

From inside the ghoulish aura he showed,
Broken was his fortitude, with slither he strode,
Bothered by none he haunted the road,
Talking to himself he cleared his throat.

Tattered and torn were all his belongings, Firm in his thought of never seeing the morning, His sunshine was lost and could never be found, Blinded in agony, he looked like a hound.

To find his long lost love was his longing, His utter faith didn't even gift him a warning, From that cruel night the name 'atheist' he bore, Loss of beloved was the one thing that tore.

Intense enough his rage prevailed,
He loved against the will of God and failed,
All this at cost of his conscience derailed,
Pitied on him, this night wept and wailed.

Trembling in rumble he entered a chapel,
The path to which was made coarse with gravel,
Paranoia made him the king of this castle.
(A cross on his castle mocked him with a crackle).

Words which he spoke were at brink of blasphemy, He cursed the basilica and every spent penny-Spent in services and masses were his days many, Now a nihilist for life if he had days left any.

Up ahead stood the Lord and an altar,
The atheist, like a child, placed steps with falter,
A chandelier hung up like a swinging guide,
In the house of Lord the atheist arrived,

The warmth inside reduced anxiety to ashes, Soothing sensation at his iced eye lashes, Memories fortified in heart burst in flashes, Walls of the chapel would host divine clashes.

With tears in his eyes he settled on knees,
Bones relaxed in an otherworldly ease,
But tides grew higher of his raging seas,
Revenge was his captor, he asked no release.

He yelled, 'Don't grant me mercy,
I know you hate me,
Crucified for no sins, for you took her from me,'

'You had me stripped of all but pride,
Defy me and aid yourself through this night,
Out in the storm the four horsemen ride,
Unveil your crown and exterminate this fight'.

The atheist felt a gripping repulsion, His stomach churned like witch's concoction, Eyes stuck on Christ's halo with adhesion, It glittered brightly stealing his attention.

Bemused, the nihilist cleared his eyes, His consciousness blinked like fireflies, He doubted the sight and murmured 'my vision lies.'

A divine voice spoke 'son, open your eyes,'

The Lord stood as his shepherd and his only sun, The retreat of apocalyptic horsemen had begun.

The atheist knew he was reborn and adorned, Not Him but his faith was what he scorned, Tears from his eyes went slipping down, Blood red was now Christ's thorny crown.

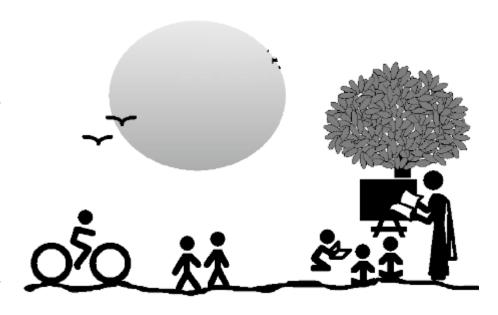
> - Aniket Kumar Jha, B.A. (Hons.) English, 1st year



Education in India

Education is the process of learning and acquiring knowledge, values, and skills. Education brings about a permanent change in a person's thinking and capacity to do things. It is a learning experience that changes the way we perceive the world around us. India has the world's largest youth population, comprising 23% of the total population under the age of 14, which gives us an edge over other countries to modernize and expand which is in the interest of the nation's development.

India has initiated a broad range of programs such as Sarva Shiksha Abhiyaan, Midday Meal Scheme, Right to Education Act, etc. for achieving the goal of 'universal elementary education'. Enrollment in primary schools has been a success story largely due to the initiatives taken by the government. However, it is a pity that our education system has been entangled in a vicious web that curtails the very essence of education in India. It includes the



poor quality of education in government schools, lack of proper infrastructure, high dropout rates, etc. On the other hand, commercialization of education has led to many non accredited institutes mushrooming and duping rural and semi-urban students. Though many barriers and hurdles are standing right against us, we as a nation are capable of dealing with these shortcomings.

Our government has launched the Samagra Shiksha Abhiyan which is based on learning outcomes methodology. Many other initiatives have been taken to build proper hygienic toilets, safe drinking water accessibility in schools. The government is focusing on better infrastructure, adequate funding in research, vocational training, and digitalized education. Though much has been done in the policy formulation, implementation is not always to the mark. The focus on education should be raised from the current 2.4% of the GDP. An all Indian Education Services (IES) has been already established. Midday Meal programme should be extended to secondary education as well. As India enters its 'demographic window', there will be an urgent need for educated and skilled young minds who can capitalize on it.

-Nandini Joon,

B.A. (Hons.) English, 2nd year



Fragile

The dried leaves of autumn lay crushed and dead on the wooden floor smeared with dust waiting to be crushed anxiously. I take a leaf in my hand, crush it, and let it pass through the gaps of my fingers, effortlessly. (Just like the way people pass through our lives)

There was this oak tree behind the fences that held these leaves for long.

A season long, to be precise.

Like we hold on to each other.

A season,

A friendship,

A heartbreak long.

I think about the storms you and I have faced and how easily we let our fingers slip through each other's palms like they never held them.

Never touched them.

Never Felt them.

And we forget.

We get lost, somewhere in the dark.

Human bonds. Are they so fragile?

-Srishti Mishra, B.A. (Hons.) English, 3rd year



Imbalance in Beauty

Yes, it is a necessity.

Even the most famous painting of Mona Lisa couldn't have had those magical eyes without her missing eyebrows.

Imagine Munro without a black mole, moon without depressions. Rose could never be as aesthetically alluring as it is without spines.

That's the thing. Perfection is in being mono-chromatic. But being varicoloured like a rainbow is a dynamic flaw.

Scars are the soul of beauty.

They go hand in hand because that is what lets it own its name.

Hats off to the nature for the magic of its creativity, which keeps the existence real.

- Upasana Goel,

B.Sc. (Hons.) Life Sciences, 3rd year



Cleanliness is Next to Godliness

'Cleanliness is next to Godliness', says the famous proverb. This phrase was first recorded in a sermon by John Wesley in 1778. But do we really follow it? Most us believe in keeping our homes beautifully decorated from outside while on the other hand we continue throwing our waste and garbage outside the house. As a result, huge garbage dumps begin to accumulate. These dumps attract mosquitoes, flies, pigs, and stray cows. This breeding ground for mosquitoes further adds to the spread of deadly diseases like malaria, meningitis, dengue, etc. There are no cleaning operations to remove all the garbage. Authorities seem to be indifferent and least concerned about the plight of citizens.

Even city hospitals follow the same practice of disposing garbage. All the wastes from the hospitals are thrown outside the gates. As a result, the lives of many patients are lost due to awful hygienic conditions. For thousands of poor people who live in the JJ cluster, the sanitary conditions are appalling and incidents of death to diseases are high. Rains make it worse as sewers get clogged and they start overflowing. The civic sense in ordinary citizen is extremely inadequate. There is no sense of responsibility towards sanitation or awareness of the ill-effects that improper sanitation can produce.

There is a need to create awareness about the illeffects of bad hygiene. We should create awareness by educating people living in the slums near our neighbours, schools, colleges and helping them to take preventing measures. We can also organise street plays or skits to demonstrate the message to them. The government should help by making an effort to fulfil the basic needs of clothing and shelter for all citizens. We need to act as a team in order to materialise this dream.

> -Adiba Jamil, B.A. (Prog.), 2nd year

Black and Beautiful

Black is not fragile, it is bold, Black is not delegate, it is sturdy, Black beauty is to be glorified, not to be sold. The darker the skin, The deeper the struggle. Seeing your reaction, I got this sensation, By discriminating my color, you are disrespecting God's divine creation. One day my skin color will not be judged, Oh! its only my imagination. The darker the skin. The deeper the struggle. Why we all want to be fair or white? Let's make our souls bright, A day will definitely come, When racism will be out of sight. The darker the skin, The deeper the struggle. It is the 21st century, yet we lag far behind, Time has come to enlighten our mind, Let's create a society of a kind, Where color discrimination remains far behind.

-Anamika,

B.A (Hons.) Political Science, 3rd year





Cingulomania

(A Strong Desire to Hold a Person in Your Arms)

I'd been thinking a lot lately about the life which was growing inside me.

About the time when I first found out, that I had been given a gift, to share my womb

With the child I would one day hold in my arms. In the coming weeks I found out how lucky I was,

That I'd been gifted with two children.

I've been pondering about the time
When I first heard their tiny beating hearts.
My own heart was pacing at a fast rate.
It was then that I felt the need to hold them in my arms.

Since then,
Every following day,
My arms were feeling empty.
Today, finally the time arrived.
A chance to wrap my arms around my daughters,
And protect them from all the harm in the world.
But who knew? God had a different plan.
Who could have guessed?

Who knew I would be given only a few minutes

To convey the love of a lifetime

In only a few words.

- Muskan Kapoor, B.Com (Prog.), 3rd year

Inseparable Love – A Short Story

Love is when two people touch each other's soul. Love is honesty and trust .Love is mutual respect.

He lived a life of loneliness.

He lived a life in vain

With strong, ongoing pain.

 $Your \, heart \, is \, not \, living \, \hbox{\it ,} \, until \, it \, has \, experienced \, pain \,$

The pain of love can, can change your fate.

(Into the story...)

It was a cold day in Italy. A tall man with a long cadaverous face, wearing a coat with a huge faux fur collar and with a scarf round his neck to keep himself warm, was walking strenuously on a solitary road.

The snowy peaks of Monte Bondone mountain were looking as beautiful as silver sequences on a black dress.

He snuffled and wiped his nose on the back of his hand.

Crossing several streets, he made his way to a graveyard. The graveyard had an eerie atmosphere. Sounds of animals echoed in the air. Dogs were barking. It was about to rain.

He stroll over to a grave of a lady. Her name was Arriana, witnessed by the pedestal where it appeared in the very bold letters.

Night was getting dark progressively.

The man snuffled sporadically and then a tiny drop of tear rolled down from his eyes. He began to cry with words on his lips:

"Thank you for the love not necessary to be earned,

Not ever fading as powerful time moves along,

You have to know that I still care as golden time hears,

SHIVRAJ



Thank you truly for all those years..."

He wandered back to the golden time which he had spent with his beloved. He remembered the way she snuggled him in the cold times. He remembered how he threw his arms around her and they embraced passionately. The cataclysmic event which had impetuously changed their life completely came to his mind. He and his beloved were separated forever by Arriana's father who killed his dear daughter for being in a relationship with a boy who belonges to a low caste family. Her father's reputation in the society was far more important than his daughter.

This drew heavy drops of tears from his little eyes. He wiped his tears and slowly got up and turned around. He could possibly hear the Cajun music which was slowly getting loud enough to unnerve him. He snuffled.



He heard loud footsteps coming closer to him. He did not know who it was. His heart told him to run away. He stood there watching her as she advanced towards him. She was covered in a white robe, her face was bright.

"Is this you Arriana, my Arriana?" Asked the man.

"Yes, it's me, your Arriana" replied the lady in a very deep voice filled with sorrow.

The man felt unnerved and thought that perhaps god is making a mockery of him.

A little drop of water fell onto his head. He rubbed his eyes, looked up into the sky and was about to leave. Then a soft voice came.

"Happiness and sadness, everyone knows

But there are many other emotions which only a few hold.

Some emotions are vain, easy to resist, but some are, I understand, are hard to resist.

For love dissolves all hate and fear,

And makes your vision bright and clear.

With a pang of regret

I requested God to send me to you,

Just to make you sure

Even though I am not here, I am still yours."

Though the situation was undoubtedly one of the most surreal one, his solemn little face broke into a smile. It was beyond his wildest dreams that after her death he could still speak to her. He promised to live a contented life.

She waved her hand as seven minutes were over and she suddenly disappeared.

-Arushi Grover, B.A. (Hons.) English, 3rd year



Bliss

I came across many souls
Brooding in a similar fashion as I –
Doleful, grief stricken, and jittery.
The reluctant me asked some,
What is the source of your hope?
Some said it is the moon,
Some said they are verses and sunsets.
Nothing satisfied my throbbing heart,
Unless, one said it was incomplete hugs,
Dry tears, and broken promises.
Who can say broken and fragmented is not bliss?

- Bhavika Kapoor, B.A. (Hons.) English, 3rd year



Her

She emanates light
In the silent midnight.
Her hair, like a stream of spark,
Fighting every second against the dark.

Her beautiful crystal eyes,

Hiding her pretty lies,

Beauty so bright,

Like the twinkle of twilight.

A majestic woman she is,

Drenched with colours, gratifying the world,

Shining with bliss.

-Simran Chaudhary, B.A. (Hons.) English, 3rd year

Existence

Out of the glimmer of the black sun
She made her mornings.
Even on a broken mirror
She saw her worth.

To a place where she can't reach,
Her smiles made the way.
The eternal demons inside break her,
But she doesn't disintegrate.

Her inner flames force her to scream, Yet, she manages to listen to her silence. Pain pierced through ribs and heart, She couldn't utter a single word.

Emotions exist in her eyes
And she possesses courage.
Though she isn't heroic,
But to me, she is a masterpiece.

-Mahesh, B.Sc. (Hons.) Chemistry, 3rd year





Eulogy to Myself

Around me, every one presumes death to be a dark thing.

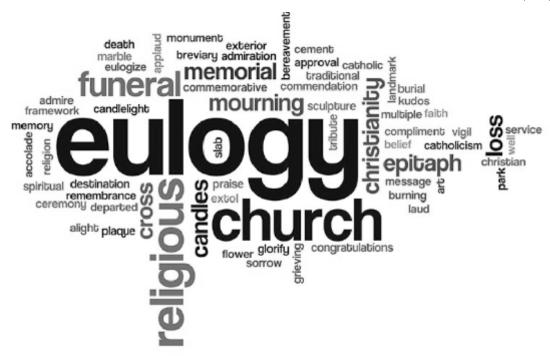
On hearing of death, they instinctively picture a dark room filled with their fears. Or a room full of their loved ones.

My loved ones will be crying over my pale corpse. Strangers will be invited. They will pretend to be affected by my death, but the truth is that they will feel nothing.

The funeral will be peaceful, I know, but everyone present there would know that I used to like loud rock and indie music. So, instead of writing eulogies and saying things you didn't have the courage to say on my face, why not let me arrange a funeral for myself? You all can say your parts and I'll say mine, and then we'll ride off to Uncle Berry's Diner only with the people I care about and have bacon and scrambled eggs with a lemon pie and fight over its last piece, and instead of crying tears, we'll celebrate because I don't want to just die in my death, I want to live for one last time until the cycle starts again.

- Muskan Kapoor,

B.Com(Prog.), 3rd year





Suicide: An Unnatural Death

Suicide is the act of taking one's own life. There is always a reason for a person to end his or her life. About 8,00,000 people die of suicide worldwide every year, of these 1,35,000 are residents of India. A study reveals that 90% of suicides are committed because of mental illness. In India, suicide is illegal and the survivor faces jail term of up to one year and fine under Section 309 of the Indian Penal Code.

Failure in examination, family pressure, betrayal by loved ones, drugs, and so on, are the reasons why students are committing suicides these days. Today's fast moving world is making relationships weak. Married couples are getting divorced because of love-affairs, dowry, and infertility. National Crime Record Bureau of India reported that 5,650 farmers committed suicide because of high debt burden, monsoon failure, etc. The methods used for suicide are poising (33%), hanging (26%), or self-immolation (4%). Researchers say that 80% of the people who attempt suicide are literate and male suicidal rate is twice that of female.

Suicide can be prevented by identifying people who are suffering from depression and giving them right support and help. Counselling is also a good method to help them realize that every problem has a solution. No problem is bigger than one's life.

- Tanishka Malik,

B.A. (Prog.), 2nd year

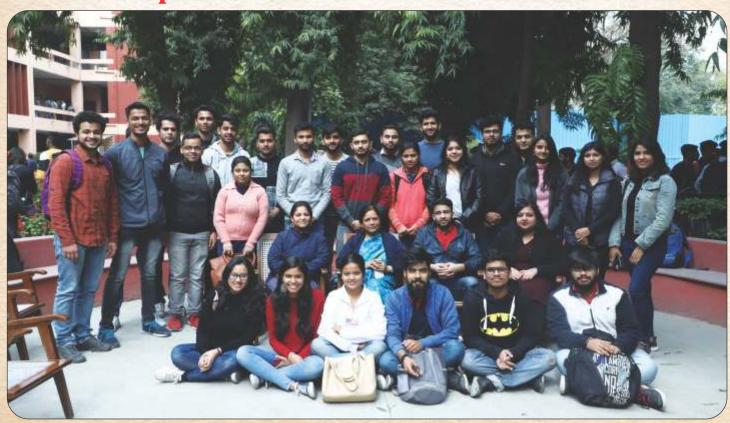


Farewell: Outgoing Batch 2018-19

B.A. Programme



Department of Business Economics



Department of Botany



Department of Chemistry



Department of Commerce



Department of Computer Science



Department of Economics



Department of English



Department of Environmental Studies



Department of Geography



Department of Hindi



Department of History



Department of Mathematics



Department of Physics



Department of Physical Education



Department of Political Science



Department of Sanskrit



Department of Zoology



Staff Council Committees

Staff Association



Cultural Committee



Student Advisory Committee



Internal Assessment Committee



Entrepreneurship Development Cell



Placement Cell



Garden Committee



Discipline Committee



Women Development Cell



Magazine Committee



NCC



NSS



Canteen Committee



Library Committee



Office Staff



Library Staff



TED^X



Eco Club



A Message from Shivaji College Students' Union



Today, the role of a college is not only to pursue academic excellence, but also to motivate and empower its students who will become critical thinkers as well as productive members of an ever-changing global society.

As a part of the Students' Union of Shivaji College, we want to convey this to all the fellow students that our college is one of the best colleges in Delhi. We have a great library with more than ten thousand books and a sprawling sports complex which is sufficiently compatible for ten different games. The various societies of the college are improving every day.

President's Message (Ashish Panwar) -

As the President of the union, I feel lucky to be a part of this college which has great faculty members and very promising placement opportunities for students. I hope for a bright future for every student.

Secretary's Message (Vaibhav Sinha) -

Academic excellence is our principal objective. As a part of the union, we seek to improve the community programs for better connection between students across different departments. We have to provide more facilities like books for competitive exams and bringing more companies for placements.

GRAFFITI

Hawa Mahal: "The Hawa Mahal", a place where the students of Shivaji College hangout with their friends usually, spend time by talking and having, discussion about studies & do other fun activities. This is one of the famous places in the college.

Tushar Jaiswal Ist Year, B.Com (P)



Sports Complex: Sport & physical activity have so many benefits for physical & mental health. Generally students are engaged in their studies, thus they have no time to get engaged in sports activity. In Shivaji college, students spend their time by playing games & by doing other activities. They also hangout with their friends in the sports complex.

Gyan Jaiswal Ist Year, B.Com (P)



Bru point: Other than the cafeteria, there. is Bru point which provides us with delicious coffee and tea. There in sitting facility available and snacks are also available.

Kuldeep Gulia B.Sc (APS) Ist Year



Mandeep Singh B.Com (Hons.)



<mark>हमारे यहाँ का पुस्तकालय बहुत</mark>

अच्छा है, यहा पर बच्चों के लिए सभी

पुस्तक उपलब्ध है और गर्मी से बचने

कें लिए ए.सी. की सुविधा भी की गयी

है। रोज न्यूज पेपर भी आया करता है

जिससे बच्चें रोज के समाचार से जुड़े





I love 'C point' of our college. Its environment is very pleasant and I relax here.

Ashu Sharma B.A. (H) Hindi, III Sem.

Library:

All colleges have libraries. In Shivaji College the library is the one place where students spend their time entirely with books. It has a wide variety of books unlike many other colleges. Students can borrow books for upto 14 days.

Vikas BSc. (APS), Ist Year रहते है। **विशाल कुमार** बी.ए. (विशेष) हिन्दी, तृतीय वर्ष Backstage: It is situated near room number 13. Functions or events are organised there from time to time. It is utilised for rehearsal purpose by the dance society of Shivaji college. Every years this stage is transformed into a marvelous stage where the Commerce department organises the fresher's party.

Muskan Banwal Maths (Hons.) IInd Yr. **C-points**: Favourite place for students to hangout with friends and gossip. "Bhai C-point pe aaja" is the most common phrase used by the students to mark location in college and to hold meetings of societies.

Atul B.Com (Hons) IIIrd Yr.

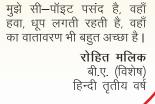


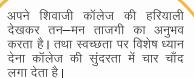


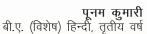
Bamboo Rooms:

Classrooms to study while staying in touch with nature. It provides a good outside view and gives a very fresh feeling.

Pinky Jakhar Hindi (Hons.) IIIrd Yr.

















शिवाजी कॉलेज की खासियत इसकी भवन—निर्माण शैली कक्षाओं की खिड़की से पेड़ो से शुद्ध वायु छन कर आती है। अगर किसी दिन हवा नहीं चल रही हो कही पर लेकिन 'हवा महल' नाम से प्रसिद्ध स्थान वहाँ हवा जरूर मिलेगी। कॉलेज गेट से अंदर प्रवेश करते ही फूलों की खुशबू तरोताजा कर देती है। सी.पॉईट सर्दियों में धूप का सेवन करने के लिए बनाया गया। यहाँ सौर ऊर्जा का इस्तेमाल कर नवीनकरण संसाधनों को बढ़ावा दिया जा रहा है। शिवाजी के व्यक्तित्व की तरह यह अपने आप में निराला है जिसको शब्दों में बया नहीं किया जा सकता...

पृथ्वी कुमार बी.ए. (विशेष) हिन्दी दोस्तों की टोली जब कैंटीन में गाना गाती है, वह भी टेबल बजाकर तो लगता है कि हमसे बड़ा रॉकस्टार कोई पैदा भी नहीं हुआ है। कॉलेज से निकलने के बाद कैंटीन व उसका खाना बहुत याद आने वाला हैं।

> पपिल कु. त्रिपाठी बी.ए. (विशेष), हिंदी तृतीय वर्ष



















शिवाजी कॉलेज

राजा गार्डन, नई दिल्ली—110027 shivajicollege.ac@gmail.com www.shivajicollege.ac.in